तामिल वेद

[तामिल ऋषि तिरुवल्लुवर कृत त्रिक्कुरल का अनुवाद]

अनुवादक

श्री क्षेमानंद 'राहत'

भूमिका लेखक

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

१९५०

सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन

'सस्ता साहित्य मडल'
नई दिल्ली के लिए
'हिन्दी साहित्य मंदिर'
अजमेर द्वारा प्रकाशित ।

तीसरी बार १९५०
मूल्य डेढ रुपया

मुद्रक,
जे० एन० भिडे,
राजस्थान टाइम्स् प्रेस अजमेर ।

प्रस्तावना

तामिल जाति की अन्तरात्मा और उसके सस्कार को ठीक तरह से समझने के लिए 'त्रिक्कुरल' का पढना आवश्यक है। इतना ही नही, यदि कोई चाहे कि भारत के समस्त साहित्य का मुझे पूर्ण रूप से ज्ञान हो जाय तो त्रिक्कुरल को बिना पढे हुए उसका अभीष्ट सिद्ध नही हो सकता। 'त्रिक्कुरल'का हिन्दी मे भाषान्तर करके श्री क्षेमानन्दजी 'राहत' ने उत्तर भारतके लोगो की बहुत बडी सेवा की है। त्रिक्कुरल जाति के अछूत थे। किन्तु पुस्तक भर मे कहीं भी इस बात का जरा सा भी आभास नहीं मिलता कि ग्रन्थकार के मन मे इस बात का कोई खयाल था। और तामिल कवियो ने भी अनेक स्थानो मे जहाँ-जहाँ तिरुवल्लुवरकी कविताएं उद्धृत की है, या उनकी चर्चा की है, वहाँ भी इस बात का आभास नही मिलता कि वे अछूत थे। यह भारतीय सस्कृति का अनूठापन है कि'त्रिक्कुरल' के रचयिता की जाति की हीनता की ओर बिलकुल ध्यान नही दिया गया बल्कि उनके सम सामयिक और बाद के कवियो और दार्शनिको ने भी उनके प्रति बडी श्रद्धा और भक्ति प्रकट की है।

'त्रिक्कुरल' विवेक, शुभ सस्कार और मानव प्रकृति के व्यावहारिक ज्ञान की खान है। इस अद्भुत ग्रन्थ की सबसे बडी विशेषता और चमत्कार यह है कि इसमे मानव चरित्र और उसकी दुर्बलताओ की तह तक विचार करके उच्च

आध्यात्मिकता का प्रतिप्रादन किया गया है। विचार के सचेत और सयत औदार्य्य के लिए 'त्रिक्कुरल' का भाव एक ऐसा उदाहरण है कि जो बहुत काल तक अनुपम बना रहेगा। कला की दृष्टि से भी ससार के साहित्य मे इसका स्थान ऊँचा है क्योंकि, यह ध्वनि-काव्य है। उपमाये और दृष्टान्त बहुत ही समुचित रखे गये है और इनकी शैली व्यङ्गपूर्ण है।

उत्तर भारतवासी देखेगे कि इस पुस्तक मे उत्तरी सभ्यता और सस्कृति का तामिल जाति से कितना घनिष्ट सम्बन्ध और तादात्म्य है। साथ ही 'त्रिक्कुरल' दक्षिण की निजी विशेषता और सौन्दर्य को प्रकट करता है। मै आशा करता हूँ--राहतजी के इस हिन्दी भाषान्तर के अध्ययन से कम-से-कम कुछ उत्साही उत्तर भारतीयों के हृदयों मे, भारत की संस्कृति सम्बन्धी एकता के रचनात्मक विकास का महत्त्व जम जायगा, और इसी दृष्टि से वे तामिल भाषा तथा उसके साहित्य का अध्ययन करने लग जायेंगे जिससे वे त्रिक्कुरल और अन्य महान् तामिल ग्रन्थो को मूल भाषा मे पढ सके और उनके काव्य सौष्ठवो का रसास्वादन कर सकें कि जो अनुवाद में कभी आ ही नही सकता।

गान्धी-आश्रम,
तिरुचेनगोडू, मद्रास

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

विषय-सूची

तामिल वेद

प्र स्ता व ना

: १ :

ईश्वर-स्तुति

१. 'अ' शब्द-लोक का मूल स्थान है; ठीक इसी तरह आदि-ब्रह्म सब लोकों का मूल-स्रोत है।

२. यदि तुम सर्वज्ञ परमेश्वर के श्री चरणो की पूजा नही करते हो, तो, तुम्हारी यह सारी विद्वत्ता किस काम की?

३. जो मनुष्य हृदय-कमल के अधिवासी श्रीभगवान के पवित्र चरणों की शरण लेता है, वह संसार मे बहुत समय तक जीवित रहेगा।*

४. धन्य है वह मनुष्य, जो आदि-पुरुष के पादारविन्द में रत रहता है कि जो न किसी से प्रेम करता है और न घृणा। उसे कभी कोई दुःख नहीं होता।

५. देखो, जो मनुष्य प्रभु के गुणो का उत्साह-पूर्वक गान करते है, उन्हे अपने भले-बुरे कर्मों का दुःखप्रद फल नहीं भोगना पडता।

---

* ईश्वर का वर्णन करते समय त्रिवल्लुवर ने प्रायः ऐसे शब्दों का व्यवहार किया है, जिन्हें साम्प्रदायिक नही कहा जा सकता। पर इस पद में वैष्णव भावना का सा आभास है।

६. जो लोग उस परम जितेन्द्रिय पुरुष के दिखाये धर्म-मार्ग का अनुसरण करते है, वे दीर्घजीवी होंगे ।

७. केवल वही लोग दुःखों से बच सकते हैं, जो उस अद्वितीय पुरुष की शरण में आते हैं।

८. धन-वैभव और इन्द्रिय-सुख के तूफ़ानी समुद्र को वही पार कर सकते हैं कि जो उस धर्म-सिन्धु मुनीश्वर के चरणों मे लीन रहते हैं।

९. जो मनुष्य अष्ट गुणों से अभिभूत परब्रह्म के चरण-कमलो मे सिर नही झुकाता, वह उस इन्द्रिय के समान है, जिसमें अपने गुण को ग्रहण करने की शक्ति नही है ।*

१०. जन्म-मरण के समुद्र को वही पार कर सकते है कि जो प्रभु के श्रीचरणो की शरण में आ जाते है, दूसरे लोग उसे तर ही नही सकते ।

: २ :

मेघ-स्तुति

१. समय पर न चूकने वाली वर्षा के द्वारा ही धरती अपने को धारण किये हुए है और इसीलिए, मेह को लोग अमृत कहते है ।

२. जितने भी स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ है, वे सब वर्षा ही

* जैसे अन्धी आख, बहरा कान

के द्वारा मनुष्य को प्राप्त होते हैं; और वह स्वयं भी भोजन का एक अंश है।

३. अगर पानी न बरसे तो सारी पृथ्वी पर अकाल का प्रकोप छा जाये, यद्यपि वह चारों तरफ़ समुद्र से घिरी हुई है।

४. यदि स्वर्ग के सोते सूख जायं तो किसान लोग हल जोतना ही छोड़ देंगे।

५ वर्षा ही नष्ट करती है, और फिर यह वर्षा ही है जो नष्ट हुए लोगों को फिर से सरसब्ज़ करती है।

६ अगर आस्मान से पानी की बौछारें आना बन्द हो जायं तो घास का उगना तक बन्द हो जायगा।

७. खुद शक्तिशाली समुद्र में ही कुत्सित बीभत्सता का दारुण प्रकोप जग उठे, यदि स्वर्गलोक उसके जल को पान करने और फिर उसे वापस देने से इन्कार करदे।*

८. यदि स्वर्ग का जल सूख जाय, तो न तो देवताओ को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ-याग होगे और न ससार मे भोज ही दिये जायगे।†

९. यदि स्वर्ग से जल की धाराये आना बन्द हो जायं तो फिर इस पृथ्वी-भर मे न कही दान रहे, न कही तप।‡

---

* भावार्थ यह है कि समुद्र जो वर्षा का कारण है उसे भी वर्षा की आवश्यकता है। यदि वर्षा न हो तो समुद्र में गन्दगी पैदा हो जाये, जलचरो को कष्ट हो और मोती पैदा होने बन्द हो जाय।

†समस्त नित्य और नैमित्तिक कार्य बन्द हो जायगे।

‡तप संन्यासियो के लिए है और दान गृहस्थियो के लिए।

१०. पानी के बिना संसार में कोई काम नहीं चल सकता, इसलिए सदाचार भी अन्ततः वर्षा ही पर आश्रित है।

: ३ :

संसार-त्यागी पुरुषों की महिमा

१. देखो, जिन लोगों ने सब-कुछ (इन्द्रिय-सुखों को) त्याग दिया है, और जो तापसिक जीवन व्यतीत करते है, धर्मशास्त्र उनकी महिमा को और सब बातों से अधिक उत्कृष्ट बताते है।

२. तुम तपस्वी लोगों की महिमा को नही नाप सकते। यह काम उतना ही मुश्किल है, जितना सब मुर्दों की गणना करना।

३. देखो, जिन लोगो ने परलोक के साथ इहलोक का मुकाबला करने के बाद इसे त्याग दिया है, उनकी ही महिमा से यह पृथ्वी जगमगा रही है।

४. देखो, जो पुरुष अपनी सुदृढ़ इच्छा-शक्ति के द्वारा अपनी पाँचों इन्द्रियो को इस तरह वश मे रखता है, जिस तरह हाथी अंकुश द्वारा वशीभूत किया जाता है, वास्तव में वही स्वर्ग के खेतो मे बोने योग्य बीज है।

५. जितेन्द्रिय पुरुष की शक्ति का साक्षी स्वयं देव-राज इन्द्र है। *

---

* गौतम की स्त्री अहल्या और इन्द्र की कथा।

६. महान् पुरुष वही हैं, जो असम्भव* कार्यों का सम्पादन करते हैं, और दुर्बल मनुष्य वे हैं, जिनसे वह काम हो नहीं सकता ।

७. देखो, जो मनुष्य शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध इन पाँच इन्द्रिय-विषयों का यथोचित मूल्य समझता है, वह सारे ससार पर शासन करेगा ।†

८. संसार–भर के धर्म-ग्रन्थ सत्य-वक्ता महात्माओं की महिमा की घोषणा करते है ।

९. त्याग की चट्टान पर खड़े हुए महात्माओं के क्रोध को एक क्षण-भर भी सह लेना असम्भव है ।

१०. साधु-प्रकृति पुरुषों ही को ब्राह्मण कहना चाहिए । वही लोग सब प्राणियों पर दया रखते हैं । ‡

: ४ :

धर्म की महिमा का वर्णन

१. धर्म से मनुष्य को मोक्ष मिलता है, और उससे धर्म

---

* इन्द्रिय-दमन ।

†अर्थात् जो जानते है कि ये सब विषय क्षणिक सुख देने वाले है—मनुष्य को धर्म-मार्ग से बहकाते है और इसलिए उनके पजे में नहीं फँसते है ।

‡ मूल ग्रथ मे 'ब्राह्मण-वार्त्ता' इस शब्द का प्रयोग किया गया, उसका अर्थ ही यह है,—सब पर दया करने वाला ।

की प्राप्ति भी होती है; फिर भला धर्म से बढ़ कर लाभदायक वस्तु और क्या है?

२. धर्म से बढ़ कर दूसरी और कोई नेकी नही और उसे भुला देने से बढ़ कर दूसरी कोई बुराई भी नही है।

३. नेक काम करने में तुम लगातार लगे रहो, अपनी पूरी शक्ति और सब प्रकार के पूरे उत्साह के साथ उन्हें करते रहो।

४. अपना मन पवित्र रक्खो; धर्म का समस्त सार बस एक इसी उपदेश में समाया हुआ है। बाकी और सब बातें कुछ नही, केवल शब्दाडम्बर-मात्र है।

५. ईर्ष्या, लालच, क्रोध और अप्रिय वचन, इन सब से दूर रहो। धर्म-प्राप्ति का यही मार्ग है।

६. यह मत सोचो कि मैं धीरे-धीरे धर्म-मार्ग का अवलम्बन करूँगा। बल्कि अभी बिना देर लगाये ही नेक काम करना शुरू कर दो, क्योकि धर्म ही वह वस्तु है जो मौत के दिन तुम्हारा साथ देने वाला अमर मित्र होगा।

७. मुझसे यह मत पूछो कि धर्म से क्या लाभ है? बस एक बार पालकी उठाने वाले कहारो की ओर देख लो और फिर उस आदमी को देखो, जो उसमे सवार है।

८. अगर तुम एक भी दिन व्यर्थ नष्ट किये बिना समस्त जीवन नेक काम करते हो तो तुम आगामी जन्मों का मार्ग बन्द किये देते हो।

९. केवल धर्म-जनित सुख ही वास्तविक सुख है।* बाक़ी सब तो पीड़ा और लज्जा-मात्र है।

१० जो काम धर्म-सङ्गत है, बस वही कार्य-रूप में परिणत करने योग्य है। दूसरी जितनी बातें धर्म-विरुद्ध हैं, उनसे दूर रहना चाहिए

* धन, वैभव इत्यादि दूसरी श्रेणी में है, यह इस मंत्र का दूसरा अर्थ हो सकता है।

धर्म

: १ :

पारिवारिक जीवन

१. गृहस्थ-आश्रम मे रहने वाला मनुष्य अन्य तीनों आश्रमो का प्रमुख आश्रय है।

२. गृहस्थ अनाथो का नाथ, ग़रीबो का सहायक और निराश्रित मृतको का मित्र है।

३. मृतको का श्राद्ध करना, देवताओ को बलि देना, आतिथ्य सत्कार करना, बन्धु-बान्धवो को सहायता पहुँचाना और आत्मोन्नति करना—ये गृहस्थ के पाँच कर्म है।

४. जो पुरुष बुराई करने से डरता है और भोजन करने से पहले दूसरों को दान देता है, उसका वश कभी निर्बीज नही होता।

५. जिस घर मे स्नेह और प्रेम का निवास है, जिसमें धर्म का साम्राज्य है, वह सम्पूर्णत: सन्तुष्ट रहता है—उसके सब उद्देश्य सफल होते है।

६. अगर मनुष्य गृहस्थ के धर्मों का उचित रूप से पालन करे, तब उसे दूसरे धर्मों का आश्रय लेने की क्या ज़रुरत है ?

७. मुमुक्षुओं में श्रेष्ठ वे लोग हैं, जो धर्मानुकूल गार्हस्थ्य-जीवन व्यतीत करते हैं।

८. देखो, गृहस्थ, जो दूसरे लोगों को कर्तव्य-पालन में सहायता देता है और स्वयं भी धार्मिक जीवन व्यतीत करता है, ऋषियो से भी अधिक पवित्र है।

९. सदाचार और धर्म का विशेषतः विवाहित जीवन से सम्बन्ध है, और सुयश उसका आभूषण है।*

१०. जो गृहस्थ उसी तरह आचरण करता है कि जिस तरह उसे करना चाहिए, वह मनुष्यों में देवता समझा जायगा।

:२:

सहधर्मिणी

१. वही नेक सहधर्मिणी है, जिसमें सुपत्नीत्व के सब गुण वर्तमान हो और जो अपने पति के सामर्थ्य से अधिक व्यय नही करती।†

२. यदि स्त्री स्त्रीत्व के गुणों से रहित हो तो और सब

---

* दूसरा अर्थ—गार्हस्थ्य-जीवन ही वास्तव में धार्मिक जीवन है; तापसिक जीवन भी अच्छा है, यदि कोई ऐसे काम न करे, जिनसे लोग घृणा करे।

† सा भार्या या गृहेदक्षा, सा भार्या या प्रजावती।
सा भार्या या पतिप्राणा, सा भार्या या पतिव्रता॥

नियामतों (श्रेष्ठ वस्तुओं) के होते हुए भी गार्हस्थ्य-जीवन व्यर्थ है।

३. यदि किसी की स्त्री सुयोग्य है तो फिर ऐसी कौन सी चीज़ है जो उसके पास मौजूद नही? और यदि स्त्री मे योग्यता नही तो, फिर उसके पास है ही क्या चीज़ ?*

४ स्त्री अपने सतीत्व की शक्ति से सुरक्षित हो तो दुनिया मे, उससे बढ़कर, शानदार चीज़ और क्या है?

५ देखो, जो स्त्री दूसरे देवताओ की पूजा नही करती किन्तु बिछौने से उठते ही अपने पतिदेव को पूजती है, जल से भरे हुए बादल भी उसका कहना मानते है।

६. वही उत्तम सहधर्मिणी है, जो अपने धर्म और अपने यश की रक्षा करती है और प्रेम-पूर्वक अपने पति की आराधना करती है।

७ चहारदिवारी के अन्दर पर्दे के साथ रहने से क्या लाभ? स्त्री के धर्म का सर्वोत्तम रक्षक उसका इन्द्रिय-निग्रह है।

८ जो स्त्रियाँ अपने पति की आराधना करती है, स्वर्गलोक के देवता उनकी स्तुति करते है।†

---

* यदि स्त्री सुयोग्य हो तो फिर गरीबी कैसी? और यदि स्त्री में योग्यता न हो तो फिर अमीरी कहा?

† दूसरा अर्थ—धन्य है वह स्त्री, जिसने योग्य पुत्र को जन्म दिया है। देवताओ के लोक मे उसका स्थान बहुत ऊंचा है।

९. जिस मनुष्य के घर से सुयश का विस्तार नहीं होता, वह मनुष्य अपने दुश्मनों के सामने गर्व से माथा ऊँचा करके सिंह- ठवनि के साथ नही चल सकता ।

१०. सुसम्मानित पवित्र गृह सर्वश्रेष्ठ वर है, और सुयोग्य सन्तति उसके महत्त्व की पराकाष्ठा ।

: ३ :

सन्तति

१. बुद्धिमान सन्तति पैदा होने से बढ़ कर दूसरी नियामत हम नही जानते ।

२. वह मनुष्य धन्य है, जिसके बच्चों का आचरण निष्कलक है—सात जन्म तक उसे कोई बुराई छू न सकेगी ।

३ सन्तति मनुष्य की सच्ची सम्पत्ति है; क्योकि, वह अपने सञ्चित पुण्य को अपने कर्मों द्वारा उसके अर्पण कर देती है ।

४. निस्सन्देह अमृत से भी अधिक स्वादिष्ट वह साधारण "रसा" है जिसे अपने बच्चे छोटे-छोटे हाथ डाल कर घँघोलते है ।

५. बच्चो का स्पर्श शरीर का सुख है और कानो का सुख है उनकी बोली को सुनना ।

६. वंशी की ध्वनि प्यारी और सितार का स्वर मीठा

है—ऐसा वे ही लोग कहते हैं, जिन्होंने अपने बच्चों की तुतलाती हुई बोली नहीं सुनी है।

७. पुत्र के प्रति पिता का कर्तव्य यही है कि वह उसे सभा में, प्रथम पक्ति मे, बैठने के योग्य बना दे।

८. बुद्धि मे अपने बच्चो को अपने से बढ़ा हुआ पाने मे सभी को सुख होता है।

९. माता की खुशी का कोई ठिकाना नही रहता, जब उसके गर्भ से लड़का उत्पन्न होता है, मगर उससे भी कही ज्यादा खुशी उस वक्त होती है, जब लोगो के मुह से वह उसकी प्रशसा सुनती है।

१० पिता के प्रति पुत्र का कर्तव्य क्या है? यही कि ससार उसे देखकर उसके पिता से पूछे—'किस तपस्या के बल से तुम्हे ऐसा सुपुत्र प्राप्त हुआ है?'

:४:

प्रेम

१. ऐसा आड़ा अथवा डडा कहाँ है, जो प्रेम के दरवाज़े को बन्द कर सके? प्रेमियो की आँखो के सुललित अश्रु-बिन्दु अवश्य ही उसकी उपस्थिति की घोषणा किये बिना न रहेंगे।

२. जो प्रेम नही करते, वे सिर्फ अपने ही लिए जीते हैं; मगर वे जो दूसरों को प्यार करते है, उनकी हड्डियाँ भी दूसरों के काम आती हैं।

३. कहते है कि प्रेम का मज़ा चखने के लिए ही आत्मा एक बार फिर अस्थि-पञ्जर में बन्द होने को राज़ी हुआ है।

४. प्रेम से हृदय स्निग्ध हो उठता है और उस स्नेह-शीलता से ही मित्रता-रूपी बहुमूल्य रत्न पैदा होता है।

५. लोगो का कहना है कि भाग्यशाली का सौभाग्य उसके निरन्तर प्रेम का ही पारितोषिक* है।

६. वे मूर्ख है जो कहते है कि प्रेम केवल नेक आदमियों ही के लिए है, क्योकि बुरो के विरुद्ध खड़े होने के लिए भी प्रेम ही मनुष्य का एकमात्र साथी है। †

७. देखो, अस्थि-हीन कीडे को सूर्य किस तरह जला देता है! ठीक इसी तरह नेकी उस मनुष्य को जला डालती है, जो प्रेम नही करता।

८. जो मनुष्य प्रेम नही करता वह तभी फूले फलेगा कि जब मरुभूमि के सूखे हुए वृक्ष के ठुण्ठ मे कौपले निकलेगी!

९. बाह्य सौन्दर्य किस काम का, जब कि प्रेम, जो आत्मा का भूषण है, हृदय मे न हो!

१०. प्रेम जीवन का प्राण है! जिसमे प्रेम नही, वह केवल मांस से घिरी हुई हड्डियो का ढेर है।‡

---

* इहलोक और परलोक दोनो स्थानों मे।

† भले लोगो ही के साथ प्रेममय व्यवहार किया जाये, यह सिद्धान्त ठीक नही है, बुरे के साथ भी प्रेम का व्यवहार करना चाहिये क्योकि बुरो को भला और दुश्मन को दोस्त बनाने के लिए प्रेम से बढ़ कर दूसरी और कोई कीमिया नही है।

‡ 'जा घट प्रेम न सचरे, सो घट जान मसान'।

: ५ :

मेहमानदारी

१. बुद्धिमान लोग, इतनी मेहनत करके, गृहस्थी किस लिए बनाते है ? अतिथि को भोजन देने और यात्री की सहायता करने के लिए ।

२. जब घर मे मेहमान हो तब चाहे अमृत ही क्यो न हो, अकेले नही पीना चाहिए ।

३ घर आये हुए अतिथि का आदर-सत्कार करने मे जो कभी नही चूकता, उसपर कभी कोई आपत्ति नही आती ।

४. देखो, जो मनुष्य योग्य अतिथि का प्रसन्नता-पूर्वक स्वागत करता है, उसके घर मे निवास करने से लक्ष्मी को आह्लाद होता है ।

५. देखो, जो आदमी पहले अपने मेहमान को खिलाता और उसके बाद ही, जो कुछ बचता है, खुद खाता है, क्या उसके खेत को बोने की भी जरुरत होगी ?

६ देखो, जो आदमी बाहर जाने वाले अतिथि की सेवा कर चुका है और आने वाले अतिथि की प्रतीक्षा करता है, ऐसा आदमी देवताओ का सुप्रिय अतिथि है ।

७. हम किसी अतिथि-सेवा के महात्म्य का वर्णन नही कर सकते—उसमे इतने गुण है । अतिथि-यज्ञ का महत्त्व तो अतिथि की योग्यता पर निर्भर है ।

८. देखो, जो मनुष्य अतिथि-यज्ञ नही करता, वह एक रोज़ कहेगा—'मैने मेहनत करके एक बड़ा भारी खजाना जमा किया, मगर हाय ! वह सब बेकार हुआ, क्योकि वहाँ मुझे आराम पहुँचाने वाला कोई नही है ।'

९. धन और वैभव के होते हुए भी जो यात्री का आदर-सत्कार नही करता, वह मनुष्य नितान्त दरिद्र है, यह बात केवल मूर्खो मे ही होती है ।

१०. अनीचा का पुष्प सूँघने से मुर्झा जाता है, मगर अतिथि का दिल तोड़ने के लिए एक निगाह ही काफी है ।

: ६ :

मृदु-भाषण

१ सत्पुरुषो की वाणी ही वास्तव मे सुस्निग्ध होती है, क्योकि वह दयार्द्र, कोमल और बनावट से खाली होती है ।

२. औदार्यमय दान से भी बढकर सुन्दर गुण वाणी की मधुरता और दृष्टि की स्निग्धता तथा स्नेहार्द्रता मे है ।

३. हृदय से निकली हुई मधुर वाणी और ममतामयी दृष्टि के अन्दर ही धर्म का निवासस्थान है ।

४. देखो, जो मनुष्य सदा ऐसी वाणी बोलता है कि जो सब के हृदयो को आह्लादित कर दे, उसके पास दुखो की अभिवृद्धि करने वाली दरिद्रता कभी न आयगी

५. नम्रता और स्नेहार्द्र वक्तृता, बस, केवल यही मनुष्य के आभूषण हैं, और कोई नही।

६. यदि तुम्हारे विचार शुद्ध और पवित्र है और तुम्हारी वाणी मे सहृदयता है, तो तुम्हारी पापवृत्ति का क्षय हो जायगा और धर्मशीलता की अभिवृद्धि होगी।

७. सेवा-भाव को प्रदर्शित करने वाला और विनम्र वचन मित्र बनाता है और बहुत से लाभ पहुँचाता है।

८. वे शब्द जो कि सहृदयता से पूर्ण और क्षुद्रता से रहित होते है, इहलोक और परलोक दोनो ही जगह लाभ पहुँचाते है।

९ श्रुति-प्रिय शब्दो के अन्दर जो मधुरता है, उसका अनुभव कर लेने के बाद भी मनुष्य क्रूर शब्दो का व्यवहार करना क्यो नही छोडता ?

१०. मीठे शब्दो के रहते हुए भी जो मनुष्य कडवे शब्दो का प्रयोग करता हैं, वह मानों पक्के फल को छोडकर कच्चा फल तोड कर खाना पसन्द करता है।*

---

*श्रीयुत् बी० बी० एस० अय्यर ने इस पद का अर्थ इस प्रकार किया है—देखो, जो आदमी मीठे शब्दो से काम चल जाने पर भी कठोर शब्दो का प्रयोग करता है, वह पक्के फल की अपेक्षा कच्चा फल पसन्द करता है।

कहावत है—

'जो गुड दीन्हे ही मरे, क्यो विष दीजे ताहि ?'

: ७ :

कृतज्ञता

१. एहसान करने के विचार से रहित होकर जो दया दिखाई जाती है, स्वर्ग और मर्त्य दोनों मिल कर भी उसका बदला नही चुका सकते।

२. जरूरत के वक्त जो मेहरबानी की जाती है वह देखने मे छोटी भले ही हो, मगर वह तमाम दुनिया से ज्यादा वजनदार है।

३. बदले के खयाल को छोड़ कर जो भलाई की जाती है, वह समुद्र से भी अधिक बलवती है।

४ किसी से प्राप्त किया हुआ लाभ राई की तरह छोटा ही क्यो न हो, किन्तु समझदार आदमी की दृष्टि में वह ताड़ के वृक्ष के बराबर है।

५. कृतज्ञता की सीमा किये हुए उपकार पर अवलम्बित नही है, उसका मूल्य उपकृत व्यक्ति की शराफत पर निर्भर है।

६ महात्माओ की मित्रता की अवहेलना मत करो; और उन लोगों का त्याग मत करो, जिन्होने मुसीबत के वक्त तुम्हारी सहायता की।

७. जो किसी को कष्ट से उबारता है, जन्म-जन्मातर तक उसका नाम कृतज्ञता के साथ लिया जायगा।

८. उपकार को भूल जाना नीचता है; लेकिन यदि कोई भलाई के बदले बुराई करे तो उसको फौरन ही भुला देना शराफत की निशानी है।*

९. हानि पहुँचाने वालेकी यदि कोई मेहरबानी याद आ जाती है तो महाभयकर व्यथा पहुँचाने वाली चोट उसी दम भूल जाती है।

१० और सब दोषो से कलकित मनुष्यो का तो उद्धार हो सकता है, किन्तु अभागे अकृतज्ञ मनुष्य का कभी उद्धार न होगा।

८

ईमानदारी तथा न्याय-निष्ठा

१ और कुछ नही, नेकी का सार इसीमे है कि मनुष्य निष्पक्ष हो कर ईमानदारी के साथ दूसरे का हक अदा कर दे, फिर चाहे वह दोस्त हो अथवा दुश्मन।

२ न्याय-निष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नही होती। वह दूर तक, पीढी दर पीढी चली जाती है।

३. नेकी को छोड कर जो धन मिलता है, उसे कभी मत छुओ, भले ही उससे लाभ के अतिरिक्त और किसी बात की सम्भावना न हो।

---

* अपकारिषु य साधु स. साधु सद्भिरुच्यते।

४. नेक और बद का पता उनकी सन्तान से चलता है।

५. भलाई-बुराई तो सभी को पेश आती है, मगर एक न्याय-निष्ठ दिल बुद्धिमानों के गर्व की चीज़ है।*

६. जब तुम्हारा मन नेकी को छोड़ कर बदी की ओर चलायमान होने लगे, तो समझ लो तुम्हारा सर्वनाश निकट ही है।

७. ससार न्यायनिष्ठ और नेक आदमी की गरीबी को हेय दृष्टि से नही देखता है।

८. उस बराबर तुली हुई लकड़ी को देखो; वह सीधी है और इसलिए ठीक बराबर तुली हुई है। बुद्धिमानोंका गौरव इसी में है। वे इसकी तरह बनें—न इधर को झुकें, और न उधर को।

९. जो मनुष्य अपने मनमे भी नेकी से नही डिगता है, उसके रास्तबाज होठो से निकली हुई बात नित्य सत्य है।

१०. उस दुनियादार आदमी को देखो कि जो दूसरे के कामो को अपने खास कामो की तरह देखता-भालता है; उसके काम-काज मे अवश्य उन्नति होगी।

---

*निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वा स्तुवन्तु। लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्। अद्यैव वा मरण मस्तु युगान्तरे वा। न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पद न धीराः॥ भर्तृहरि नी० श० ८४

: ९ :

आत्म-संयम

१. आत्म-संयम से स्वर्ग प्राप्त होता है, किन्तु असंयत इन्द्रिय-लिप्सा रौरव नर्क के लिए खुला हुआ शाही रास्ता है।

२. आत्म-सयम को, अपने खज़ाने की तरह, रक्षा करो; उससे बढ़ कर, इस दुनिया मे, जीवन के पास और कोई धन नही है ।

३. जो पुरुष ठीक तरह से समझ-बूझ कर अपनी इच्छाओ का दमन करता है, मेधा और अन्य दूसरी नियामते उसे मिलेगी।

४. जिसने अपनी इच्छा को जीत लिया है और जो अपने कर्तव्य से विचलित नही होता, उसकी आकृति पहाड से भी बढकर रोब-दाब वाली होती है।

५ नम्रता सभी को सोहती है, मगर वह अपनी पूरी शान के साथ अमीरो मे ही चमकती है।

६. जो मनुष्य अपनी इन्द्रियों को उसी तरह अपने में खीच कर रखता है, जिस तरह कछुआ अपने हाथ-पाँव को खीचकर भीतर छिपा लेता है, उसने अपने समस्त आगामी जन्मो के लिए खजाना जमा कर रक्खा है।*

---

*तिरुवल्लुवर के भाव मे और गीता के इस निम्न लिखित श्लोक में कितना सामजस्य है ! इन्द्रिय-निग्रह को दोनो कछुवे के अग समेटनें से उपमा देते है और दोनो के बताये हुए फल भी लगभग एक से है —
यदा सहरते चाय कूर्मोंगानीव सर्वश ।।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।। गीता, अ० २ श्लो० २८

७. और किसी को चाहे तुम मत रोको, मगर अपनी ज़ुबान को लगाम दो, क्योंकि बेलगाम की ज़ुबान बहुत दुःख देती है ।

८. अगर तुम्हारे एक शब्द स भी किसी को पीड़ा पहुँचती है, तो तुम अपनी सब नेकी नष्ट हुई समझो ।

९ आग का जला हुआ तो समय पाकर अच्छा हो जाता है, मगर ज़ुबान का लगा हुआ ज़ख्म सदा हरा बना रहता है ।

१०. उस मनुष्य को देखो, जिसने विद्या और बुद्धि प्राप्त कर ली है । जिसका मन शान्त और पूर्णतः वश मे है, धार्मिकता और नेकी उसका दर्शन करने के लिए उसके घर में आती है ।

· १० :

सदाचार

१. जिस मनुष्य का आचरण पवित्र है, सभी उसकी इज्ज़त करते है, इसलिए सदाचार को प्राणो से भी बढ कर समझना चाहिए ।*

२. अपने आचरण की खूब देख-रेख रक्खो, क्योकि तुम जहाँ चाहो खोजो, सदाचार से बढ कर पक्का दोस्त कहीं

---

* वरं विन्ध्याटव्यामनशनतृषार्तस्य मरणम् ।
न शीलाद् विभ्रंशो भवतु कुलजस्य श्रुतवतः ॥

नहीं पा सकते ।

३. सदाचार सम्मानित परिवार को प्रकट करता है। मगर दुराचार मनुष्य को कमीनो मे जा बिठाता है ।

४. वेद भी अगर विस्मृत हो जायें तो फिर याद कर लिये जा सकते हैं, मगर सदाचार से यदि एक बार भी मनुष्य स्खलित हो गया तो सदा के लिए अपने स्थान से भ्रष्ट हो जाता है ।

५. सुख-समृद्धि ईर्ष्या करने वालों के लिए नही है, ठीक इसी तरह गौरव दुराचारियों के लिए नही है ।

६. दृढ-प्रतिज्ञ सदाचार से स्खलित नही होते, क्योंकि वे जानते है कि इस प्रकार के स्खलन से कितनी आपत्तियाँ आती है ।

७. मनुष्य-समाज मे सदाचारी पुरुष का सम्मान होता है, लेकिन जो लोग सन्मार्ग से बहक जाते है, बदनामी और बेइज्जती ही उन्हे नसीब होती है ।

८ सदाचार* सुख-सम्पत्ति का बीज बोता है, मगर दुष्ट-प्रवृत्ति असीम आपत्तियो की जननी है ।

गिरिते गिरि परिबो भलो, भलो पकरिबो नाग ।
अग्नि म हि जरिबो भलो, बुरो शील को त्याग ।।

कस्यचित्कवि ।

* जहा सु मति तहं सम्पति नाना ।
जहां कुमति तह विपति-निधाना ।। —तुलसीदास ।

९. वाहियात और गन्दे शब्द भूल कर भी शरीफ़ आदमी की जुबान से नही निकलेंगे ।

१०. मूर्खों को और जो चाहो तुम सिखा सकते हो, मगर सदा सन्मार्ग पर चलना वे कभी नही सीख सकते ।

: ११ :

पराई स्त्री की इच्छा न करना

१. जिन लोगो की नजर धन और धर्म पर रहती है, वे पराई स्त्री को चाहने की मूर्खता नही करते ।

२. जो लोग धर्म से गिर गये है, उनमे उस मनुष्य से बढ कर मूर्ख और कोई नही है कि जो पडोसी की डयोढी पर खडा होता है ।

३. निस्सन्देह वे लोग मौत के मुँह मे है कि जो सन्देह न करने वाले मित्र के घर पर हमला करते है ।

४. मनुष्य कितना ही बडा क्यो न हो, मगर उसका बडप्पन किस काम का, जब कि वह व्यभिचार से पैदा हुई लज्जा का जरा भी खयाल न करके पर-स्त्री गमन करता है ?*

५. जो पुरुष अपने पडोसी की स्त्री को गले लगाता

---

* पर नारी पैनी छुरी, मत कोई लावो अङ्ग ।
रावण के दश सिर गये, पर नारी के सङ्ग ॥

—कबीर

है, इसलिए कि वह उस तक पहुँच सकता है; उसका नाम सदा के लिए कलङ्कित हुआ समझो ।

६. व्यभिचारी को इन चार चीजो से कभी छुटकारा नही मिलता–घृणा, पाप, भय और कलङ्क ।

७. सद्गृहस्थ वही है कि जो अपने पडोसी की स्त्री के सौन्दर्य और लावण्य की परवाह नही करता ।

८. शाबास है उसकी मर्दानगी को कि जो पराई स्त्री पर नजर नही डालता ! वह केवल नेक और धर्मात्मा ही नही, वह सन्त है ।

९. पृथ्वी पर की सब नियामतों का हकदार कौन है ? वही कि जो पराई स्त्री को बाहु-पाश मे नही लेता ।

१०. तुम कोई भी अपराध और दूसरा कैसा भी पाप क्यो न करो, मगर तुम्हारे हक मे यही बेहतर है कि तुम अपने पडोसी की स्त्री की इच्छा न करो ।

१२

क्षमा

१. धरती* उन लोगों को भी आश्रय देती है कि जो उसे खोदते है--इसी तरह तुम भी उन लोगो की बाते सहन

*एक हिंदी कवि ने सन्तो की उपमा फलदार वृक्षो से देते हुए कहा है—

'ये इतते पाहन हनै, वे उतते फल देत ।'

करो, जो तुम्हें सताते है, क्योंकि बड़प्पन इसीमें है ।

२. दूसरे लोग तुम्हे जो हानि पहुँचायें, उसके लिए तुम सदा उन्हें क्षमा कर दो, और अगर तुम उसे भुला दे सको, तो यह और भी अच्छा है ।

३. अतिथि-सत्कार से इन्कार करना ही सबसे अधिक गरीबी की बात है, और मूर्खों की बेहूदगी को सहन करना ही सबसे बडी बहादुरी है ।

४. यदि तुम सदा ही गौरवमय बनना चाहते हो, तो सब के प्रति क्षमामय व्यवहार करो ।

५. जो लोग बुराई का बदला लेते है, बुद्धिमान उनकी इज्ज़त नही करते, मगर जो अपने दुश्मनो को माफ कर देते है, वे स्वर्ण की तरह बहुमूल्य समझे जाते हैं ।

६. बदला लेनेकी ख़ुशी तो सिर्फ़ एकही दिन रहती है, मगर जो पुरुष क्षमा करदेता है, उसका गौरव सदा स्थिर रहता है ।

७. नुक़सान चाहे कितना ही बड़ा क्यों न उठाना पड़ा हो, मगर ख़ूबी इसी मे है कि मनुष्य उसे मन मे न लाय और बदला लेने के विचार से दूर रहे ।

८. घमण्ड मे चूर हो कर जिन्होने तुम्हे हानि पहुँचाई है, उन्हें अपनी भलमन्साहत से विजय कर लो ।

९ संसार-त्यागी पुरुषों से भी बढ़ कर संत वह है जो अपनी निन्दा करने वालों की कटुवाणी को सहन कर लेता है*।

---

* कबीर तो यहां तक कह गये है—

निन्दक नियरे राखिये, आगन कुटी छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय ॥

१०. भूखे रह कर तपश्चर्या करने वाले निःसन्देह महान् हैं, मगर उनका दर्जा उन लोगो के बाद ही है, जो अपनी निन्दा करने वालो को क्षमा कर देते हैं।

: १३ .

ईर्ष्या न करना

१. ईर्ष्या के विचारों को अपने मन मे न आने दो, क्योंकि ईर्ष्या से रहित होना धर्माचरण का एक अग है।

२. सब प्रकार की ईर्ष्या से रहित स्वभाव के समान दूसरी और कोई बडी नियामत नही है।

३ जो मनुष्य धन या धर्म की परवाह नही करता, वही अपने पडोसी की समृद्धि पर डाह करता है।

४. बुद्धिमान लोग ईर्ष्या की वजह से दूसरो को हानि नही पहुँचाते, क्योकि उससे जो बुराइयॉ पैदा होती है, उन्हे वे जानते है।

५. ईर्ष्या करने वाले के लिए ईर्ष्या ही काफ़ी बला है, क्योकि उसके दुश्मन उसे छोड भी दे तो भी उसकी ईर्ष्या ही उसका सर्वनाश कर देगी।

६. जो मनुष्य दूसरो को देते हुए नही देख सकता, उसका कुटुम्ब रोटी और कपडो तक के लिए मारा-मारा फिरेगा और नष्ट हो जायगा।

७. लक्ष्मी ईर्ष्या करने वाले के पास नहीं रह सकती; वह उसको अपनी बडी बहन* के हवाले करके चली जायगी।

८. दुष्टा ईर्ष्या दरिद्रता दानवी को बुलाती है और मनुष्य को नर्क के द्वार तक ले जाती है।

९. ईर्ष्या करने वालो की समृद्धि और उदारचेता पुरुषों की कंगाली, ये दोनो ही एक समान आश्चर्यजनक है।

१० न तो ईर्ष्या से कभी कोई फला-फूला, न उदारचेता पुरुष उस अवस्था से कभी वंचित ही हुआ।

: १४ :

निर्लोभता

१. जो पुरुष सन्मार्ग को छोड़ कर दूसरे की सम्पत्ति को लेना चाहता है, उसकी दुष्टता बढती जायगी और उसका परिवार क्षीण हो जायगा।

२ जो पुरुष बुराई से विमुख रहते है, वे लोभ नही करते और न दुष्कर्मों की ओर ही प्रवृत्त होते है।

३. देखो, जो मनुष्य अन्य प्रकार के सुखो को चाहते है, वे छोटे-मोटे सुखों का लोभ नही करते और न कोई बुरा काम ही करते है।

४. जिन्होने अपनी इन्द्रियों को वश मे कर लिया है और

---

*दरिद्रता।

जिनके विचार उदार हैं, वे यह कह कर दूसरो की चीज़ों की कामना नहीं करते—ओहो, हमें इसकी ज़रूरत है ।

५. वह बुद्धिमान और समझदार मन किस काम का, जो लालच में फस जाता है और वाहियात काम करने को तैयार होता है ।

६ वे लोग भी जो सुयश के भूखे है और सीधी राह पर चलते है, नष्ट हो जायँगे, यदि धन के फेर मे पड कर कोई कुचक्र रचेगे ।

७. लालच द्वारा एकत्र किये हुए धन की कामना मत करो, क्योकि भोगने के समय उसका फल तीखा होगा ।

८. यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारी सम्पत्ति कम न हो, तो तुम अपने पडोसी के धन-वैभव को ग्रसने की कामना मत करो ।

९. जो बुद्धिमान मनुष्य न्याय की बात को समझता है और दूसरे की चीजो को लेना नही चाहता, लक्ष्मी उसकी श्रेष्ठता को जानती है और उसे ढूँढती हुई उसके घर तक जाती है ।

१० दूरदर्शिता-हीन लालच नाश का कारण होता है, मगर महत्व, जो कहता है—मै नही चाहता, सर्व-विजयी होता है ।

: १९ :

चुग़ली न खाना

१. जो मनुष्य सदा बुराई ही करता है और नेकी का कभी नाम भी नही लेता, उसको भी प्रसन्नता होती है, जब

कोई कहता है–'देखो ! यह आदमी किसी की चुग़ली नहीं खाता ।'

२. नेकी से विमुख हो जाना और बदी करना निःसन्देह बुरा है, मगर सामने हँस कर बोलना और पीठ-पीछे निन्दा करना उससे भी बुरा है ।

३. झूठ और निन्दा के द्वारा जीवन व्यतीत करने से तो फौरन ही मर जाना बेहतर है; क्योंकि इस तरह मर जाने से नेकी का फल मिलता है ।

४. पीठ-पीछे किसी की निन्दा न करो, चाहे उसने तुम्हारे मुँह पर ही तुम्हें गाली दी हो ।

५. मुँह से कोई कितनी ही नेकी की बातें करे, मगर उसकी चुगलखोर ज़ुबान उसके हृदय की नीचता को प्रकट कर ही देती है ।

६. अगर तुम दूसरे की निन्दा करोगे तो वह तुम्हारे दोषों को खोज कर उनमें से बुरे से बुरे दोषो को प्रकट कर देगा ।

७. जो मधुर वचन बोलना और मित्रता करना नहीं जानते, वे फूट का बीज बोते है और मित्रो को एक दूसरे से जुदा कर देते है ।

८. जो लोग अपने मित्रो के दोषों की खुलेआम चर्चा करते है, वे अपने दुश्मनो के दोषों को भला किस तरह छोड़ेंगे ?

९. पृथ्वी निन्दा करने वाले के पदाघात को, सब्र के साथ, अपनी छाती पर किस तरह सहन करती है ? क्या वही अपना

पिण्ड छुड़ाने की ग़रज से धर्म की ओर बार-बार ताकती है ?

१०. यदि मनुष्य अपने दोषो की विवेचना उसी तरह करे, जिस तरह वह अपने दुश्मनो के दोषों की करता है, तो क्या बुराई कभी उसे छू सकती है ?

१६

पाप कर्मों से भय

१. दुष्ट लोग उस मूर्खता से नही डरते, जिसे पाप कहते हैं, मगर लायक़ लोग उससे सदा दूर भागते है ।

२. बुराई से बुराई पैदा होती है, इसलिए आग से भी बढ कर बुराई से डरना चाहिये ।

३ कहते है सबसे बडी बुद्धिमानी यही है कि दुश्मन को भी नुक्सान पहुॅचाने से परहेज किया जाय ।

४. भूल से भी दूसरे के सर्वनाश का विचार न करो, क्योकि न्याय उसके विनाश की युक्ति सोचता है, जो दूसरे के साथ बुराई करना चाहता है ।

५. मै गरीब हूॅ, ऐसा कह कर किसी को पापकर्म में लिप्त न होना चाहिए, क्योकि ऐसा करने से वह और भी कङ्गाल हो जायगा ।

६. जो मनुष्य आपत्तियों द्वारा दु खित होना नही चाहता, उसे दूसरो को हानि पहुॅचाने से बचना चाहिए ।

७. दूसरे सब तरह के दुश्मनो से बचाव हो सकता है, मगर पाप-कर्मों का कभी विनाश नही होता—वे पापी का पीछा करके उसको नष्ट किये बिना नही छोड़ते ।

८. जिस तरह छाया मनुष्य को कभी नही छोड़ती, बल्कि जहाँ जहाँ वह जाता है उसके पीछे-पीछे लगी रहती है, बस ठीक इसी तरह, पाप-कर्म पापी का पीछा करते हैं और अन्त में उसका सर्वनाश कर डालते हैं ।

९. यदि किसी को अपने से प्रेम है तो उसे पाप की ओर जरा भी न झुकना चाहिए ।

१०. उसे आपत्तियो से सदा सुरक्षित समझो, जो अनुचित कर्म करने के लिए सन्मार्ग को नही छोड़ता ।

: १७ .

परोपकार

१. महान पुरुष जो उपकार करते हैं, उसका बदला नही चाहते । भला, ससार जल बरसाने वाले बादलो का बदला किस तरह चुका सकता है ?

२ योग्य पुरुष अपने हाथो मेहनत करके जो धन जमा करते हैं, वह सब दूसरों ही के लिए होता है ।

३. हार्दिक उपकार से बढकर न तो कोई चीज इस संसार मे मिल सकती है, और न स्वर्ग में ।

४. जिसे उचित-अनुचित का विचार है, वही वास्तव में जीवित है, पर जो योग्य-अयोग्य का ख़याल नहीं रखता, उसकी गिनती मुर्दों मे की जायगी ।

५. लबालब भरे हुए गाँव के तालाब को देखो; जो मनुष्य सृष्टि से प्रेम करता है, उसकी सम्पत्ति उसी तालाब के समान है ।

६. दिलदार आदमी का वैभव गाँव के बीचोंबीच उगे हुए और फलों से लदे हुए वृक्ष के समान है ।

७. उदार मनुष्य के हाथ का धन उस वृक्ष के समान है जो औषधियों का सामान देता है और सदा हरा बना रहता है ।

८ देखो, जिन लोगों को उचित और योग्य बातों का ज्ञान है, वे बुरे दिन आने पर भी दूसरो का उपकार करने से नही चूकते ।

९. परोपकारी पुरुष उसी समय अपने को गरीब समझता है, जब कि वह सहायता माँगने वालो की इच्छा पूर्ण करने में असमर्थ होता है ।

१०. यदि परोपकार करने के फलस्वरूप सर्वनाश उपस्थित हो, तो गुलामी मे फँसने के लिए आत्म-विक्रय करके भी उसको सम्पादन करना उचित है ।*

---

* परोपकाराय फलन्ति वृक्षा ।
परोपकाराय वहन्ति नद्य. ॥
परोपकाराय दुहन्ति गाव ।
परोपकारार्थमिद शरीरम् ॥

: १८ :

दान

१. ग़रीबों को देना ही दान है, और सब तरह का देना उधार देने के समान है।

२. दान लेना बुरा है, चाहे उससे स्वर्ग ही क्यों न मिलता हो। और दान देने वाले के लिए चाहे स्वर्ग का द्वार ही क्यों न बन्द हो जाय, फिर भी दान देना धर्म है।

३. 'हमारे पास नही है'—ऐसा कहे बिना दान देने वाला पुरुष ही केवल कुलीन होता है।

४. याचक के ओठो पर सन्तोष-जनित हँसी की रेखा देखे बिना दानी का दिल ख़ुश नही होता।

५. आत्म-जयी की विजयों मे से सर्वश्रेष्ठ जय है—भूख को जय करना—मगर उसकी विजय से भी बढ कर उस मनुष्य की विजय है, जो भूख को शान्त करता है।

६. ग़रीबो के पेट की ज्वाला को शान्त करना—यही तरीका है, जिससे अमीरों को ख़ास अपने लिए धन जमा कर रखना चाहिए।

७. जो मनुष्य अपनी रोटी दूसरो के साथ बाँट कर खाता है, उसको भख की भयानक बीमारी कभी स्पर्श नही करती।

८. वे संग-दिल लोग जो जमा कर-कर के अपने धन की बरबादी करते है, क्या उन्होने कभी दूसरो को दान करने की

खुशी का मजा नही चखा है ?

९ भीख माँगने से भी बढकर अप्रिय उस कजूस का जमा किया हुआ खाना है, जो अकेला बैठ कर खाता है ।

१० मौत से बढ कर कडवी चीज और कोई नही है; मगर मौत भी उस वक्त मीठी लगती है, जब किसी को दान करने की सामर्थ्य नही रहती ।

१९

कीर्ति

१. गरीबो को दान दो और कीर्ति कमाओ, मनुष्य के लिए इससे बढ कर लाभ और किसी मे नही है ।

२ प्रशसा करने वाले की जुबान पर सदा उन लोगो का नाम रहता है कि जो गरीबो को दान देते है ।

३ दुनियाँ मे और सब चीजे तो नष्ट हो जाती है, मगर अतुल कीर्ति सदा बनी रहती है ।

४ देखो, जिस मनुष्य ने दिगन्तव्यापी स्थायी कीर्ति पाई है, स्वर्ग मे देवता लोग उसे साधु-सतो से भी बढ कर मानते है ।

५ विनाश जिससे कीर्ति मे वृद्धि हो, और मौत जिससे अलौकिक यश की प्राप्ति हो, ये दोनो महान् आत्माओ ही के मार्ग मे आते है ।

६. यदि मनुष्यो को ससार मे अवश्य ही पैदा होना है, तो उनको चाहिये कि वे सुयश उपार्जन करे। जो ऐसा नही करते, उनके लिए तो यही अच्छा था कि वे बिलकुल पैदा ही न हुए होते।

७. जो लोग दोषो से सर्वथा रहित नही है वे खुद अपने पर तो नही बिगडते, फिर वे अपनी निन्दा करने वाले से क्यो नाराज होते है ?

८ नि सन्देह यह सब मनुष्यो के लिए बेइज्जती की बात है, अगर वे उस स्मृति का सम्पादन नही करते कि जिसे कीर्ति कहते है।

९ बदनाम लोगो के बोझ से दबे हुए देश को देखो, उसकी समृद्धि, भूतकाल मे चाहे कितनी ही बढी-चढी क्यो न रही हो, धीरे-धीरे नष्ट हो जायगी।

१०. वही लोग जीते है, जो निष्कलक जीवन व्यतीत करते है, और जिनका जीवन कीर्तिविहीन है, वास्तव मे वे ही मुर्दे है।

· २० ·

दया

१. दया से लबालब भरा हुआ दिल ही सबसे बड़ी दौलत है, क्योकि दुनियावी दौलत तो नीच मनुष्यों के पास भी देखी जाती है।

२. ठीक पद्धति से सोच विचार कर हृदय मे दया धारण करो और अगर तुम सब धर्मों से इस बारे मे पूछ कर देखोगे तो तुम्हे मालूम होगा कि दया ही एकमात्र मुक्ति का साधन है।

३. जिन लोगो का हृदय दया से अभिभूत है, वे उस अन्धकारमय अप्रिय लोक मे प्रवेश नही करते।

४. जो मनुष्य सब जीवों पर मेहरबानी और दया दिखलाता है, उसे उन पाप-परिणामो को भोगना नही पडता, जिन्हे देख कर ही आत्मा कॉप उठती है।

५. क्लेश दयालु पुरुष के लिए नही है, भरी-पूरी वायु वेष्ठित पृथ्वी इस बात की साक्षी है।

६ अफसोस है उस आदमी पर, जिसने दया-धर्म को त्याग दिया और पाप-कर्म करने लगा है, धर्म का त्याग करने के कारण यद्यपि पिछले जन्म मे उसने भयङ्कर दु ख उठाये है, मगर उसने जो नसीहत ली थी उसे भुला दिया है।

७. जिस तरह इहलोक धन—वैभव से शून्य पुरुष के लिए नही है, ठीक उसी तरह परलोक उन लोगो के लिए नही, जिनके पास दया का अभाव है।

८. ऐहिक वैभव से शून्य गरीब लोग तो किसी दिन वृद्धिशाली हो भी सकते है, मगर वे जो दया-ममता से रहित है सचमुच ही गरीब कङ्गाल है और उनके दिन कभी नही फिरते।

९. विकार-ग्रस्त मनुष्यो के लिए सत्य का पा लेना जितना

सहज है, कठोर दिलवाले पुरुष के लिए नेकी के काम करना भी उतना ही आसान है ।

१०. जब तुम किसी दुर्बल को सताने के लिए उद्यत होओ, तो सोचो कि अपने से बलवान मनुष्य के आगे भय से जब तुम कॉपोगे तब तुम्हें कैसा लगेगा ।

: २१ :

निरामिष

१. भला उसके दिल मे तरस कैसे आयगा, जो अपना मॉस बढाने के खातिर दूसरो का मास खाता है ?

२ फिजूल खर्च करने वाले के पास जैसे धन नही ठहरता ठीक इसी तरह मास खाने वाले के हृदय मे दया नही रहती ।

३ जो मनुष्य मांस चखता है, उसका दिल हथियार-बन्द आदमी के दिल की तरह नेकी की ओर रागिब नही होता ।

४. जीवों की हत्या करना नि.सन्देह क्रूरता है; मगर उनका मांस खाना तो एकदम पाप है ।*

५. मास न खाने ही मे जीवन है; अगर तुम खाओगे तो नर्क का द्वार तुम्हे बाहर निकल जाने देने के लिए अपना मुँह नही खोलेगा ।

*अहिसा ही दया है और हिसा करना ही निर्दयता, मगर मास खाना एकदम पाप है—यह दूसरा अर्थ हो सकता है ।

६. अगर दुनिया खाने के लिए मास की कामना न करे, तो उसे बेचने वाला कोई आदमी ही न रहेगा ।*

७. अगर मनुष्य दूसरे प्राणियो की पीड़ा और यन्त्रणा को एक बार समझ सके, तो फिर वह कभी मास खाने की इच्छा न करे ।

८. जो लोग माया और मूढता के फन्दे से निकल गए है, वे उस मास को नही खाते है, जिसमे से जान निकल गई है ।

९. जानदारो को मारने और खाने से परहेज करना सैकडों यज्ञो मे बलि अथवा आहुति देने से बढकर है ।

१० देखो, जो पुरुष हिसा नही करता और मास खाने से परहेज करता है, सारा ससार हाथ जोडकर उसका सम्मान करता है ।

२२

तप

१. शान्तिपूर्वक दु.ख सहन करना और जीवहिसा न करना, बस इन्ही मे तपस्या का समस्त सार है ।

२. तपस्या तेजस्वी लोगो के लिए ही है, दूसरे लोगो का तप करना बेकार है ।

---

*यह पद उन लोगो के लिए है, जो कहते है—हम खुद हलाल नही करते, हमे बना-बनाया मास मिलता है ।

३ तपस्वियो को खिलाने पिलाने और उनकी सेवा-शुश्रूषा करने के लिए कुछ लोग होने चाहिएँ--क्या इसी विचार से बाकी लोग तप करना भूल गये है ?

४. यदि तुम अपने शत्रुओ का नाश करना और उन लोगो को उन्नत बनाना चाहते हो, जो तुम्हे प्यार करते है, तो जान रक्खो कि यह शक्ति तप मे है ।

५. तप समस्त कामनाओ को यथेष्ठ रूप से पूर्ण कर देता है । इसीलिए लोग दुनिया मे तपस्या के लिए उद्योग करते है ।

६ जो लोग तपस्या करते है , वही तो वास्तव मे अपना भला करते है । बाकी सब तो लालसा के जाल मे फॅसे हुए है और अपने को केवल हानि ही पहुॅचाते है ।

७ सोने को जिस आग मे पिघलाते है, वह जितनी ही ज्यादा तेज होती है सोने का रग उतना ही ज्यादा तेज निकलता है, ठीक इसी तरह तपस्वी जितनी ही कडी मुसीबते सहता है उसकी प्रकृति उतनी ही अधिक विशुद्ध हो उठती है ।

८. देखो, जिसने अपने पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया है, उस पुरुषोत्तम को सभी लोग पूजते है ।

९. देखो, जिन लोगो ने तप करके शक्ति और सिद्धि प्राप्त करली है, वे मृत्यु को जीतने मे भी सफल हो सकते है ।

१० अगर दुनिया मे हाजतमन्दो की तादाद अधिक है, तो इसका कारण यही है कि वे लोग जो तप करते है, थोडे है, और जो तप नही करते है, उनकी सख्या अधिक है ।

: २३ :

मक्कारी

१. स्वय उसके ही शरीर के पचतत्व मन ही मन उसपर हँसते है, जब कि वे मक्कार की चालबाजी और ऐयारी को देखते है ।

२ शानदार रोब वाला चेहरा किस काम का, जब कि दिल के अन्दर बुराई भरी है और दिल इस बात को जानता है ?

३. वह कापुरुष जो तपस्वी की सी तेजस्वी आकृति बनाये रखता है, उस गधे के समान है, जो शेर की खाल पहने हुए घास चरता है ।

४. उस मनुष्य को देखो, जो धर्मात्मा के भेष मे छिपा रहता है और दुष्कर्म करता है । वह उस बहेलिये के समान है, जो झाडी के पीछे छिप कर चिडियों को पकडता है ।

५. मक्कार आदमी दिखावे के लिए पवित्र बनता है और कहता है––'मैने अपनी इच्छाओ, इद्रिय-लालसाओ को जीत लिया है । मगर अन्त मे वह दु.ख भोगेगा और रो-रो कर कहेगा–मैने क्या किया ? हाय ! मैने क्या किया ?'

६. देखो, जो पुरुष वास्तव मे अपने दिल से तो किसी चीज को छोडता नही मगर बाहर त्याग का आडम्बर रचता है और लोगो को ठगता है, उससे बढकर कठोर-हृदय दुनिया मे और कोई नही है ।

७. घुँघची देखने में खूबसूरत होता है, मगर उसके दूसरी तरफ काला दाग होता है। कुछ आदमी भी उसी की तरह होते है। उनका बाहरी रूप तो सुन्दर होता है, किन्तु उनका अन्तःकरण बिलकुल कलुषित होता है।

८. ऐसे बहुत है कि जिनका दिल तो नापाक है मगर वे तीर्थस्थानो मे स्नान करके घूमते फिरते है।

९. तीर सीधा होता है और तम्बूरे मे कुछ टेढापन रहता है। इसलिए आदमियो को सूरत से नही, बल्कि उनके कामो से पहचानो।

१० दुनिया जिसे बुरा कहती है, अगर तुम उससे बचे हुए हो तो फिर न तुम्हे जटा रखने की जरूरत है, न सिर मुंडाने की।

: २४ :

सच्चाई

१. सच्चाई क्या है ? जिससे दूसरो को, किसी तरह का, जरा भी नुक्सान न पहुँचे, उस बात को बोलना ही सच्चाई है।

२. उस झूठ मे भी सच्चाई की खासियत है, जिसके फलस्वरूप सरासर नेकी ही होती हो।

३. जिस बात को तुम्हारा मन जानता है कि वह झूठ है, उसे कभी मत बोलो, क्योंकि झूठ बोलने से खुद तुम्हारी

अन्तरात्मा ही तुम्हे जलायगी ।

४. देखो, जिस मनुष्य का हृदय झूठ से पाक है, वह सब के दिलो पर हुकूमत करता है ।

५. जिसका मन सत्य मे निमग्न है, वह तपस्वी से भी महान् और दानी से भी श्रेष्ठ है ।

६. मनुष्य के लिए इससे बढ कर सुयश और कोई नही है कि लोगो मे उसकी प्रसिद्धि हो कि वह झूठ बोलना जानता ही नही । ऐसा पुरुष अपने शरीर को कष्ट दिये बिना ही सब तरह की नियामतो को पा जाता है ।

७. झूठ न बोलना, झूठ न बोलना--यदि मनुष्य इस धर्म का पालन कर सके तो उसे दूसरे धर्मों का पालन करने की ज़रूरत नही है ।*

८ शरीर की स्वच्छता का सम्बन्ध तो जल से है, मगर मन की पवित्रता सत्य-भाषण से ही सिद्ध होती है ।†

९ योग्य पुरुष सब तरह की रोशनी को रोशनी नही कहते, केवल सत्य की ज्योति को ही वे सच्चा प्रकाश मानते है ।

---

*Both should be of the same kind—

यह मूल का शब्दश अनुवाद है । ओ वी. बी एस अय्यर ने उसका अर्थ इस तरह किया है यदि मनुष्य बिना झूठ बोले रह सके तो उसके लिए और सब धर्म अनवाश्यक है ।

†अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्तिमन सत्येन शुद्ध्यति ।

मनु ।

१०. मैंने इस ससार मे बहुत सी चीजे देखी हैं, मगर मैने जो चीजें देखी है, उनमे सत्य से बढ कर उच्च और कोई चीज नही है ।

. २५

क्रोध न करना

१ जिसमे चोट पहुँचाने की शक्ति है उसीमे सहनशीलता का होना समझा जा सकता है । जिसमे शक्ति ही नही है, वह क्षमा करे या न करे, उससे किसी का क्या बिगडता है ?

२ अगर तुममे हानि पहुँचने की शक्ति न भी हो, तब भी गुस्सा करना बुरा है । मगर जब तुम मे शक्ति हो, तब तो गुस्से से बढ कर खराब बात और कोई नही है ।

३. तुम्हे नुकसान पहुँचाने वाला कोई भी हो, गुस्से को दूर कर दो, क्योंकि गुस्से से सैकडो बुराइयाँ पैदा होती है ।*

४ क्रोध हँसी की हत्या करता है और खुशी को नष्ट कर देता है । क्या क्रोध से बढ कर मनुष्य का और भी कोई भयानक शत्रु है ?

५. अगर तुम अपना भला चाहते हो, तो गुस्से से दूर

---

*गीता मे क्रोध-जनित, परिणामो का इस प्रकार वर्णन है—

क्रोधाद्भवति सम्मोह सम्मोहात्स्मृति विभ्रम ।
स्मृति भ्रशात बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात प्रणश्यति ॥

रहो; क्योंकि यदि तुम उससे दूर न रहोगे तो वह तुम्हे आ दबोचेगा और तुम्हारा सर्वनाश कर डालेगा ।

६. अग्नि उसी को जलाती है, जो उसके पास जाता है; मगर क्रोधाग्नि सारे कुटुम्ब को जला डालती है ।

७. जो गुस्से को इस तरह दिल मे रखता है, मानो वह कोई बहुमूल्य पदार्थ हो, वह उस मनुष्य के समान है, जो ज़ोर से ज़मीन पर अपना हाथ दे मारता है, इस आदमी के हाथ मे चोट लगे बिना नही रह सकती और पहले आदमी का सर्वनाश अवश्यम्भावी है ।

८ तुम्हे जो नुक्सान पहुँचा है वह तुम्हे भडकते हुए अङ्गारो की तरह जलाता भी हो तब भी बेहतर है कि तुम क्रोध से दूर रहो ।

९. मनुष्य की समस्त कामनाये तुरन्त ही पूर्ण हो जाया करें, यदि वह अपने मन से क्रोध को दूर कर दे ।

१०. जो गुस्से के मारे आपे से बाहर है, वह मुर्दे के समान है, मगर जिसने क्रोध को त्याग दिया है वह सन्तो के सामान है ।

: २६

अहिंसा

१. अहिंसा सब धर्मों मे श्रेष्ठ है । हिसा के पीछे हर तरह का पाप लगा रहता है ।

२. हाजतमन्द के साथ अपनी रोटी बाँट कर खाना और हिंसा से दूर रहना, यह सब पैगम्बरो के समस्त उपदेशों में श्रेष्ठतम उपदेश है।

३. अहिंसा सब धर्मों मे श्रेष्ठ धर्म है। सच्चाई का दर्जा उसके बाद है।*

४. नेक रास्ता कौनसा है ? यह वही मार्ग है, जिसमें इस बात का खयाल रक्खा जाता है कि छोटे जानवर को भी मरने से किस तरह बचाया जाय।

५ जिन लोगों ने इस पापमय सासारिक जीवन को त्याग दिया है उन सब मे मुख्य वह पुरुष है, जो हिंसा के पाप से डर कर अहिन्सा-मार्ग का अनुसरण करता है।

६. धन्य है वह पुरुष, जिसने अहिसा-व्रत धारण किया है। मौत जो सब जीवो को खा जाती है, उसके दिनो पर हमला नही करती।

* पीछे कह चुके है-सत्य से बढकर और कोई चीज नही है (परि० २८ पद १०)। पर यहा सत्य का दूसरा दर्जा बताया है। मनुष्य तल्लीन होकर जब किसी बात का ध्यान करता है तब वही बात उसे सबसे अधिक प्रिय मालूम पडती है। इससे कभी-कभी इस प्रकार का विरोधाभास उत्पन्न हो जाता है। यह मानव-स्वभाव का एक चमत्कार है।

लाला लाजपतरायजी ने अहिसा के बारे मे अपना विचार इस प्रकार प्रकट किया है—

Ahimsa is the highest religion but there is no religion higher than truth. Ahimsa and truth must be reconciled, in fact in essence they are one and the same.

७. तुम्हारी जान पर भी आ बने तब भी किसी की प्यारी जान मत लो ।

८. लोग कह सकते है कि बलि देने से बहुत सारी नियामते मिलती है, मगर पाक दिल वालो की दृष्टि मे वे नियामते जो हिंसा करने से मिलती है, जघन्य और घृणास्पद है ।

९ जिन लोगो का जीवन हत्या पर निर्भर है, समझदार लोगो की दृष्टि में, वे मुर्दाखोरो के समान है ।

१० देखो, वह आदमी जिसका सडा हुआ शरीर पीपदार जख्मो से भरा हुआ है, वह गुजरे जमाने मे खून बहाने वाला रहा होगा, ऐसा बुद्धिमान लोग कहते है ।

२७

सांसारिक चीज़ों की निस्सारता

१. उस मोह से बढ कर मूर्खता की और कोई बात नही है कि जिसके कारण अस्थायी पदार्थो को मनुष्य स्थिर और नित्य समझ बैठता है ।

२. धनोपार्जन करना तमाशा देखने के लिए हुई भीड के समान है और धन का क्षय उस भीड के तितर बितर हो जाने के समान है—अर्थात्, धन क्षणस्थायी है ।

३. समृद्धि क्षणस्थायी है । यदि तुम समृद्धिशाली हो गये हो तो ऐसे काम करने मे देर न करो, जिनसे स्थायी लाभ पहुँच सकता है ।

४. समय देखने मे भोलाभाला और बेगुनाह मालुम होता है, मगर वास्तव मे वह एक आरा है, जो मनुष्य के जीवन को बराबर काट रहा है ।

५ नेक काम करने मे जल्दी करो, ऐसा न हो कि ज़ुबान बन्द हो जाय और हिचकियाँ आने लगे ।

६ कल जो एक आदमी था, पर आज वह नही है । दुनिया मे यही एक अचरज की बात है ।*

७. आदमी को इस बात का तो पता नही है कि पल भर के बाद वह जीता भी रहेगा कि नही, मगर उसके खयालो को देखो तो वे करोडो की सख्या मे है ।

८ पर निकलते ही चिड़िया का बच्चा टूटे हुए अण्डे को छोड कर उड जाता है । शरीर और आत्मा की पारस्परिक मित्रता का यही नमूना है ।

९ मौत नीद के समान है और ज़िन्दगी उस नीद से जगाने के समान है ।

१० क्या आत्मा का अपना कोई खास घर नही है, जो वह इस वाहियात शरीर मे आश्रय लेता है ?

---

*'नासतो विद्यते भावो, नाभावो विद्यते सत'—गीता का यह मन्तव्य कुछ इसके विरुद्ध सा दिखाई पडा है । बात यह है—गीता ने किया है एक सूक्ष्म तत्त्व का तात्त्विक निदर्शन और यह है चर्म-चक्षुओ से दीखने वाले स्थूल प्रत्यक्ष का वर्णन ।

गीता मे मृत्यु को कपडे बदलने से उपमा दी है और रवीन्द्र बाबू ने उसे बालक को एक स्तन से हटा कर दूसरा स्तन पान कराने के समान कहा है ।

: २८ :

त्याग

१. मनुष्य ने जो चीज छोड दी है, उससे पैदा होने वाले दु:ख से उसने अपने को मुक्त कर लिया है।*

२. त्याग से अनेको प्रकारके सुख उत्पन्न होते है, इसलिए अगर तुम उन्हें अधिक समय तक भोगना चाहो तो शीघ्र त्याग करो।

---

*वाञ्छित वस्तु को प्राप्त करने की चिन्ता, खोजाने की आशका और न मिलने से निराशा तथा भोगाधिक्य से जो दु:ख होते है, उनसे वह बचा हुआ है।

इन्द्रिय-दमन तथा तप और सयम का यही सच्चा मार्ग है। यह एक तरह की कसरत है, जिससे मन को साधा जा सकता है। बी अम्मा की चौलाई वाली कहानी इसका सरल-सुन्दर उदाहरण है। उन्हे चौलाई का शाक बहुत पसन्द था। एक रोज़ बडे प्रेम से उन्होने शाक बनाया, किन्तु तैयार हो जाने पर उन्होने खाने से इन्कार कर दिया। जब कारण पूछा गया तो कहा—आज मेरा मन इस चौलाई की भाजी मे बहुत लग गया है। मै सोचती हूँ, यदि मै अपने को वासना के वशीभूत हो जाने दूगी और कल कही दूसरे पति की इच्छा हुई तब मैं क्या करूगी ?

भोग भोगकर शान्ति-लाभ करने की बात कोरी विडम्बनामात्र है। एक तो 'हविषा कृष्ण वर्त्मेव भूयएवाभिवर्द्धते' इस कल्पनानुसार तृष्णा बढती ही जाती है। दूसरे, थके हुए वृद्ध घोड़े को निकालने से लाभ ही क्या ? जब इन्द्रियो मे बल है और शरीर मे स्फूर्ति है तभी उन्हे सयम से कसकर सन्मार्ग मे लगाने की आवश्यकता है। यहा इन्द्रियो को सयम और अनुशासन द्वारा अधिक सक्षम बनाने ही के लिए यह आदेश है, उन्हे सुखा कर मार डालने के लिए नही !

३. अपनी पाँचो इन्द्रियो का दमन करो और जिन चीजो से तुम्हें सुख मिलता है उन्हे बिलकुल ही त्याग दो।

४. अपने पास कुछ भी न रखना, यही व्रत-धारी का नियम है। एक चीज को भी अपने पास रखना मानो उन बन्धनो मे फिर आ फँसना है, जिन्हे मनुष्य एक बार छोड चुका है।

५. जो लोग पुनर्जन्म के चक्र को बन्द करना चाहते है, उनके लिये यह शरीर भी अनावश्यक है। फिर भला अन्य बन्धन कितने अनावश्यक होगे ?*

६. "मै" और "मेरे" के जो भाव है, वे घमण्ड और खुदनुमाई के अतिरिक्त और कुछ नही है। जो मनुष्य उनका दमन कर लेता है, वह देवलोक से भी उच्च लोक को प्राप्त होता है।

७. देखो, जो मनुष्य लालच मे फँसा हुआ है और उससे निकलना नही चाहता, उसे दु:ख आ कर घेर लेगा और फिर मुक्त न करेगा।

८. जिन लोगो ने सब कुछ त्याग दिया है, वे मुक्ति के मार्ग मे है, मगर बाकी सब मोह-जाल मे फँसे हुए है।

९. ज्योही लोभ-मोह दूर हो जाते है, उसी दम पुनर्जन्म बन्द हो जाता है, जो मनुष्य इन बन्धनो को नही काटते, वे भ्रम-जाल मे फँसे रहते है।

१०. उसी ईश्वर की शरण में जाओ कि जिसने सब

---

* माया, मोह और अविद्या।

मोहों को छिन्न-भिन्न कर दिया है। और उसी का आश्रय लो जिससे सब बन्धन टूट जायँ ।

: २९ :

सत्य का आस्वादन

१ मिथ्या और अनित्य पदार्थों को सत्य समझने के भ्रम से ही मनुष्य को दुःखमय जीवन भोगना पडता है ।

२. देखो, जो मनुष्य भ्रमात्मक भावों से मुक्त है और जिसकी दृष्टि स्वच्छ है, उसके लिए दु ख और अन्धकार का अन्त हो जाता है और आनन्द उसे प्राप्त होता है ।

३. जिसने अनिश्चित बातो से अपने को मुक्त कर लिया है और जिसने सत्य को पा लिया है उसके लिए स्वर्ग पृथ्वी से भी अधिक समीप है ।

४. मनुष्य जैसी उच्च योनि को प्राप्त कर लेने से भी कोई लाभ नहीं, अगर आत्मा ने सत्य का आस्वादन नही किया ।

५ कोई भी बात हो, उसमे सत्य को झूठ से पृथक् कर देना ही मेधा का कर्तव्य है ।

६. वह पुरुष धन्य है, जिसने गम्भीरतापूर्वक स्वाध्याय किया है और सत्य को पा लिया है; वह ऐसे रास्ते से चलेगा, जिससे फिर उसे इस दुनिया मे आना न पड़ेगा ।

७. नि सन्देह जिन लोगो ने ध्यान और धारणा के द्वारा

सत्य को पा लिया है, उन्हें भावी जन्मों का खयाल करने की जरूरत नही है ।*

८ जन्मो की जननी अविद्या से छुटकारा पाना और सच्चिदानन्द को प्राप्त करने की चेष्टा करना ही बुद्धिमानी है ।

९. देखो, जो पुरुष मुक्ति के साधनों को जानता है और सब मोहो के जीतने का प्रयत्न करता है , भविष्य में आने वाले सब दुःख उससे दूर हो जाते है ।

१०. काम, क्रोध और मोह ज्यो-ज्यों मनुष्य को छोड़ते जाते है, दुःख भी उनका अनुसरण करके धीरे धीरे नष्ट हो जाते है ।

: ३० :

कामना का दमन

१. कामना एक बीज है, जो प्रत्येक आत्मा को सर्वदा ही अनवरत–कभी न चूकने वाले–जन्मो की फसल प्रदान करता है ।

२ यदि तुम्हे किसी बात की कामना करना ही है, तो जन्मों के चक्र से छुटकारा पाने की कामना करो, और वह छुटकारा तभी मिलेगा, जब तुम कामना को जीतने की कामना करोगे ।

* अथवा जिन्होने विमर्षण और मनन के द्वारा सत्य को पा लिया है उनके लिए पुनर्जन्म नही है ।

३. निष्कामना से बढ कर यहाँ मर्त्यलोक मे दूसरी और कोई सम्पत्ति नही है और तुम स्वर्ग मे भी जाओ तो भी तुम्हें ऐसा खजाना न मिल सकेगा, जो उसका मुक़ाबला करे।

४. कामना से मुक्त होने के सिवाय पवित्रता और कुछ नही है। और यह मुक्ति पूर्ण सत्य की इच्छा करने से ही मिलती है।

५ वही लोग मुक्त है, जिन्होने अपनी इच्छाओं को जीत लिया है, बाकी लोग देखने मे स्वतन्त्र मालूम पड़ते है, मगर वास्तव मे वे बन्धन से जकडे हुए है।

६ यदि तुम नेकी को चाहते हो, तो कामना से दूर रहो, क्योंकि कामना जाल और निराशा मात्र है।

७ यदि कोई मनुष्य अपनी समस्त वासनाओ को सर्वथा त्याग दे, तो जिस राह से आने की वह आज्ञा देता है, मुक्ति उधर ही से आकर उससे मिलती है।

८. जो किसी बात की कामना नही करता, उसको कोई दु:ख नही होता, मगर जो चीजो को पाने के लिए मारा-मारा फिरता है, उसपर आफत पर आफत पडती है।

९. यहाँ भी मनुष्य को स्थायी सुख प्राप्त हो सकता है, बशर्ते कि वह अपनी इच्छा का ध्वस कर डाले, जो कि सबसे बडी आपत्ति है।

१०. इच्छा कभी तृप्त नही होती, किन्तु यदि कोई मनुष्य उसको त्याग दे, तो वह उसी दम सम्पूर्णता को प्राप्त कर लेता है।

: ३१ :

भवितव्यता—होनी

१. मनुष्य दृढ-प्रतिज्ञ हो जाता है जब, भाग्य-लक्ष्मी उस पर प्रसन्न हो कर कृपा करना चाहती है। मगर मनुष्य मे शिथिलता आ जाती है, जब भाग्य-लक्ष्मी उसे छोड़ने को होती है।

२. दुर्भाग्य शक्तियो को मन्द कर देता है, मगर जब भाग्य-लक्ष्मी कृपा दिखाना चाहती है तो वह पहले बुद्धि को विस्फूर्ति कर देती है।

३. ज्ञान और सब तरह की चतुरता से क्या लाभ ? अन्दर जो आत्मा है उसका ही प्रभाव सर्वोपरि है।

४. दुनिया मे दो चीजे है, जो एक दूसरे से बिलकुल नही मिलती। धन-सम्पत्ति एक चीज है और साधुता तथा पवित्रता बिलकुल दूसरी चीज।*

५ जब किसी के दिन बुरे होते है तो भलाई भी बुराई मे बदल जाती है, मगर जब दिन फिरते है तो बुरी चीजे भी भली हो जाती है।

६ भवितव्यता जिस बात को नही चाहती, उसे तुम अत्यन्त चेष्टा करने पर भी नही रख सकते; और जो चीज़े

---

* सुई के नकुए में से ऊट का निकल जाना तो सरल है, पर धनिक पुरुष का स्वर्ग मे प्रवेश करना असम्भव है। —क्राइस्ट

तुम्हारी हैं – तुम्हारे भाग्य में बदी हैं – उन्हें तुम इधर उधर फेंक भी दो, फिर भी वे तुम्हारे पास से नही जावेंगी।

७. उस महान शासक की आज्ञा के विपरीत करोड़पति भी अपनी सम्पत्ति का ज़रा भी उपभोग नही कर सकता।

८. गरीब लोग नि सन्देह अपने दिल को त्याग की ओर झुकाना चाहते हैं, किन्तु भवितव्यता उनके उन दु:खों के लिए रख छोडती है, जो उन्हे भाग्य मे बदे हैं।*

९. अपना भला देख कर जो मनुष्य खुश होता है, उसे आपत्ति आने पर क्यों दु:खी होना चाहिये ?

१०. होनी से बढकर बलवान और कौन है ? क्योंकि उसका शिकार जिस वक़्त उसे पराजित करने की तरकीब सोचता है, उसी वक्त वह पेशकदमी करके उसे नीचा दिखाती है।

* 'मज़े हमने उड़ाये हैं, मुसीबत कौन झेलेगा ?' जो सुख मानता है, उसे दु:ख भी भोगना ही होगा। सुख दु:ख तो एक दूसरे का पीछा करने वाले द्वन्द्व हैं।

अर्थ

: १ :

राजा के गुण

१ जिसके पास सेना, आबादी, धन, मन्त्री, सहायक मित्र और दुर्ग—ये छ. चीज़ें यथेष्ट रूप से है, वह राजाओं मे शेर है ।

२ राजा मे साहस, उदारता, बुद्धिमानी और कार्य-शक्ति---इन बातों का कभी अभाव नही होना चाहिये ।

३. जो पुरुष दुनिया मे हुकूमत करने के लिए पैदा हुए है, उन्हे चौकसी, जानकारी और निश्चय बुद्धि --- ये तीनो खूबियाँ कभी नही छोड़ती ।

४. राजा को धर्म करने मे कभी न चूकना चाहिए और अधर्म को दूर करना चाहिए । उसे ईर्ष्या-पूर्वक अपनी इज्ज़त की रक्षा करनी चाहिए, मगर वीरता के नियमों के विरुद्ध दुराचरण कभी न करना चाहिए ।

५. राजा को इस बात का ज्ञान रखना चाहिए कि अपने राज्य के साधनों की विस्फूर्ति और वृद्धि किस तरह की जाय और ख़जाने को किस प्रकार पूर्ण किया जाय, धन की रक्षा किस तरह की जाय; और किस प्रकार , समुचित रूप से उसका खर्च किया जाय ।

६ यदि समस्त प्रजा की पहुँच राजा तक हो और राजा कभी कठोर वचन न बोले, तो उसका राज्य सबसे ऊपर रहेगा।

७. देखो, जो राजा खूबी के साथ दान दे सकता है और प्रेम के साथ शासन करता है, उसका नाम सारी दुनिया मे फैल जायगा।

८ धन्य है वह राजा, जो निष्पक्षपात-पूर्वक न्याय करता है और अपनी प्रजा की रक्षा करता है। वह मनुष्यो मे देवता समझा जायगा।

९ देखो, जिस राजा मे कानो को अप्रिय लगने वाले वचनों को सहन करने का गुण है, ससार निरन्तर उसकी छत्र-छाया मे रहेगा।

१० जो राजा उदार, दयालु और न्यायनिष्ठ है और जो अपनी प्रजा की प्रेम-पूर्वक सेवा करता है, वह राजाओ के मध्य मे ज्योतिस्वरूप है।

२

शिक्षा

१ प्राप्त करने योग्य जो ज्ञान है, उसे सम्पूर्ण रूप से प्राप्त करना चाहिए और उसे प्राप्त करने के पश्चात् उसके अनुसार व्यवहार करना चाहिए।

२. मानव-जाति की जीती-जागती दो आँखे है। एक को अंक कहते है और दूसरी को अक्षर।

३. शिक्षित लोग ही आँख वाले कहलाये जा सकते हैं, अशिक्षितों के सिर मे तो केवल दो गड्ढे होते है ।

४. विद्वान जहाँ कही भी जाता है अपने साथ आनन्द ले जाता है, लेकिन जब वह विदा होता है तो पीछे दु.ख छोड़ जाता है ।

५ चाहे तुम्हे गुरू या शिक्षक के सामने उतना ही अपमानित और नीचा बनना पड़े, जितना कि एक भिक्षुक को धनवान के समक्ष बनना पडता है, फिर भी तुम विद्या सीखो, मनुष्यो मे अधम वही लोग है, जो विद्या सीखने से इन्कार करते है ।

६. सोते को तुम जितना ही खोदोगे, उतना ही अधिक पानी निकलेगा, ठीक इसी तरह तुम जितना ही अधिक सीखोगे, उतनी ही तुम्हारी विद्या मे वृद्धि होगी ।

७. विद्वान के लिए सभी जगह उसका घर है और सभी जगह उसका स्वदेश है । फिर लोग मरने के दिन तक विद्या-प्राप्त करते रहने मे लापर्वाही क्यो करते है ?

८. मनुष्य ने एक जन्म मे जो विद्या प्राप्त कर ली है, वह उसे समस्त आगामी जन्मो मे भी उच्च और उन्नत बना देगी ।

९ विद्वान देखता है कि जो विद्या उसे आनन्द देती है, वह ससार को भी आनन्दप्रद होती है और इसीलिए वह विद्या को और भी अधिक चाहता है ।

१०. विद्या मनुष्य के लिए एक दोष-त्रुटि-हीन और अविनाशी निधि है। उसके सामने दूसरी तरह की दौलत कुछ भी नहीं है।

: ३ :

बुद्धिमानों के उपदेश को सुनना

१. सबसे अधिक बहुमूल्य खजानों मे कानों का ख़जाना है। निःसन्देह वह सब प्रकार की सम्पत्ति से श्रेष्ठ है।

२. जब कानो को देने के लिए भोजन न रहेगा तो पेट के लिए भी कुछ भोजन दे दिया जायगा।*

३. देखो, जिन लोगों ने बहुत से उपदेशों को सुना है, वे पृथ्वी पर देवता-स्वरूप है।

४. यद्यपि किसी मनुष्य मे शिक्षा न हो, फिर भी उसे उपदेश सुनने दो, क्योंकि जब उसके ऊपर मुसीबत पड़ेगी, तब उनसे ही उसे कुछ सान्त्वना मिलेगी।

५. धर्मात्मा लोगों की नसीहत एक मज़बूत लाठी की तरह है; क्योंकि जो उसके अनुसार काम करते हैं, उन्हे वह गिरने से बचाती है।

६. अच्छे शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनो, चाहे वे थोड़े से ही

* अर्थात् जब तक सुनने के लिए उपदेश हो तबतक भोजन का खयाल ही न करना चाहिए।

क्यो न हों, क्योंकि वे थोड़े से शब्द भी तुम्हारी शान में मुनासिब तरक्की करेंगे ।

७. देखो, जिस पुरुष ने खूब मनन किया है और बुद्धिमानो के वचनों को सुन-सुनकर अनेक उपदेशों को जमा कर लिया है; वह भूल से भी कभी निरर्थक वाहियात बातें नही करता ।

८. सुन सकने पर भी वह कान बहरा है, जिसे उपदेशो के सुनने का अभ्यास नही है ।

९. जिन लोगों ने बुद्धिमानों के चातुरी-भरे शब्दों को नही सुना है, उनके लिए वक्तृता की नम्रता प्राप्त करना कठिन है ।

१०. जो लोग जबान से तो चखते है मगर कानो के स्वास्थ्य से अनभिज्ञ है, वे चाहे जिये या मरे; इससे दुनिया का क्या आता-जाता है ?

: ४ :

बुद्धि

१. बुद्धि समस्त अचानक आक्रमणों को रोकने वाला कवच है । वह ऐसा दुर्ग है, जिसे दुश्मन भी घेर कर नही जीत सकते ।

२. यह बुद्धि ही है जो इन्द्रियों को इधर-उधर भटकाने से रोकती है, उन्हे बुराई से दूर रखती है और नेकी की ओर प्रेरित करती है ।

३. समझदार बुद्धि का काम है कि हर एक बात मे झूठ को सत्य से निकालकर अलहदा कर दे, फिर उस बात का कहने वाला कोई भी क्यो न हो ।

४ बुद्धिमान मनुष्य जो कुछ कहता है, इस तरह से कहता है कि उसे सब कोई समझ सके, और दूसरो के मुँह से निकले हुए शब्दो के आन्तरिक भाव को वह समझ लेता है।

५ बुद्धिमान पुरुष सारी दुनियाँ के साथ मिलनसारी से पेश आता है और उसका मिजाज हमेशा एक-सा रहता है । उसकी मित्रता न तो पहले बेहद बढ जाती है, और न एकदम घट जाती है ।

६ यह भी एक बुद्धिमानी का काम है कि मनुष्य लोक-रीति के अनुसार व्यवहार करे ?*

७ समझदार आदमी पहले ही से जान जाता है कि क्या होने वाला है, मगर मूर्ख आगे आने वाली बातो को

---

* यद्यपि शुद्ध लोक-विरुद्ध नाचरणीयम् नाचरणीयम् । साधारण स्थिति मे साधारण लोगो के लिए यह उचित हो सकता है, और प्राय लोग इसी नियम का अनुसरण करते है । किन्तु जिनकी आत्मा बलवती है, जिनके हृदय मे जोश है, और जो दुनिया के पीछे न घिसटे जाकर उसे आदर्श की ओर ले जाना चाहते है, वे आपत्तियो को ललकार कर आगे बढते है । हद से बढी हुई दुनियादारी मे चिढ कर ही कोई हिन्दी कवि कह गये है—

लीक लीक गाडी चलै, लीकहि चलै कपूत ।
लीक छाडि तीनो चलै, सायर-सिंह-सपूत ॥

नही देख सकता ।

८. खतरे की जगह बेतहाशा दौड़ पड़ना बेवकूफ़ी है, बुद्धिमानों का यह भी एक काम है कि जिससे डरना ही चाहिए, उससे डरे ।*

९. जो दूरन्देश आदमी हर एक मौक़े के लिए पहले ही से तैयार रहता है, वह उस वार से बचा रहेगा, जो कँपकँपी पैदा करता है ।†

१०. जिसके पास बुद्धि है, उसके पास सब-कुछ है, मगर मूर्ख के पास सब-कुछ होने पर भी कुछ नही है ।‡

: ५ :

दोषों को दूर करना

१. जो मनुष्य दर्प, क्रोध और विषय-लालसाओं से रहित है, उसमें एक प्रकार का गौरव रहता है, जो उसके सौभाग्य को भूषित करता है ।

---

* Fools rush in where angels fear to tread.

† दूरदर्शी पुरुष पहले ही से आने वाली आपत्ति का निराकरण कर देता है ।

‡ 'यस्य बुद्धि बल तस्य, निर्बुद्धस्तु कुती बलम् ।'

२. कन्जूसी, अहङ्कार और बेहद ऐयाशी–ये राजा मे विशेष दोष होते है ।*

३. देखो, जिन लोगों को अपनी कीर्ति प्यारी है, वे अपने दोष को राई के समान छोटा होने पर भी ताड के वृक्ष के बराबर समझते है ।

४. अपने को बुराइयो से बचाने मे सदा सचेत रहो, क्योकि वे ऐसी दुश्मन है, जो तुम्हारा सर्वनाश कर डालेगी ।

५. जो आदमी अचानक आ पड़ने वाली मुसीबत के लिए पहले ही से तैयार नही रहता है, वह ठीक उसी तरह नष्ट हो जायगा, जिस तरह आगके अंगारे के सामने फूस का ढेर ।

६ राजा यदि पहले अपने दोषो को सुधार कर तब दूसरो के दोषो को देखे तो फिर कौन सी बुराई उसको छू सकती है ?

७ खेद है उस कन्जूस पर, जो व्यय करने की जगह व्यय नही करता, उसकी दौलत बुरी तरह बरबाद होगी ।

८. कन्जूस, मक्खीचूस होना ऐसा दुर्गुण नही है, जिसकी गिनती दूसरी बुराइयो के साथ की जा सके, उसका दर्जा ही

---

* यदि राजा मे ये दोष होते है तो उसके लिए वे विशेष रूप से भयकर सिद्ध होते है और उसके पतन का कारण बन जाते है । पिछले दो दोष तो मानो सम्पत्ति की स्वाभाविक सन्तान है । बाहर शत्रुओ की तरह इन अधिक प्रबल आन्तरिक शत्रुओ से बुद्धिमान और उन्नतिशील राजा को सदा सावधान रहना चाहिए ।

बिलकुल अलग है ।*

९ किसी वक्त और किसी बात पर फूल कर आपे से बाहर मत हो जाओ, और ऐसे कामो मे हाथ न डालो, जिनसे तुम्हे कुछ लाभ न हो ।

१०. तुम्हे जिन बातो का शौक है, उनका पता अगर तुम दुश्मनो को न चलने दोगे तो तुम्हारे दुश्मनों की साजिशे बेकार साबित होगी ।†

. ९

योग्य पुरुषों की मित्रता

१. जो लोग धर्म करते-करते बुढ्ढे हो गये है, उनकी तुम इज्जत करो, उनकी दोस्ती हासिल करने की कोशिश करो ।

२. तुम जिन मुश्किलो मे फंसे हुए हो, उनको जो लोग दूर कर सकते है और आने वाली बुराइयो से तुम्हे बचा सकते है, उत्साह-पूर्वक उनकी मित्रता को प्राप्त करने की चेष्टा करो ।

---

* अर्थात् कृपणता साधारण नही असाधारण दुर्गुण है ।

† दुश्मन को यदि मालूम हो जाय कि राजा मे ये निर्बलतायें है अथवा उसे इन बातो से प्रेम है, तो वह आसानी से राजा को वश मे कर ले सकता है ।

३. अगर किसी को योग्य पुरुषों की प्रीति और भक्ति मिल जाय, तो वह महान् से महान् सौभाग्य की बात है।

४. जो लोग तुमसे अधिक योग्यता वाले है वे यदि तुम्हारे मित्र बन गये है, तो तुमने ऐसी शक्ति प्राप्त कर ली है कि जिसके सामने अन्य सब शक्तियाँ तुच्छ है।

५ चूँकि मन्त्री ही राजा की आँखे है, इसलिए उनके चुनने मे बहुत ही समझदारी और होशियारी से काम लेना चाहिए।

६ जो लोग सुयोग्य पुरुषो के साथ मित्रता का व्यवहार रख सकते है, उनके बैरी उनका कुछ बिगाड न सकेंगे।

७ जिस आदमी को ऐसे लोगो की मित्रता का गौरव प्राप्त है कि जो उसे डाट-फटकार सकते है, उसे नुक्सान पहुँचाने वाला कौन है ?*

८ जो राजा ऐसे पुरुषो की सहायता पर निर्भर नही रहता कि जो वक्त पड़ने पर उसको झिडक सके, दुश्मनो के न रहने पर भी उसका नाश होना अवश्यम्भावी है।

९ जिनके पास मूल धन नही है, उनको लाभ नही मिल सकता, ठीक इसी तरह पायदारी उन लोगो को नसीब

---

* नरेश प्राय खुशामद-पसन्द होते है और वैभवशाली मनुष्य के लिए खुशामदियो की कमी भी नही रहती। ऐसी अवस्था मे स्पष्ट बात कह कर सन्मार्ग दिखाने वाला मनुष्य सौभाग्य से मिलता है। राजस्थान के नरेश यदि इसपर ध्यान दे तो वे बहुत सी कटुता से बचे रहे।

नही होती कि जो बुद्धिमानो की अविकल सहायता पर निर्भर नही रहते ।

१०. ढेर के ढेर लोगों को दुश्मन बना लेना मूर्खता है, किन्तु नेक लोगो की दोस्ती को छोड़ना उससे भी कही ज्यादा बुरा है ।

: ७ :

कुसङ्ग से दूर रहना

१. लायक लोग बुरी सोहबत से डरते है, मगर छोटी तबियत के आदमी बुरे लोगो से इस तरह मिलते-जुलते है, मानो वे उनके ही कुटुम्बवाले है ।

२. पानी का गुण बदल जाता है—वह जैसी जमीन पर बहता है वैसा ही गुण उसका हो जाता है—इसी तरह जैसी सङ्गत होती है, उसी तरह का असर पडता है ।

३ आदमी की बुद्धि का सम्बन्ध तो दिमाग से है, मगर उसकी नेकनामी का दारोमदार उन लोगो पर है, जिनकी सोहबत मे वह रहता है ।

४. मालूम ऐसा होता है कि मनुष्य का स्वभाव उसके मनमे रहता है, किन्तु वास्तव मे उसका निवासस्थान उस गोष्टी मे है कि जिसकी वह सङ्गत करता है ।

५. मन की पवित्रता और कर्म की पवित्रता आदमी की सङ्गत की पवित्रता पर निर्भर है ।

६ पाक दिल आदमी की औलाद नेक होगी, और जिनकी सगत अच्छी है, वे हर तरह से फलते-फूलते है।

७. मनकी पवित्रता आदमी के लिए खजाना है, और अच्छी सगत उसे हर तरह का गौरव प्रदान करती है।

८ बुद्धिमान यद्यपि स्वयमेव सर्व-गुण-सम्पन्न होते है, फिर भी वे पवित्र पुरुषो के सुसग को शक्ति का स्तम्भ समझते है।

९. धर्म मनुष्य को स्वर्ग ले जाता है और सत्पुरुषो की सगत मनुष्य को धर्माचरण मे रत करती है।

१० अच्छी सगत से बढ कर आदमी का सहायक और कोई नही है। और कोई भी चीज इतनी हानि नही पहुचाती, जितनी कि बुरी सगत।

८ :

काम करने से पहले सोच-विचार लेना

१ पहले यह देख लो कि इस काम मे कितनी लागत-लगेगी, कितना माल खराब जायगा, और मुनाफा इसमे कितना होगा, फिर तब उस काम मे हाथ डालो।

२ देखो, जो राजा सुयोग्य पुरुषो से सलाह करने के बाद ही किसी काम के करने का फैसला करता है, उसके लिए ऐसी कोई बात नही है, जो असम्भव हो।

३. ऐसे भी उद्योग है, जो मुनाफे का सब्ज़बाग दिखा कर अन्त मे मूल-धन-असल-तक को नष्ट कर देते है, बुद्धिमान लोग उनमे हाथ नही लगाते ।

४. देखो, जो लोग नही चाहते कि दूसरे आदमी उनपर हँसे, वे पहले अच्छी तरह से गौर किये बिना कोई काम शुरू नही करते ।

५. सब बातो की अच्छी तरह पेशबन्दी किये बिना ही लडाई छेड देने का अर्थ यह है कि तुम दुश्मन को खूब तैयार की हुई जमीन पर लाकर खडा कर देते हो ।

६. कुछ काम ऐसे है कि जिन्हे नही करना चाहिये और अगर तुम करोगे तो नष्ट हो जाओगे, और कुछ काम ऐसे है कि जिन्हे करना ही चाहिए और अगर उन्हे तुम न करोगे तो भी नष्ट हो जाओगे ।

७ खूब अच्छी तरह सोचे बिना किसी काम के करने का निश्चय मत करो, वह मूर्ख है, जो काम शुरू कर देता है और मन मे कहता है कि बाद मे सोच लेगे ।

८. देखो, जो आदमी ठीक रास्ते से काम नही करता उसकी सारी मेहनत अकारथ जायगी उसकी मदद करने के लिए चाहे कितने ही आदमी क्यो न आयें ।

९. जिसके साथ तुम उपकार करना चाहते हो, उसके स्वभाव का यदि तुम खयाल न रक्खोगे, तो तुम भलाई करने मे भी भूल कर सकते हो ।

१०. तुम जो काम करना चाहते हो, वह सर्वथा अनिन्द्य होना चाहिए, क्योंकि दुनिया में उसकी बेकदरी होती है, जो अपने अयोग्य काम करने पर उतारू हो जाता है।

९

शक्ति का विचार

१. जिस काम को तुम उठाना चाहते हो, उसमें जो मुश्किलें हैं, उन्हें अच्छी तरह देख-भाल लो, उसके बाद अपनी शक्ति, अपने विरोधी की शक्ति तथा अपने तथा विरोधी के सहायको की शक्ति का विचार करलो और तब तुम उस काम को शुरू करो।

२ जो अपनी शक्ति को जानता है, और जो कुछ उसे सीखना चाहिए वह सीख चुका है, और जो अपनी शक्ति और ज्ञान की सीमा के बाहर कदम नही रखता, उसके आक्रमण कभी व्यर्थ नही जायँगे।

३. ऐसे बहुत से राजा हुए, जिन्होंने जोश में आकर अपनी शक्ति को अधिक समझा और काम शुरू कर बैठे, पर बीच में ही उनका काम तमाम हो गया।

४ जो आदमी शान्तिपूर्वक रहना नही जानते, जो अपने बलाबल का ज्ञान नही रखते, और जो घमण्ड में चूर रहते है, उनका शीघ्र ही अन्त होता है।

५. हद से ज्यादा तादाद में रखने से मोर-पंख भी गाडी की धुरी तोड डालेंगे।

६. जो लोग वृक्ष की चोटी तक पहुँच गये है, वे यदि अधिक ऊपर चढने की चेष्टा करेंगे, तो अपने प्राण गँवायेंगे।

७. तुम्हारे पास कितना धन है, इस बात का खयाल रक्खो और उसके अनुसार ही तुम दान-दक्षिणा दो, योग-क्षेम का बस यही तरीका है ।

८. भरने वाली नाली अगर तग है तो कोई पर्वाह नही, बशर्ते कि खाली करने वाली नाली ज्यादा चौडी न हो ।

९ जो आदमी अपने धन का हिसाब नही रखता और न अपनी सामर्थ्य को देख कर काम करता है, वह देखने में खुशहाल भले ही मालूम हो, मगर वह इस तरह नष्ट होगा कि उसका नामोनिशान तक न रहेगा ।

१०. जो आदमी अपने धन का खयाल न रख कर खुले हाथो उसे लुटाता है, उसकी सम्पत्ति शीघ्र ही समाप्त हो जायगी ।

१० :

अवसर का विचार

१. दिन मे कौआ उल्लू पर विजय पाता है; जो राजा अपने दुश्मनो को हराना चाहता है, उसके लिए अवसर एक बडी चीज है ।

२ हमेशा वक्त को देख कर काम करना, यह एक ऐसी डोरी है, जो सौभाग्य को मजबूती के साथ तुमसे आबद्ध कर देगी ।

३. अगर ठीक मौके और साधनो का खयाल रख कर काम करो और समुचित साधनो को उपयोग मे लाओ, तो ऐसी कौनसी बात है कि जो असम्भव हो ?

४. अगर तुम मुनासिब मौके और उचित साधनों को चुनो तो तुम सारी दुनिया को जीत सकते हो ।

५ जिनके हृदय मे विजय-कामना है, वे चुपचाप मौका देखते रहते है, वे न तो गडबडाते है, और न जल्दबाजी करते है ।

६ चकनाचूर कर देने वाली चोट लगाने के पहले मेढा एक दफे पीछे हट जाता है, कर्मवीर की निष्कर्मण्यता भी ठीक इसी तरह की होती है ।

७. बुद्धिमान लोग उसी समय अपने गुस्से को प्रकट नही कर देते. वे उसको दिल ही मे रखते है, और अवसर की ताक मे रहते है ।

८ अपने दुश्मन के सामने झुक जाओ, जबतक उसकी अवनति का दिन नही आता । जब वह दिन आयगा, तो तुम आसानी के साथ उसे सिर के बल नीचे फेक दे सकोगे ।

९ जब तुम्हे असाधारण अवसर मिले, तो तुम हिचकिचाओ मत, बल्कि एकदम काम मे जुट जाओ, फिर चाहे वह असम्भव ही क्यो न हो ।

१० जब समय तुम्हारे विरुद्ध हो, तो सारस की तरह निष्कर्मण्यता का बहाना करो, लेकिन जब वक्त आवे तो सारस की तरह, तेजी के साथ, झपट कर हमला करो ।

---

*अगर तुम्हे असाधारण अवसर मिल जावे तो फौरन् दुस्साध्य काम को कर डालो ।

: ११ :

स्थान का विचार

१ कार्यक्षेत्र की अच्छी तरह जाँच किये बिना लडाई न छेडो, और न कोई काम शुरू करो। दुश्मन को छोटा मत समझो।

२. दुर्गवेष्ठित स्थान पर खडा होना शक्तिशाली और बलवान के लिए भी अत्यन्त लाभदायक है।

३ यदि समुचित स्थान को चुन ले और होशियारी के साथ युद्ध करे, तो दुर्बल भी अपनी रक्षा करके शक्तिशाली शत्रु को जीत सकते है।

४. अगर तुम सुदृढ स्थान पर जम कर खडे हो और वहाँ डटे रहो, तो तुम्हारे दुश्मन की सब युक्तियाँ निष्फल सिद्ध होगी।

५. मगर पानी के अन्दर सर्व शक्तिशाली है, किन्तु बाहर निकलने पर वह दुश्मनो के हाथ का खिलौना है।

६ मजबूत पहियो वाला रथ समुद्र के ऊपर नही दौडता है, और न सागर-गामी जहाज खुश्क जमीन पर तैरता है।

७ देखो, जो राजा सब कुछ पहले ही से तय कर रखता है और समुचित स्थान पर आक्रमण करता है, उसको अपने बल के अतिरिक्त दूसरे सहायको की आवश्यक्ता नही है।

८. जिसकी सेना निर्बल है, वह राजा यदि रणक्षेत्र के समुचित भाग मे जाकर खडा हो, तो उसके शत्रुओं की सारी चेष्टाये व्यर्थ सिद्ध होगी ।

९ अगर रक्षा का सामान और अन्य साधन न भी हो, तो भी किसी जाति को उसके देश मे हराना मुश्किल है ।

१०. देखो, उस मस्त हाथी ने, पलक मारे बिना, भाले-बरदारो की सारी फौज का मुकाबला किया, लेकिन जब वह दलदली जमीन मे फँस जायगा, तो एक गीदड भी उसके ऊपर फतह पा लेगा ।

१२

परीक्षा करके विश्वस्त मनुष्यों को चुनना

१ धर्म, अर्थ, काम और प्राणो का भय—ये चार कसौटियाँ है जिन पर कस कर मनुष्य को चुनना चाहिए ।

२. जो अच्छे कुल मे उत्पन्न हुआ है, जो दोषो से रहित है, और जो बेइज्जती से डरता है, वही मनुष्य तुम्हारे लिए है ।

३ जब तुम परीक्षा करोगे तो, देखोगे कि अत्यन्त ज्ञानवान और शुद्ध मनवाले लोग भी हर तरह की अज्ञानता से सर्वथा रहित न मिलेंगे ।

४ मनुष्य की भलाइयो को देखो और फिर उसकी बुराइयो पर नजर डालो, इनमे जो अधिक है, बस समझ लो कि वैसा ही उसका स्वभाव है।

५ क्या तुम यह जानना चाहते हो कि अमुक मनुष्य उदार-चित्त है या क्षुद्र-हृदय ? याद रक्खो कि आचार-व्यवहार चरित्र की कसौटी है।

६. सावधान ! उन लोगो का विश्वास देखभाल कर करना कि जिनके आगे-पीछे कोई नही है, क्योंकि उन लोगो के दिल ममता-हीन और लज्जा-रहित होंगे।

७ यदि तुम किसी मूर्ख को अपना विश्वासपात्र बनाना चाहते हो, सिर्फ इसलिए कि तुम उसे प्यार करते हो, तो याद रक्खो कि वह तुम्हे अनन्त मूर्खताओ मे ला पटकेगा।

८ देखो, जो आदमी परीक्षा लिए बिना ही दूसरे मनुष्य का विश्वास करता है, वह अपनी सन्तति के लिए अनेक आपत्तियो का बीज बो रहा है।

९ परीक्षा किये बिना किसी का विश्वास न करो; और अपने आदमियो की परीक्षा लेने के बाद हर एक को उसके लायक काम दो।

१० अनजाने मनुष्य पर विश्वास करना और जाने हुए योग्य पुरुष पर सदेह करना—ये दोनों ही बाते एक समान अनन्त आपत्तियो का कारण होती है।

१३

मनुष्यों की परीक्षा : उनकी नियुक्ति और निगरानी

१. देखो, जो आदमी नेकी को देखता है और बदी को भी देखता है, मगर पसन्द उसी बात को करता है, कि जो नेक है, बस उसी आदमी को अपनी नौकरी मे लो ।

२. जो मनुष्य तुम्हारे राज्य के साधनो को विस्फूर्त कर सके और उस पर जो आपत्ति पडे उसे दूर कर सके, ऐसे ही आदमियो के हाथ मे अपने राज्य का प्रबन्ध सौपो ।

३. उसी आदमी को अपनी नौकरी के लिए चुनो कि जिसमे दया, बुद्धि और द्रुत निश्चय है, अथवा जो लालच से आज़ाद है ।

४. बहुत से आदमी ऐसे है, जो सब तरह की परीक्षाओ मे उत्तीर्ण हो जाते है, मगर फिर भी ठीक कर्त्तव्य-पालन के वक्त बदल जाते है ।

५ आदमियो के सुचतुर-ज्ञान और उनकी शान्त कार्य-कारिणी शक्ति का खयाल करके ही उनके हाथो मे काम सौपना चाहिए, इसलिए नही कि वे तुमसे प्रेम करते है ।

६ सुचतुर मनुष्य को चुनकर उसे वही काम दो, जिसके

वह योग्य है, फिर जब काम करने का ठीक मौका आवे, तो उससे काम शुरू करवा दो ।

७. पहले नौकर की शक्ति और उसके योग्य काम का खूब विचार करलो और तब उसकी जिम्मेदारी पर वह काम उसके हाथ मे सौप दो ।

८. जब तुम निश्चय कर चुको कि यह आदमी इस पद के योग्य है, तब तुम उसे उस पद को सुशोभित करने के काबिल बना दो ।

९. देखो, जो उस मनुष्य के मित्रता-सूचक व्यवहार पर रुष्ट होता है कि जो अपने कार्य मे दक्ष है, भाग्य-लक्ष्मी उससे फिर जायगी ।

१०. राजा को चाहिये कि वह हर रोज हरएक काम की देखभाल करता रहे, क्योकि जबतक किसी देश के अहलकारो मे खराबी पैदा न होगी. तबतक उस देश पर कोई आपत्ति न आयगी ।

: १४ :

न्याय-शासन

१ खूब गौर करो और किसी तरफ मत झुको, निष्पक्ष होकर कानूनदाॅ लोगो की राय लो—न्याय करने का यही तरीका है ।

२. ससार जीवन-दान के लिए बादलो की ओर देखता है, ठीक इसी तरह न्याय के लिए लोग राज-दण्ड की ओर निहारते है ।

३ राज-दण्ड ही ब्रह्म-विद्या और धर्म का मुख्य सरक्षक है ।

४ देखो, जो राजा अपने राज्य की प्रजा पर प्रेमपूर्वक शासन करता है, उससे राज्य-लक्ष्मी कभी पृथक् न होगी ।

५ देखो, जो राजा नियमानुसार राज-दण्ड धारण करता है, उसका देश समयानुकूल वर्षा और शस्य-श्री का घर बन जाता है ।

६ राजा की विजय का कारण उसका भाला नही होता है, बल्कि यो कहिए कि वह राज-दण्ड है, जो हमेशा सीधा रहता है और कभी किसी ओर को नही झुकता ।

७ राजा अपनी समस्त प्रजा का रक्षक है और उसकी रक्षा करेगा उसका राज-दण्ड, बशर्ते कि वह उसे कभी किसी ओर न झुकने दे ।

८ जिस राजा की प्रजा आसानी से उसके पास तक नही पहुँच सकती और जो ध्यान-पूर्वक न्याय-विचार नही करता वह राजा अपने पद से भ्रष्ट हो जायगा और दुश्मनो के न होने पर भी वह नष्ट हो जायगा ।

देखो, जो राजा आन्तरिक और बाह्य शत्रुओं से

अपनी प्रजा की रक्षा करता है, वह अपराध करने पर उन्हे दण्ड दे, तो यह उसका दोष नही है– यह उसका कर्त्तव्य है ।

१०. दुष्टो को मृत्यु-दण्ड देना अनाज के खेत से घास को बाहर निकालने के समान है ।

: १५ :

जुल्म-अत्याचार

१. देखो, जो राजा अपनी प्रजा को सताता और उनपर जुल्म करता है, वह हत्यारे से भी बदतर है ।

२. जो राज-दण्ड धारण करता है, उसकी प्रार्थना ही हाथ मे तलवार लिए हुए डाकू के इन शब्दो के समान है– "खडे रहो, और जो कुछ है उसे रख दो ।"

३ देखो, जो राजा प्रति दिन राज्य-सचालन की देख-रेख नही रखता और उसमे जो त्रुटियाँ हो उन्हे दूर नही करता, उसका राजत्व दिन-दिन क्षीण होता जायगा ।

४ शोक है उस विचारहीन राजा पर, जो न्यायमार्ग से चल-विचल हो जाता है, वह अपना राज्य और धन सब-कुछ खो बैठेगा ।

५. निस्सन्देह ये अत्याचार-दलित दु ख से कराहते हुए लोगो के आँसू ही है, जो राजा की समृद्धि को धीरे-धीरे बहा ले जाते है ।

६ न्याय-शासन द्वारा ही राजा को यश मिलता है और अन्याय-शासन उसकी कीर्ति को कलंकित करता है।

७. वर्षा-हीन आकाश के तले पृथ्वी की जो दशा होती है, ठीक वही दशा निर्दयी राजा के राज्य मे प्रजा की होती है।

८ अत्याचारी राजा के शासन मे गरीबो से ज्यादा दुर्गति अमीरो की होती है।

९. अगर राजा न्याय और धर्म के मार्ग से बहक जायगा, तो स्वर्ग से ठीक समय पर वर्षा की बौछार आना बन्द हो जायँगी।

१० यदि राजा न्याय-पूर्वक शासन नही करेगा, तो गाय के थन सूख जायँगे और ब्राह्मण* अपनी विद्या को भूल जायँगे।

: १६ :

गुप्तचर

१. राजा को यह ध्यान मे रखना चाहिए कि राजनीति-विद्या और गुप्त-चर ये दो आँखे है, जिनसे वह देखता है।

२ राजा का काम है कि कभी कभी प्रत्येक मनुष्य की प्रत्येक बात की हर रोज खबर रक्खे।

---

*बहुकर्मी शब्द का प्रयोग मूल ग्रन्थ मे है।

३. जो राजा गुप्तचरो और दूतो के द्वारा अपने चारो तरफ होनेवाली घटनाओ की खबर नही रखता है, उसके लिए दिग्विजय नही है ।

४. राजा को चाहिए कि अपने कर्मचारियो, अपने बन्धु-बान्धवो और शत्रुओ की गति-मति को देखने के लिए दूत नियत कर रखे ।

५ जो आदमी अपने चेहरे का ऐसा भाव बना सके कि जिसमे किसी को सन्देह न हो, जो किसी भी आदमी के सामने गडबडाए नही, और जो अपने गुप्त भेदो को किसी तरह प्रकट न होने दे, भेदिया का काम करने के लिए वही आदमी ठीक है ।

६ गुप्तचरो और दूतो को चाहिए कि वे सन्यासियो और साधु-सन्तो का भेष धारण करे और खोज कर सच्चा भेद निकाले, और चाहे कुछ भी हो जाय, वे अपना भेद न बताएँ।

७ जो मनुष्य दूसरो के पेट से भेद की बाते निकाल सकता है, और जिसकी गवेषणा सदा शुद्ध और निस्सन्दिग्ध होती है, वही भेद लगाने का काम करने लायक है ।

८ एक दूत के द्वारा जो सूचना मिलती है उसको दूसरे दूत की सूचना से मिला कर जाँचना चाहिए ।

९ इस बात का ध्यान रक्खो कि कोई दूत उसी काम मे लगे हुए दूसरे दूतो को न जानने पाय और जब तीन दूतो की सूचनाये एक दूसरे से मिलती हो, तब उन्हे सच्चा मान सकते हो ।

१०. अपने खुफिया पुलिस के अफसरो को खुलेआम इनाम मत दो, क्योकि यदि तुम ऐसा करोगे तो अपने ही भेद को खोल दोगे ।

१७ :

क्रियाशीलता

१. जिनमे काम करने की शक्ति है, बस वेही सच्चे अमीर है, और जिनके अन्दर वह शक्ति नही है. क्या वे सचमुच ही अपनी चीजो के मालिक है ?

२. काम करने की शक्ति मनुष्यता का वास्तविक धन है, क्योंकि दौलत हमेशा नही रहती, एक न एक दिन चली जायगी ।

३ धन्य है वह पुरुष, जो काम करने से कभी पीछे नही हटता । भाग्य-लक्ष्मी उसके घर की राह पूछती हुई जाती है ।

४. पौधे को सीचने के लिए जो पानी डाला जाता है, उसी से उसके फूल के सौन्दर्य का पता लग जाता है, ठीक इसी तरह आदमी का उत्साह उसकी भाग्य-शीलता का पैमाना है ।

५. जोशीले आदमी कभी शिकस्त खा कर पीछे नहीं हटते; हाथी के जिस्म मे जब दूर तक तीर घुस जाता है, तब वह और भी मजबूती के साथ जमीन पर अपने पैरो को जमाता है।

६. अनन्त उत्साह, बस यही तो शक्ति है। जिनमे उत्साह नही है, वे और कुछ नही, केवल काठ के पुतले है, अन्तर केवल इतना ही है कि उनका शरीर मनुष्योका-सा है।

७. आलस्य मे दरिद्रता का वास है, मगर जो आलस्य नही करता उसके परिश्रम मे कमला बसती है।

८. टालमटूल, विस्मृति, सुस्ती और निद्रा– ये चार उन लोगो के खुशी मनाने के बजडे है कि जिनके भाग्य मे नष्ट होना बदा है।

९ अगर भाग्य किसी को धोखा दे जाय तो इसमे लज्जा नही, लेकिन वह अगर जान-बूझ कर, काम से जी चुरा कर, हाथ पर हाथ रखकर बैठा रहे, तो यह बडे ही शर्म की बात है।

१०. जो राजा आलस्य को नही जानता, वह त्रिविक्रम वामन के पैरो से नापी हुई समस्त पृथ्वी को अपनी छत्रछाया के नीचे ले आयगा।

१८ :

मुसीबत के वक्त बेखौफी

१. जब तुम पर कोई मुसीबत आ पडे, तो तुम हँसते हुए उसका मुकाबला करो। क्योकि मनुष्य को आपत्ति का सामना करने के लिए सहायता देने मे मुस्क्यान से बढकर और कोई चीज नही है।

२. अनिश्चितमना पुरुष भी मन को एकाग्र करके जब सामना करने को खडा होता है, तो आपत्तियो का लहराता हुआ सागर भी दब कर बैठ जाता है ।

३. आपत्तियो को जो आपत्ति नही समझते, वे आपत्तियो को ही आपत्ति में डालकर वापस भेज देते है ।

४. भैसे की तरह हरएक मुसीबत का सामना करने के लिए जो जी-तोड कर कोशिश करने को तय्यार है, उसके सामने विघ्न-बाधा आयेगे, मगर निराश होकर, अपनासा मुँह लेकर, वापस चले जायेंगे ।

५. आपत्ति की एक समस्त सेना को अपने विरुद्ध सुसज्जित खडा देख कर भी जिसका मन बैठ नही जाता, बाधाओ को उसके पास आने मे खुद बाधा होती है ।

६ सौभाग्य के समय जो खुशी नही मनाते, क्या वे कभी इस किस्म की शिकायत करते फिरेगे कि 'हाय, हम नष्ट हो गये ?'

७ बुद्धिमान लोग जानते है कि यह जिस्म तो मुसीबतो का निशाना है, और इसलिए जब उन पर कोई आफत आ पडती है, तो वे उसकी कुछ परवाह नही करते ।

८. देखो, जो आदमी ऐशो-आराम को पसन्द नही करता और जो जानता है कि आपत्तियाँ भी सृष्टि-नियम के अन्तर्गत है, वह बाधा पडने पर कभी परेशान नही होता ।

९. सफलता के समय जो हर्ष मे मग्न नही होता, असफलता के समय उसे दुख नही भोगना पडता ।

१०. देखो, जो मनुष्य परिश्रम के दुख, दबाव और आवेग को सच्चा सुख समझता है, उसके दुश्मन भी उसकी प्रशसा करते है ।

· १९ ·

मन्त्री

१ देखो, जो मनुष्य महत्त्वपूर्ण उद्योगो को सफलतापूर्वक सम्पादन करने के मार्गो और साधनो को जानता है और उनका आरम्भ करने के समुचित समय को पहचानता है, सलाह देने के लिए वही योग्य पुरुष है ।

२. स्वाध्याय, दृढ निश्चय, पौरुष, कुलीनता और प्रजा की भलाई के निमित्त सप्रेम चेष्टा—ये मन्त्री के पाँच गुण है ।

३. जिसमे दुश्मनो के अन्दर फूट डालने की शक्ति है, जो वर्तमान मित्रता के सम्बन्धो को बनाये रख सकता है और जो लोग दुश्मन बन गये है उनको फिर से मिलाने की सामर्थ्य जिसमे है—बस, वही योग्य मत्री है ।

४. उचित उद्योगो को पसन्द करने और उनको कार्य-रूप मे परिणत करने के साधनो को चुनने की लियाकत

तथा सम्मति देते समय निश्चयात्मक स्पष्टता—ये परामर्श-दाता के आवश्यक गुण हैं ।

५. देखो, जो नियमो को जानता है और जो ज्ञान मे भरपूर है, जो समझ-बूझ कर बात करता है और जो मौके-महल को पहचानता है – बस, वही मन्त्री तुम्हारे लायक है ।

६. जो पुस्तको के ज्ञान द्वारा अपनी स्वाभाविक बुद्धि की अभिवृद्धि कर लेते है, उनके लिए कौनसी बात इतनी मुश्किल है, जो उनकी समझ मे न आ सके ?

७ पुस्तक-ज्ञान मे यद्यपि तुम सुदक्ष हो, फिर भी तुम्हे चाहिये कि तुम अनुभव-जन्य ज्ञान प्राप्त करो और उसके अनुसार व्यवहार करो ।

८ सम्भव है कि राजा मूर्ख हो और पग-पग पर उसके काम मे अडचने डाले, मगर फिर भी मन्त्री का कर्तव्य है कि वह सदा वही राह उसे दिखावे कि जो फायदेमन्द, ठीक और मुनासिब हो ।

९ देखो, जो मन्त्री मन्त्रणा-गृह मे बैठ कर अपने राजा का सर्वनाश करने की युक्ति सोचता है, वह सात करोड दुश्मनो से भी अधिक भयङ्कर है ।

१०. अनिश्चयी पुरुष सोच-विचार कर ठीक तरकीब निकाल भी ले, मगर उसपर अमल करते समय वे डगमगायेंगे और अपने मन्सूबो को कभी पूरा न कर सकेंगे ।

: २० :

वाक्-पटुता

१. वाक्-शक्ति निःसन्देह एक नियामत है, क्योंकि यह अन्य नियामतों का अंश नहीं बल्कि स्वयमेव एक निराली नियामत है।

२. जीवन और मृत्यु * जिव्हा के वश में हैं, इसलिए ध्यान रक्खो कि तुम्हारे मुँह से कोई अनुचित बात न निकले।

३ देखो, जो वक्तृता मित्रों को और भी घनिष्ठता के सूत्र में आबद्ध करती है और दुश्मनों को भी अपनी ओर आकर्षित करती है, बस वही यथार्थ वक्तृता है।

४ हरएक बात को ठीक तरह से तौल कर देखो, और फिर जो उचित हो वही बोलो, धर्म की वृद्धि और लाभ की दृष्टि से इससे बढ़कर उपयोगी बात तुम्हारे हक में और कोई नहीं है।

५ तुम ऐसी वक्तृता दो कि जिसे दूसरी कोई वक्तृता चुप न कर सके।

६ ऐसी वक्तृता देना कि जो श्रोताओं के दिलों को आकर्षित करले और दूसरों की वक्तृता के अर्थ को फौरन ही समझ जाना— यह पक्के राजनीतिज्ञ का कर्त्तव्य है।

---

*भलाई-बुराई; सम्पत्ति-विपत्ति।

७. देखो, जो आदमी सुवक्ता है और जो गड़बड़ाना या डरना नही जानता, विवाद मे उसको हरा देना किसी के लिए सम्भव नही है ।

८ जिसकी वक्तृता परिमार्जित और विश्वासोत्पादक भाषा स सुसज्जित होती है, सारा ससार उसके इशारे पर नाचेगा ।

९. जो लोग अपने मन की बात थोडे से चुने हुए शब्दो मे कहना नही जानते, वास्तव मे उन्ही को अधिक बोलने की लत होती है ।

१०. देखो, जो लोग अपने प्राप्त किये हुए ज्ञान को समझा कर दूसरो को नही बता सकते, वे उस फूल के समान है जो खिलता है मगर सुगन्ध नही देता ।

२१

शुभाचरण

१ मित्रता द्वारा मनुष्य को सफलता मिलती है, किन्तु आचरण की पवित्रता उसकी प्रत्येक इच्छा को पूर्ण कर देती है ।

२ उन कामो से सदा विमुख रहो कि जिनसे न तो सुकीर्ति मिलती है, न लाभ होता है ।

३. जो लोग ससार मे रह कर उन्नति करना चाहते है, उन्हे ऐसे कार्यों से सदा दूर रहना चाहिए, जिनसे कीर्ति मे बट्टा लगने की सभावना हो।

४. भले आदमी जिन बातो को बुरा बतलाते है, मनुष्यो को चाहिये कि अपने को जन्म देने वाली माता को बचाने के लिए भी उन कामो को न करे।

५ अधर्म-द्वारा एकत्र की हुई सम्पत्ति की अपेक्षा तो सदाचारी पुरुष की दरिद्रता कही अच्छी है।

६ जिन कामो मे असफलता अवश्यम्भावी है, उन सब से दूर रहना और बाधा-विघ्नो से डर कर अपने कर्त्तव्य से विचलित न होना—ये दो बुद्धिमानो के मुख्य पथ-प्रदर्शक सिद्धान्त समझे जाते है।

७ मनुष्य जिस बात को चाहता है, उसको वह प्राप्त कर सकता है और वह भी उसी तरह से जिस तरह कि वह चाहता है, बशर्ते कि वह अपनी पूरी शक्ति और पूरे दिल से उसको चाहता हो।

८ सूरत देख कर किसी आदमी को हेय मत समझो, क्योकि दुनियाँ मे ऐसे भी आदमी है, जो एक बडे भारी दौडते हुए रथ की धुरी की कीली के समान है।

९ लोगो को रुला कर जो सम्पत्ति इकट्ठी की जाती है, वह क्रन्दन-ध्वनि के साथ ही विदा हो जाती है, मगर जो धर्म द्वारा सचित की जाती है, वह बीच मे क्षीण हो जाने पर अन्त मे खूब फलती-फूलती है।

१० धोखा दे कर दगाबाजी के साथ धन जमा करना बस ऐसा ही है, जैसा कि मिट्टी के बने हुए कच्चे घडे मे पानी भर कर रखना ।

२२

कार्य-संचालन

१. किसी निश्चय पर पहुँचना ही विचार का उद्देश्य है, और जब किसी बात का निश्चय हो गया, तब उसको कार्य मे परिणत करने मे देर करना भूल है ।

२ जिन बातो को आराम के साथ फुर्सत से करना चाहिए उनको तो तुम खूब सोच विचार कर करो, लेकिन जिन बातो पर फौरन ही अमल करने की जरूरत है, उनको एक क्षणभर के लिए भी न उठा रक्खो ।

३ यदि परिस्थिति अनुकूल हो, तो सीधे अपने लक्ष्य की ओर चलो, किन्तु यदि परिस्थिति अनुकूल न हो तो उस मार्ग का अनुसरण करो, जिसमे सब से कम बाधा आने की सम्भावना हो ।

४ अधूरा काम और अपराजित शत्रु—ये दोनो बिना बुझी आग की चिनगारियों के समान है, वे मौका पाकर बढ जायँगे और उस लापर्वाह आदमी को आ दबावेंगे ।

५. प्रत्येक कार्य को करते समय पाँच बातो का खूब ध्यान रक्खो,——उपस्थित साधन, औज़ार, कार्य का स्वरूप, समुचित समय और कार्य करने के उपयुक्त स्थान ।

६ काम करने मे कितना परिश्रम पडेगा, मार्ग मे कितनी बाधाएँ आयेगी और फिर कितने लाभ की आशा है, इन बातो को पहले सोच कर तब किसी काम को हाथ मे लो ।

७ किसी भी काम मे सफलता प्राप्त करने का यही मार्ग है कि जो मनुष्य उस काम मे दक्ष है उससे उस काम का रहस्य मालूम कर लेना चाहिए ।

८ लोग एक हाथी के द्वारा दूसरे हाथी को फँसाते है, ठीक इसी तरह एक काम को दूसरे काम के सम्पादन करने का जरिया बना लेना चाहिए ।

९ मित्रो को पारितोषिक देने से भी अधिक शीघ्रता के साथ दुश्मनो को शान्त करना चाहिए ।

१० दुर्बलो को सदा खतरे की हालत मे नही रहना चाहिए, बल्कि जब मौका मिले तब उन्हे बलवान के साथ मित्रता कर लेनी चाहिए ।

: २३ :

राज-दूत

१. एक मेहरबान दिल, आला खानदान और राजाओं को खुश करने वाले तरीके––ये सब राजदूतो की खूबियाँ है।

२ प्रेम-मय प्रकृति, सुतीक्ष्ण बुद्धि और वाक्पटुता–ये तीनो बाते राजदूत के लिए अनिवार्य हैं।

३. जो मनुष्य राजाओ के समक्ष अपने स्वामी को लाभ पहुँचाने वाले शब्दो को बोलने का भार अपने सिर लेता है, उसे विद्वानो मे विद्वान ––सर्व-श्रेष्ठ विद्वान–होना चाहिए।

४. जिसमे बुद्धि और ज्ञान है और जिसका चेहरा शानदार और रोबीला है, उसी को राजदूतत्व के काम पर जाना चाहिए।

५ सक्षिप्त वक्तृता, वाणी की मधुरता और चतुरता-पूर्वक हर तरह की अप्रिय भाषा का निराकरण करना–ये ही साधन है, जिनके द्वारा राज-दूत अपने स्वामी को लाभ पहुँचायगा

६ विद्वत्ता, प्रभावोत्पादक वक्तृता और निर्भीकता तथा किस मौके पर क्या करना चाहिए यह बताने वाली सुसयत प्रत्युत्पन्नमति (हाजिरजवाबी)–– ये सब राजदूत के आवश्यक गुण है।

७. वही सबसे योग्य राजदूत है कि जिसके पास समुचित स्थान और समय को पहचानने वाली आँख है, जो अपने कर्त्तव्य को जानता है और जो बोलने से पहले अपने शब्दो को जाँच लेता है।

८. जो मनुष्य दूतत्व के काम पर भेजा जाय वह दृढ-प्रतिज्ञ, पवित्र-हृदय और चित्ताकर्षक स्वभाव वाला होना चाहिए।*

९ देखो, जो दृढ-प्रतिज्ञ पुरुष अपने मुख से हीन और अयोग्य वचन कभी नही निकलने देता, विदेशी दरबारो मे राजाओ के पैगाम सुनाने के लिए वही योग्य पुरुष है।

१० मौत का सामना होने पर भी सच्चा राज-दूत अपने कर्तव्य से विचलित नही होगा, बल्कि अपने मालिक का काम बनाने की पूरी कोशिश करेगा।

२४

राजाओं के समक्ष कैसा बर्ताव होना चाहिए

१. जो कोई राजाओ के साथ रहना चाहता है, उसको चाहिए कि वह उस आदमी के समान व्यवहार करे, जो आग के सामने बैठ कर तापता है, उसको न तो अति समीप जाना चाहिए, न अति दूर।

* पहले सात पदो मे ऐसे राजदूतो का वर्णन है, जिनको अपनी जिम्मेवारी पर काम करने का अधिकार है। आखिरी तीन पदो मे उन दूतो का वर्णन है, जो राजाओ के पैगाम ले जाने वाले होते है।

२. राजा जिन चीजो को चाहता है उनकी लालसा न रखना--यही उसकी स्थायी कृपा प्राप्त करने और उसके द्वारा समृद्धिशाली बनने का मूलमन्त्र है।

३. यदि तुम राजा की नाराजी मे पडना नही चाहते, तो तुमको चाहिए कि हर तरह के गम्भीर दोषो से सदा पाक साफ रहो, क्योकि यदि एक बार सन्देह हो गया तो फिर उसे दूर करना असम्भव हो जाता है।

४ बडे लोगो के सामने कानाफूँसी न करो और न किसी दूसरे के साथ हँसो या मुस्कराओ, जब कि वे नजदीक हो।

५ छिप कर कोई बात सुनने की कोशिश न करो और जो बात तुम्हे नही बताई गई है उसका पता लगाने की चेष्टा भी न करो, जब तुम्हे बताया जाय तभी उस भेद को जानो।

६ राजा का मिजाज इस वक्त कैसा है, इस बात को समझ लो, और क्या मौका है इस बात को भी देख लो, तब ऐसे शब्द बोलो कि जिनसे वह प्रसन्न हो।

७ राजा के सामने उन्ही बातो का जिक्र करो, जिनसे वह प्रसन्न हो, मगर जिन बातो से कुछ लाभ नही है, जो बाते बेकार है, राजा के पूछने पर भी उनका जिक्र न करो।*

८ चूँकि वह नवयुवक है और तुम्हारा सम्बन्धी अथवा रिश्तेदार है इसलिए तुम उसको तुच्छ मत समझो, बल्कि

* परिमेल अडहर कहता है कि उन्ही बातो का जिक्र करो, जो लाभदायक हो और जिनसे राजा प्रसन्न हो।

उसके अन्दर जो ज्योति† विराजमान है, उसके सामने भय मानकर रहो ।

९. देखो, जिनकी दृष्टि निर्मल और निर्द्वन्द है, वे यह समझ कर कि हम राजा के कृपा पात्र हैं कभी कोई ऐसा काम नही करते, जिससे राजा असन्तुष्ट हो ।

१०. जो मनुष्य राजा की घनिष्टता और मित्रता पर भरोसा रख कर अयोग्य काम कर बैठते है, वे नष्ट हो जाते हैं ।

: २५ :

मुखाकृति से मनोभाव समझना

१ देखो, जो आदमी जबान से कहने के पहले ही दिल की बात जान लेता है, वह सारे ससार के लिए भूषण-स्वरूप है ।

२ दिल मे जो बात है, उसको यकीनी तौर पर मालूम कर लेने वाले मनुष्य को देवता समझो ।

३ जो लोग किसी आदमी की सूरत देख कर ही उसकी बात भाँप जाते है, चाहे जिस तरह हो, उनको तुम अपना जरूर सलाहकार बनाओ ।

---

† मूल ग्रन्थ मे जिसका प्रयोग है, उसका यह भी अर्थ हो सकता है—वह दिव्य ज्योति जो राजा के सो जाने पर भी प्रजा की रक्षा करती है ।

४. जो लोग बिना कहे ही मन की बात समझ लेते है, उनकी सूरत-शक्ल भी वैसी ही हो सकती है, जैसी कि न समझ सकने वाले लोगो की होती है, मगर उन लोगो का दर्जा ही अलहदा है।

५. ज्ञानेन्द्रियो के मध्य आँख का क्या स्थान हो सकता है, अगर वह एक ही नजर मे दिल की बात को जान नही सकती ?

६ जिस तरह बिल्लौरी पत्थर अपना रग बदल कर पासवाली चीज का रग धारण करता है, ठीक उसी तरह चहरे का भाव भी बदल जाता है और दिल मे जो बात होती है उसीको प्रकट करने लगता है।

७ चेहरे से बढ कर भावपूर्ण चीज और कौनसी है ? क्योकि दिल चाहे नाराज हो या खुश, सबसे पहले चहरा ही इस बात को प्रकट करता है।

८. यदि तुम्हे ऐसा आदमी मिल जाय, जो बिना कहे ही दिल की बात समझ सकता है, तो बस इतना काफी है कि तुम उसकी तरफ एक नजर देख भर लो, तुम्हारी सब इच्छाए पूर्ण हो जायेगी।

९ यदि ऐसे लोग हो, जो उसके हाव-भाव और तौर-तरीक को समझ सके, तो अकेली आँख ही यह बतला सकती है कि हृदय मे घृणा है अथवा प्रेम।

१०. जो लोग अपने को होशियार और काबिल कहते है, उनका पैमाना* और कुछ नही केवल उनकी आँख ही है।

---

* अर्थात्, स्थिति को देखनें और दूसरो के दिल की बात को समझनें का साधन।

: २६ .

श्रोताओं के समक्ष

१. ऐ शब्दो का मूल्य जानने वाले पवित्र पुरुषो ! पहले अपने श्रोताओ की मानसिक स्थिति को समझ लो और फिर उपस्थित जन-समूह की अवस्था के अनुसार अपनी वक्तृता देना आरम्भ करो ।

२ बुद्धिमान और विद्वान लोगो की सभा मे ही ज्ञान और विद्वत्ता की चर्चा करो, मगर मूर्खो को उनकी मूर्खता का खयाल रख कर ही जवाब दो ।

३ धन्य है वह आत्म-सयम, जो मनुष्य को बुजुर्गोकी सभा मे आगे बढकर नेतृत्व ग्रहण करने से मना करता है ! यह एक ऐसा गुण है, जो अन्य गुणो से भी अधिक समुज्जवल है ।

४. बुद्धिमान लोगो के सामने असमर्थ और असफल सिद्ध होना धर्म-मार्ग से पतित हो जाने के समान है ।

५ विद्वान पुरुष की विद्वत्ता अपने पूर्ण तेज के साथ सुसम्पन्न गुणियो की सभा मे ही चमकती है ।

६. बुद्धिमान लोगों के सामने उपदेश पूर्ण व्याख्यान देना जीवित पौदो को पानी देने के समान है ।

७ ऐ अपनी वक्तृता से विद्वानो को प्रसन्न करने की इच्छा रखने वाले लोगो ! देखो, कभी भूल कर भी मूर्खो के सामने व्याख्यान न देना ।*

८. रणक्षेत्र मे खडे होकर बहादुरी के साथ मौत का सामना करने वाले लोग तो बहुत है, मगर ऐसे लोग बहुत ही थोडे है, जो बिना काँपे हुए जनता के सामने रगमच पर खडे हो सके ।

९ तुमने जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसको विद्वानो के सामने खोल कर रक्खो, और जो बात तुम्हे मालूम नही है वह उन लोगो से सीख लो, जो उसमे दक्ष हो ।

१०. देखो, जो लोग विद्वानो की सभा मे अपनी बात को लोगो के दिल मे नही बिठा सकते, वे हर तरह का ज्ञान रखने पर भी बिलकुल निकम्मे है ।

२७

देश

१ वह महान् देश है, जो फसल की पैदावार मे कभी नही चूकता और जो ऋषि मुनियो तथा धार्मिक धनिको का निवास-स्थान हो ।

---

* क्योकि अयोग्यो को उपदेश देना कीचड मे अमृत फेकने के समान है ।

२ वही महान् देश है, जो धन की अधिकता से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है और जिसमें खूब पैदावार होती है फिर भी हर तरह की वबाई बीमारी से पाक रहता है।

३ उस महान् जाति की ओर देखो, उसपर कितने ही बोझ के ऊपर बोझ पड़े, वह उन्हें दिलेरी के साथ बर्दाश्त करेगी और साथ ही साथ अपने सारे कर अदा कर देगी।

४ वही देश महान् है, जो अकाल और महामारी से आजाद है और जो शत्रुओं के आक्रमणों से सुरक्षित है।

५ वही महान् जाति है, जो परस्पर युद्ध करने वाले दलों में विभक्त नहीं है, जो हत्यारे अतिनकारियों से पाक है, और जिसके अन्दर जाति का सर्वनाश करने वाला कोई देश-द्रोही नहीं है।

६ देखो, जो मुल्क दुश्मनों के हाथों कभी तबाह और बर्बाद नहीं हुआ, और कभी हो भी जाय तब भी जिसकी पैदावार में जरा भी कमी न आए, वह देश तमाम दुनिया के मुल्कों में हीरा समझा जायगा।

७ पृथ्वी-तल के ऊपर रहने वाला जल, जमीन के अन्दर बहने वाला जल, वर्षा-जल, उपयुक्त स्थानापन्न पर्वत और सुदृढ़ दुर्ग—ये चीजें प्रत्येक देश के लिए अनिवार्य हैं।

८ धन-सम्पत्ति, जमीन की जरखेजी, खुशहाली, बीमारियों से आजादी और दुश्मनों के हमलों से हिफाजत—ये पाँच बातें राज्य के लिए आभूषण-स्वरूप हैं।

९ वही अकेला देश कहलाने योग्य है, जहाँ मनुष्यो के परिश्रम किये बिना ही खूब पैदावार होती है, जिसमे आदमियो के परिश्रम करने पर ही पैदावार हो, वह इस पद का अधिकारी नही है ।

१०. ये सब नियामतें मौजूद रहते हुए भी वह देश किसी मतलब का नही, अगर उस देश का राजा ठीक न हो ।

२८

दुर्ग

१ दुर्बलो के लिए, जिन्हे केवल अपने बचाव की ही चिन्ता होती है, दुर्ग बहुत ही उपयोगी होते है, मगर बलवान और शक्तिशाली के लिए भी वे कम उपयोगी नही होते ।

२ जल-प्राकार, रेगिस्तान, पर्वत और सघन वन—ये सब नाना प्रकार के रक्षणात्मक प्रतिबन्ध है ।

३ ऊचाई, मोटाई, मजबूती और अजेयत्व—ये चार गुण है, जो निर्माण-कला की दृष्टि से किलो के लिए जरूरी है ।

४. वह गढ सबसे उत्तम है, जिसमे कमजोरी तो बहुत थोडी जगहो पर हो, मगर उसके साथ ही वह खूब विस्तृत हो और जो लोग उसे लेना चाहे उनके आक्रमणो को रोक कर दुश्मनो के बल को तोडने की शक्ति रखता हो ।

५. अजेयत्व, दुर्ग-सैन्य के लिए रक्षणात्मक सुविधा और दुर्ग के अन्दर रसद और सामान की बहुतायत, ये सब बाते दुर्ग के लिए आवश्यक है।

६ वही सच्चा किला है, जिसमे हर तरह का सामान पर्याप्त परिमाण मे मौजूद है और जो ऐसे लोगो की सरक्षकता मे हो कि जो किले को बचाने के लिए वीरता पूर्वक लडे।

७ बेशक वह सच्चा किला है, जिसे न तो कोई घेरा डाल कर जीत सके, न अचानक हमला करके, और न कोई जिसे सरङ्ग लगा कर ही तोड सके।

८ नि सन्देह वह वास्तविक दुर्ग है, जो किले की सेना को घेरा डालने वाले शत्रुओ को हराने के योग्य बना देता है, यद्यपि वे उसको लेने की चाहे कितनी ही कोशिश क्यो न करे।

९ नि सन्देह वह दुर्ग है, जो नाना प्रकार के साधनो द्वारा अजेय बन गया है और जो अपने सरक्षको को इस योग्य बनाता है कि वे दुश्मनो को किले की सुदूर सीमा पर ही मार कर गिरा सके।

१०. मगर किला चाहे कितना ही मजबूत क्यो न हो, वह किसी काम का नही, अगर संरक्षक लोग वक्त पर फुर्त्ती से काम न ले।

२०

धनोपार्जन

१ अप्रसिद्ध और बेकद्रोकीमत लोगो को प्रतिष्ठित बनाने मे जितना धन समर्थ है, उतना और कोई पदार्थ नही ।

२ गरीबो का सभी अपमान करते है, मगर धन-धान्य-पूर्ण मनुष्य की सभी जगह अभ्यर्थना होती है ।

३ वह अविश्रान्त ज्योति, जिसे लोग धन कहते है, अपने स्वामी के लिए सभी अन्धकारमय* स्थानो को ज्योत्स्ना-पूर्ण बना देती है ।

४ देखो, जो धन पाप-रहित निष्कलङ्क रूप से प्राप्त किया जाता है, उससे धर्म और आनन्द का स्रोत बह निकलता है ।

५. जो धन दया और ममता से रहित है, उसकी तुम कभी इच्छा मत करो और उसको कभी अपने हाथ से मत छुओ ।

६. जब्तशुदा और मतरुक जायदादे, लगान और मालगुजारी और युद्ध मे प्राप्त किया हुआ माल—ये सब चीजे राजा के कोष मे वृद्धि करती है ।

---

* अन्धकार के लिए जो शब्द मूल में ह, उसके अर्थ बुराई और दुश्मनी के भी हो सकते है ।

७. दयार्द्रता जो प्रेम की सन्तति है, उसका पालन-पोषण करने के लिए सम्पत्ति-रूपिणी दयालु-हृदय धाय की आवश्यकता है ।*

८. देखो, धनवान् आदमी जब अपने हाथ मे काम लेता है तो वह उस मनुष्य के समान मालूम होता है कि जो एक पहाड की चोटी पर से हाथियो की लडाई देखता है ।†

९. धन इकट्ठा करो, क्योकि शत्रु का गर्व चूर करने के लिए उससे बढ कर दूसरा हथियार नही है ।

१० देखो, जिसने बहुत-सा धन जमा कर लिया है, शेष दो पुरुषार्थ—धर्म और काम—उसके करतल-गत है ।

३०

सेना के लक्षण

१ एक सुसङ्गठित और बलवती सेना, जो खतरेसे भयभीत नही होती है, राजा के वशवर्ती पदार्थो मे सर्व-श्रेष्ठ है ।

२ बेहिसाब आक्रमणो के होते हुए भयङ्कर निराशा-

---

* हृदय मे दया के भाव का विकास करने के लिए सम्पत्ति की आवश्यकता है । सम्पत्ति द्वारा दूसरो की सेवा की जा सकती है ।

† क्योकि बिना किसी भय और चिन्ता के वह अपना काम कर सकता है ।

जनक स्थिति की रक्षा मँजे हुए बहादुर सिपाही ही अपने अटल निश्चय के द्वारा कर सकते है ।

३ यदि वे समुद्र की तरह गरजते भी है, तो इसमे क्या हुआ ? काले नाग की एक ही फुफकार मे चूहो का सारा झुण्ड का झुण्ड विलीन हो जायगा ।

४. जो सेना हारना जानती ही नही और जो कभी भ्रष्ट नही की जा सकती और जिसने बहुतसे अवसरो पर बहादुरी दिखाई है, वास्तव मे वही सेना नाम की अधिकारिणी है ।

५ वास्तव मे सेना का नाम उसी को शोभा देता है कि जो बहादुरी के साथ यमराज का भी मुकाबला कर सके, जब कि वह अपनी पूर्ण प्रचण्डता के साथ सामने आवे ।

६ बहादुरी, प्रतिष्ठा, एक साफ दिमाग और पिछले जमाने की लडाइयों का इतिहास—ये चार बाते सेना की रक्षा करने के लिए कवच स्वरूप है ।

७ जो सच्ची सेना है, वह सदा दुश्मन की तलाश मे रहती है, क्योंकि उसको पूर्ण विश्वास है कि जब कोई दुश्मन लडाई करेगा तो वह उसे अवश्य जीत लेगी ।

८. सेना मे जब मुस्तेदी और एकाएक प्रचण्ड आक्रमण करने की शक्ति नही होती, तब शानो-शौकत और जाहो-जलाल उस कमजोरी को केवल पूरा भर कर देते है ।

९. जो सेना सख्या मे कम नही है और जिसको वेतन

न पाने के कारण भूखो नही मरना पडता, वह सेना विजयी होगी ।

१०. सिपाहियों की कमी न होने पर भी कोई फौज नही बन सकती, जबतक कि उसका सचालन करने के लिए सरदार न हो ।

३१

वीर योद्धा का आत्म-गौरव

१ अरे ऐ दुश्मनो ! मेरे मालिक के सामने, युद्ध मे, खडे न होओ, क्योकि बहुतसे आदमियो ने उसे युद्ध के लिये ललकारा था, मगर आज वे सब * पत्थर की कब्रो के नीचे पडे हुए है।

२. हाथी के ऊपर चलाया गया भाला अगर चूक भी जाय तब भी उसमे अधिक गौरव है बनिस्बत उस तीर के जो खर गोश पर चलाया जाय और उसके लग भी जाय ।†

३. वह प्रचण्ड साहस जो प्रबल आक्रमण करता है, उसीको लोग वीरता कहते है लेकिन उसकी शान उस दिले-राना फैयाजी मे है कि जो अधपतित शत्रु के प्रति दिखाई जाती है ।

* तामिल देश मे बहादुरो की चिताओं और कब्रो के ऊपर कीर्ति-स्तभ के रूप मे एक पत्थर गाड दिया जाता था ।

† Higher aims are in themselves more valuable even if unfulfilled than lower once quite attained—Goeth.

४. सिपाही ने अपना भाला हाथी के ऊपर चला दिया और वह दूसरे भाले की तलाश मे जा रहा था, कि इतने मे उसने एक भाला अपने शरीर मे घुसा हुआ देखा, और ज्यो ही उसने उसे बाहर निकाला वह खुशी से मुस्करा उठा।

५ वीर पुरुष के ऊपर भाला चलाया जाय और उसकी आँख जरा सी झपक भर जाय, तो क्या यह उसके लिये शर्म की बात नही है ?

६ बहादुर आदमी जिन दिनो अपने जिस्म पर गहरे घाव नही खाता है, वह समझता है कि वे दिन व्यर्थ नष्ट हो गये।

७. देखो, जो लोग अपनी जान की पर्वाह नही करते मगर पृथ्वी-भर मे फैली हुई कीर्ति की कामना करते है, उनके घाव के कड़े भी आँखो को आल्हादकारक होते है।

८ देखो, जो बहादुर लोग युद्ध-क्षेत्र मे मरने से नही डरते, वे अपने सरदार के सख्ती करने पर भी सैनिक नियमो को नहीं भूलते।

९ अपने हाथ मे लिये हुए काम को सम्पादन करने के उद्योग मे जो लोग अपनी जान गँवा देते है, उनको दोष देने का किसको अधिकार है ?

१० अगर कोई आदमी ऐसी मौत मर सके कि जिसे देख कर उसके सरदार की आँख से आसू निकल पड़े, तो भीख माग कर और खुशामद करके भी ऐसी मौत को हासिल करना चाहिये।

: ३२ :

मित्रता

१. दुनिया मे ऐसी कौनसी वस्तु है, जिसका हासिल करना इतना मुश्किल है, जितना कि दोस्ती का ? और दुश्मनों से रक्षा करने के लिये मित्रता के समान और कौनसा कवच है ?

२. योग्य पुरुषो की मित्रता बढ़ती हुई चन्द्रकला के समान है, मगर बेवकूफो की दोस्ती घटते हुए चाँद के समान है।

३ योग्य पुरुषों की मित्रता दिव्य ग्रन्थो के स्वाध्याय के समान है, जितनी ही उनके साथ तुम्हारी घनिष्ठता होती जायगी, उतनी ही अधिक खूबियाँ तुम्हे उनके अन्दर दिखाई पडने लगेगी।

४. मित्रता का उद्देश्य हँसी-दिल्लगी करना नही है; बल्कि जब कोई बहक कर कुमार्ग मे जाने लगे, तो उसको रोकना और उसकी भर्त्सना करना ही मित्रता का लक्ष्य है।

५. बार-बार मिलना और सदा साथ रहना इतना जरूरी नही है, यह तो हृदयो की एकता ही है कि जो मित्रता के सम्बन्ध को स्थिर और सुदृढ बनाती है।

६. हँसी-दिल्लगी करने वाली गोष्ठी का नाम मित्रता नहीं है, मित्रता तो वास्तव मे वह प्रेम है, जो हृदय को आल्हादित करता है।

७. जो मनुष्य तुम्हे बुराई से बचाता हैं, नेक राह पर चलाता है, और जो मुसीबत के वक्त तुम्हारा साथ देता है, बस वही मित्र है।

८. देखो, उस आदमी का हाथ कि जिसके कपड़े हवा से उड़ गये है, कितनी तेजी के साथ फिर से अपने बदन को ढकने के लिए दौडता है! यही सच्चे मित्र का आदर्श है, जो मुसीबत मे पडे हुए आदमी की सहायता के लिए दौड कर जाता है।

९. मित्रता का दरबार कहा पर लगता है? बस वही पर कि जहा दो दिलो के बीच मे अनन्य प्रेम और पूर्ण एकता है और जहा दोनो मिल कर हर एक तरह से एक दूसरे को उच्च और उन्नत बनाने की चेष्टा करें।

१०. जिस दोस्ती का हिसाब लगाया जा सकता है उसमें एक तरह का कँगलापन होता है—वह चाहे कितने ही गर्व-पूर्वक कहे कि मै उसको इतना प्यार करता हूँ और वह मुझे इतना चाहता है।

३३

मित्रता के लिए योग्यता की परीक्षा

१. इससे बढकर बुरी बात और कोई नही है कि बिना परीक्षा किये किसी के साथ दोस्ती कर ली जाय, क्योंकि एक

बार मित्रता हो जाने पर सहृदय पुरुष फिर उसे छोड़ नहीं सकता।

२. देखो, जो पुरुष पहले आदमियों की जांच किये बिना ही उनको मित्र बना लेता है, वह अपने सिर पर ऐसी आपत्तियों को बुलाता है कि जो सिर्फ़ उसकी मौत के साथ ही समाप्त होगी।

३ जिस मनुष्य को तुम अपना दोस्त बनाना चाहते हो उसके कुल का, उसके गुण-दोषों का, कौन-कौन लोग उसके साथी हैं और किन-किन के साथ उसका सम्बन्ध है, इन सब बातो का अच्छी तरह से विचार करलो और उसके बाद यदि वह योग्य हो तो उसे दोस्त बना लो।

४. देखो, जिस पुरुष का जन्म उच्च कुल मे हुआ है और जो बेइज्जती मे डरता है उसके साथ आवश्यकता पडे तो मूल्य देकर भी दोस्ती करनी चाहिए।

५. ऐसे लोगो को खोजो और उनके साथ दोस्ती करो कि जो सन्मार्ग को जानते हैं और तुम्हारे बहक जाने पर तुम्हे झिड़क कर तुम्हारी भर्त्सना कर सकते है।

६. आपत्ति मे भी एक गुण ह—वह एक पैमाना है, जिससे तुम अपने मित्रो को नाप सकते हो।

७. नि.सन्देह मनुष्य का लाभ इसी मे है कि वह मूर्खों से मित्रता न करे।

८. ऐसे विचारों को मत आने दो, जिनसे मन निरुत्साह

और उदास हो, और न ऐसे लोगो से दोस्ती करो, जो दुःख पडते ही तुम्हारा साथ छोड देगे ।

९. जो लोग मुसीबत के वक्त धोखा दे जाते है, उनकी मित्रता की याद मौत के वक्त भी दिल मे जलन पैदा करेगी ।

१०. पाकोसाफ लोगों के साथ बडे शौक़ से दोस्ती करो; मगर जो लोग तुम्हारे अयोग्य है उनका साथ छोड दो, इसके लिए चाहे तुम्हे कुछ भेंट भी देनी पडे ।

३४

झूठी मित्रता

१. उन कम्बख्त नालायको से होशियार रहो कि जो अपने लाभ के लिए तुम्हारे पैरो पर पडने को तैयार है, मगर जब तुम से उनका कुछ मतलब न निकलेगा तो वे तुम्हे छोड देंगे । भला ऐसो की दोस्ती रहे या न रहे, इससे क्या आता-जाता है ?

२ कुछ आदमी उस अक्खड़ घोडे की तरह होते है कि जो युद्ध-क्षेत्र मे अपने सवार को गिरा कर भाग जाता है । ऐसे लोगो से दोस्ती रखने की बनिस्बत तो अकेले रहना हज़ार दर्जे बेहतर है ।

३. बुद्धिमानो की दुश्मनी भी बेवक़ूफो की दोस्ती से हजार दर्जे बेहतर है; और खुशामदी और मतलबी लोगों की दोस्ती से दुश्मनो की घृणा सैकडों दर्जे अच्छी है ।

४ देखो, जो लोग यह सोचते है कि हमे उस दोस्त से कितना मिलेगा, वे उसी दर्जे के लोग हैं कि जिनमे चोरों और बाज़ारू औरतो की गिनती है।

५. खबरदार, उन लोगो से ज़रा भी दोस्ती न करना कि जो कमरे मे बैठ कर तो मीठी-मीठी बाते करते है मगर बाहर आम लोगो मे निन्दा करते है।

६. जो लोग ऊपर से तो दोस्ती दिखाते है मगर दिल में दुश्मनी रखते है, उनकी मित्रता औरत के दिल की तरह जरासी देर मे बदल जायगी।

७. उन मक्कार बदमाशो से डरते रहो कि जो आदमी के सामने ऊपरी दिल से हँसते है मगर अन्दर ही अन्दर दिल मे जानी दुश्मनी रखते है।

८. दुश्मन अगर नम्रतापूर्वक झुक कर बातचीत करे, तो भी उसका विश्वास न करो, क्योंकि कमान जब झुकती है तो वह और कुछ नही, अनिष्ट की ही भविष्यवाणी करती है।

९ दुश्मन अगर हाथ जोडे तब भी उसका विश्वास न करो। मुमकिन है, उसके हाथो मे कोई हथियार छिपा हो। और न तुम उसके आसू बहाने पर ही यकीन लाओ।

१०. अगर दुश्मन तुम से दोस्ती करना चाहे और यदि तुम अपने दुश्मन से अभी खुला वैर नहीं कर सकते हो, तो उसके सामने जाहिरा दोस्ती का बर्ताव करो मगर दिल से उसे सदा दूर रक्खो।

: ३८ :

मूर्खता

१. क्या तुम जानना चाहते हो कि मूर्खता किसे कहते है? जो चीज लाभदायक है, उसको फेक देना और हानिकारक पदार्थ को पकड रखना—बस, यही मूर्खता है।

२. मूर्ख मनुष्य अपने कर्त्तव्य को भूल जाता है, जबान से वाहियात और सख्त बाते निकालता है, उसे किसी तरह की शर्म और हया का खयाल नही होता, और न किसी नेक बात को पसन्द करता है।

३ एक आदमी खूब पढा-लिखा और चतुर है और दूसरों का गुरु है, मगर फिर भी वह इन्द्रिय-लिप्सा का दास बना रहता है—उससे बढ कर मूर्ख कोई नही है।

४ अगर मूर्ख को इत्तफाक से बहुत सी दौलत मिल जाय, तो ऐरे-गैरे अजनबी लोग ही मजे उडायेगे मगर उसके बन्धु-बान्धव तो बेचारे भूखो ही मरेगे।

५ योग्य पुरुषो की सभा मे किसी मूर्ख मनुष्य का जाना ठीक वैसा ही है, जैसा कि साफ-सुथरे पलङ्ग के ऊपर मैला पैर रख देना।

६. अकाल की गरीबी ही वास्तविक गरीबी है। और तरह की गरीबी को दुनिया गरीबी ही नही समझती।

७. मूर्ख आदमी खुद अपने सिर पर जो मुसीबतें लाता है, उसके दुश्मनो के लिये भी उसको वैसी मुसीबते पहुँचाना मुश्किल होगा ।

८. क्या तुम यह जानना चाहते हो कि मन्द बुद्धि किसे कहते है ? बस, उसी अहंकारी को, जो अपने मन में कहता है कि 'मैं अक्लमन्द हूँ ।'

९. मूर्ख आदमी अगर अपने नंगे बदन को ढकता है तो इससे क्या फ़ायदा, जबकि उस के मन के ऐब ढके हुए नही हैं ?

१०. देखो, जो आदमी न तो खुद भला-बुरा पहचानता है और न दूसरो की सलाह मानता है, वह अपनी जिन्दगी-भर अपने साथियो के लिये दुखदायी बना रहता है ।

. ३६ .

शत्रुओं के साथ व्यवहार

१ उस हत्यारी चीज़ को कि जिसे लोग दुश्मनी कहते है, जान-बूझ कर कभी न छेडना चाहिए, चाहे वह मजाक ही के लिए क्यो न हो ।

२. तुम उन लोगो को भले ही शत्रु बना लो कि जिनका हथियार तीर-कमान है, मगर उन लोगो को कभी मत छेड़ना जिनका हथियार ज़बान है ।

३. देखो, जिस राजा के पास सहायक तो कोई भी नहीं

है, मगर जो ढेर के ढेर दुश्मनो को युद्ध के लिए ललकारता है, वह पागल से भी बढ कर पागल है।

४ जिस राजा मे शत्रुओ को मित्र बना लेने की कुशलता है, उसकी शक्ति सदा स्थिर रहेगी।

५. यदि तुमको बिना किसी सहायक के अकेले दो शत्रुओं से लड़ना पड़े, तो उन दो मे से किसी एक को अपनी ओर मिला लेने की चेष्टा करो

६. तुमने अपने पडौसी को दोस्त या दुश्मन बनाने का कुछ भी निश्चय कर रक्खा हो, बाह्य आक्रमण होने पर उसे कुछ भी न बताओ, बस यो ही छोड दो।

७. अपनी मुश्किलो का हाल उन लोगो पर जाहिर न करो कि जो अभी तक अनजान है और न अपनी कमजोरियां अपने दुश्मनो को मालूम होने दो।

८ एक चतुरतापूर्ण युक्ति सोचो, अपने साधनो को सुदृढ और सुसगठित बनाओ, और अपनी रक्षा का पूर्ण प्रबन्ध कर लो, यदि तुम यह सब कर लोगे तो तुम्हारे शत्रुओ का गर्व चूर्ण होकर धूल मे मिलने कुछ देर न लगेगी।

९ काटेदार वृक्षो को छोटेपन मे ही गिरा देना चाहिए, क्योकि जब वे बडे हो जायेंगे तो स्वय ही उस हाथ को जख्मी बना डालेगे कि जो उन्हे काटने की कोशिश करेगा।

१०. जो लोग अपना अपमान करने वालों का गर्व चूर्ण नही करते वे बहुत समय तक नहीं रहेंगे।

: ३७ :

घर का भेदी

१. कुञ्ज-वन और पानी के फ़व्वारे भी कुछ आनन्द नहीं देते, अगर उनसे बीमारी पैदा होती है, इसी तरह अपने रिश्ते-दार भी जघन्य हो उठते हैं, जबकि वे उसका सर्वनाश करना चाहते है।

२ उस शत्रु से डरने की जरूरत नहीं है कि जो नङ्गी तलवार की तरह है, मगर उस शत्रु से सावधान रहो कि जो मित्र बन कर तुम्हारे पास आता है।

३. अपने गुप्त शत्रु से सदा होशियार रहो, क्योंकि मुसी-बत के वक्त वह तुम्हें कुम्हार की डोरी की तरह, बडी सफाई से, काट डालेगा।

४ अगर तुम्हारा कोई ऐसा शत्रु है कि जो मित्र के रूप में घूमता-फिरता है तो वह शीघ्र ही तुम्हारे साथियों मे फूट के बीज बो देगा और तुम्हारे सिर पर सैकडो बलाये ला डालेगा।

५. जब कोई भाई बिरादर तुम्हारे प्रतिकूल विद्रोह करे तो वह तुम्हारे पर ढेर की ढेर आपत्तिया ला सकता है, यहां तक कि उससे खुद तुम्हारी जान के लाले पड़ जायँगे।

६. जब किसी राजा के दरबार मे दग़ाबाज़ी प्रवेश कर जाती है, तो फिर यह असम्भव है कि एक न एक दिन वह उसका

शिकार न हो जाय।

७. जिस घर मे फूट पड़ी हुई है, वह उस बर्तन के समान है, जिसमे ढक्कन लगा हुआ है; यद्यपि वे दोनों देखने में एकसे मालूम होते हैं, मगर फिर भी वे एक चीज़ कभी नही हो सकते।

८. देखो, जिस घरमें फूट है वह रेती से रेते हुए लोहे की तरह रेजे-रेज़ होकर धूल मे मिल जायगा।

९. जिस घर मे पारस्परिक कलह है, सर्वनाश उसके सिर पर लटक रहा है—फिर वह कलह चाहे तिल में पड़ी हुई दरार की तरह ही छोटी क्यो न हो।

१० देखो, जो मनुष्य ऐसे आदमी के साथ बेतक़ल्लुफी से पेश आता है कि जो दिल ही दिल मे उससे नफरत करता है, वह उस मनुष्य के समान है, जो काले नाग को साथी बना कर एक ही झोपडे मे रहता है।

: ३८ :

महान् पुरुषों के प्रति दुर्व्यवहार न करना

१. जो आदमी अपनी भलाई चाहता है, उसे सबसे ज्यादा खबरदारी इस बात की रखनी चाहिए कि वह होशियारी के साथ महान् पुरुषो का अपमान करने से अपने को बचाये रखे।

२. अगर कोई आदमी महात्माओं का निरादर करेगा तो उनकी शक्ति से उसके सिर पर अनन्त आपत्तियां आ टूटेंगी।

३. क्या तुम अपना सर्वनाश कराना चाहते हो ? तो जाओ, किसी की नेक सलाह पर ध्यान न दो और जाकर उन लोगों के साथ छेड़खानी करो कि जो जब चाहें तुम्हारा नाश करने की शक्ति रखते हैं।

४. देखो, दुर्बल मनुष्य जो बलवान् और शक्तिशाली पुरुषों का अपमान करता है, वह मानों यमराज को अपने पास आने का इशारा करता है।

५. देखो,जो लोग शक्ति-शाली महान् पुरुषों और राजाओं के क्रोध को उभारते हैं, वे चाहे कहीं जायँ कभी खुशहाल न होंगे।

६. जलती हुई आग मे पड़े हुए लोग चाहे भले ही बच जायँ, मगर उन लोगो की रक्षा का कोई उपाय नही है कि जो शक्ति-शाली लोगो के प्रति दुर्व्यवहार करते हैं।

७. यदि आत्मिक-शक्ति से परिपूर्ण ऋषिगण तुम पर क्रुद्ध हैं तो विविध प्रकार के आनन्दोच्छवास से उल्लसित तुम्हारा जीवन और समस्त ऐश्वर्य से पूर्ण तुम्हारा धन कहा होगा ?

८. देखो, जिन राजाओं का अस्तित्व अनन्त रूप से स्थायी भित्ति पर स्थापित है, वे भी अपने समस्त बन्धु-बान्धवों सहित नष्ट हो जायँगे, यदि पर्वत के समान शक्तिशाली महर्षिगण उनके सर्वनाश की कामना-भर करें।

९. और तो और, देवेन्द्र भी अपने स्थान से भ्रष्ट हो जाय

और अपना प्रभुत्व गँवा बैठे, यदि पवित्र प्रतिज्ञा वाले सन्त लोग क्रोध-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखें ।*

१०. यदि महान् आत्मिक-शक्ति रखने वाले लोग रुष्ट हो जायँ, तो वे मनुष्य भी नही बच सकते कि जो मजबूत से मजबूत आश्रय के ऊपर निर्भर है ।

: ३९ :

स्त्री का शासन

१. जो लोग अपनी स्त्रियो के श्रीचरणो की अर्चना मे ही लगे रहते हैं, वे कभी महत्त्व प्राप्त नही कर सकते है, और जो महान् कार्य करने की उच्चाशा रखते है, वे ऐसे वाहियात प्रेम के फन्दे मे नही फँसते ।

२. जो आदमी बेतरह अपनी स्त्री के मोह के फेर मे पडा हुआ है, वह अपनी समृद्धशाली अवस्था मे भी लोगो मे बदनाम हो जायगा और शर्म से उसे अपना मुँह छिपाना पडेगा ।

३. वह नामर्द जो अपनी स्त्री के सामने झुक कर चलता है, लायक लोगो के सामने अपना मुँह दिखाने मे हमेशा शरमावेगा ।

४. शोक है उस मुक्ति-विहीन अभागे पर, जो अपनी स्त्री के सामने कांपता है। उसके गुणो की भी कभी कोई क़द्र न करेगा ।

* नहुष की कथा ।

५. जो आदमी अपनी स्त्री से डरता है वह लायक़ लोगों की सेवा करने का भी साहस नहीं कर सकता।

६. जो लोग अपनी स्त्रियों की नाजुक बाजुओं से खौफ़ खाते हैं, वे अगर फरिश्तों की तरह रहें तब भी कोई उनकी इज्जत न करेगा।

७. देखो, जो आदमी चोली-राज्य का आधिपत्य स्वीकार करता है, एक लजीली कन्या में भी उससे अधिक गौरव होता है।

८. देखो, जो लोग अपनी स्त्री के कहने में चलते हैं, वे अपने मित्रों की आवश्यकताओं को भी पूर्ण न कर सकेंगे और न उनसे कोई नेक काम ही हो सकेगा।

९. देखो, जो मनुष्य स्त्री का शासन स्वीकार करते हैं, उन्हे न तो धर्म मिलेगा और न धन, न उन्हें मुहब्बत का मजा चखना ही नसीब होगा।

१०. देखो, जिन लोगों के विचार महत्त्वपूर्ण कार्यों मे रत है और जो सौभाग्य-लक्ष्मी के कृपा-पात्र है, वे अपनी स्त्रियों के मोह-जाल में फँसने की बेवकूफी नहीं करते।

: ४० :

शराब से घृणा

१ देखो, जिन लोगों को शराब पीने की लत पड़ी हुई है, उनके

दुश्मन उनसे कभी न डरेंगे और जो कुछ शानोशौकत उन्होंने हासिल कर ली है, वह भी जाती रहेगी ।

२. कोई भी शराब न पीये; लेकिन अगर कोई पीना ही चाहे तो उन लोगो को पीने दो कि जिन्हें लायक लोगों से इज्जत हासिल करनेकी पर्वाह नही है ।

३ जो आदमी नशे में मदहोश है, उसकी सूरत खुद उसकी माँ को बुरी मालूम होती है । भला, शरीफ आदमियों को फिर उसकी सूरत कैसी लगेगी ?

४. देखो, जिन लोगों को मदिरा-पान की घृणित आदत पडी हुई है, सुन्दरी लज्जा उनसे अपना मुँह फेर लेती है ।

५. यह तो हद्द दर्जे की बेवकूफी और नालायकी है कि अपना रुपया खर्च करें और बदले मे सिर्फ बेहोशी और बद-हवासी हाथ लगे ।

६. देखो, जो लोग हर रोज उस ज़हर को पीते हैं कि जिसे ताडी या शराब कहते है, वे मानो महा निद्रा में अभिभूत है । उनमे और मुर्दों मे कोई फर्क नहीं है ।

७ देखो; जो लोग खुफिया तौर पर नशा पीते हैं और अपने समय को बदहवासी और बेहोशी की दशा में गुजारते है, उनके पडौसी जल्दी ही इस बात को जान जायेगे और उनसे सख्त नफरत करेगे ।

८ शराबी आदमी बेकार यह कह कर बहाना-बाजी न करे कि मैं तो जानता ही नहीं, नशा किसे कहते हैं; क्योंकि ऐसा

करने से वह सिर्फ़ अपनी उस बदकारी के साथ झूठ बोलने के पाप को शामिल करने का भागी होगा ।

९. जो शख्स नशे में मस्त हुए आदमी को नसीहत करता है, वह उस आदमी की तरह है जो पानी में डूबे हुए आदमी को मशाल लेकर ढूंढता है ।

१०. जो आदमी होशोहवास की हालत में किसी शराबी की दुर्गति देखता है तो क्या वह खुद उससे कुछ अन्दाज़ा नहीं लगा सकता है कि जब वह नशे में होता है तो उसकी हालत कैसी होती होगी ?

: ४१ :

वेश्या

१. देखो, जो स्त्रियाँ प्रेम के लिए नही बल्कि धन के लोभ से किसी पुरुष की कामना करती हैं, उनकी चापलूसी की बातें सुनने से दुःख ही दुःख होता है ।

२. देखो, जो दुष्ट स्त्रियाँ मधु-मयी वाणी बोलती हैं मगर जिनका ध्यान अपने मुनाफे पर रहता है, उनकी चाल-ढाल को ख्याल में रख कर उनसे सदा दूर रहो ।

३. वेश्या जब अपने प्रेमी को छाती से लगाती है तो वह ज़ाहिरा यह दिखाती है कि वह उससे प्रेम करती है, मगर दिल मे तो उससे ऐसा अनुभव होता है जैसे कोई बेगारी अन्धेरे कमरे मे किसी अजनबी के मुर्दा जिस्म को छूने से अनुभव

करता है ।*

४. देखो, जिम लोगो के मन का झुकाव पवित्र कार्यों की ओर है, वे असती स्त्रियो के स्पर्श से अपने शरीर को कलंकित नहीं करते ।

५ जिन लोगो की बुद्धि निर्मल है और जिनमे अगाध ज्ञान है वे उन औरतो के स्पर्श से अपने को अपवित्र नहीं करते कि जिनका सौन्दर्य और लावण्य सब लोगो के लिए खुला है ।

६ जिनको अपनी भलाई का ख्याल है, वे उन शोख और आवारा औरतो का हाथ नही छूते कि जो अपनी नापाक खूबसूरती को बेचती फिरती है ।

७ जो ओछी तबियत के आदमी है, वही उन स्त्रियो को खोजेगे कि जो सिर्फ शरीर से आलिगन करती है जबकि उनका दिल दूसरी जगह रहता है ।

८ जिनमे सोचने-समझने की बुद्धि नहीं है, उनके लिए चालाक कामिनियो का आलिगन ही अप्सराओ की मोहनी के समान है ।

९. खूब साज-सिगार किये और बनी-ठनी फाहिशा औरत के नाजुक बाजू एक तरह की गन्दी—दोज़खी—नाली है जिसमे घृणित मूर्ख लोग जाकर अपने को डुबा देते है ।

१० दो दिलोंवाली औरत, शराब और जुआ, ये उन लोगों की खुशी के सामान है कि जिन्हे भाग्य-लक्ष्मी छोड देती है ।

---

* पैसा देकर किसी मनुष्य से लाश उठवाई जाय तो वह मनुष्य उस लाश को अन्धेरे में छूकर वीभत्स घृणा का अनुभव करेगा ।

: ४२ :

औषधि

१. वात से शुरू करके जिन तीन गुणों* का वर्णन ऋषियों ने किया है, उनमे से कोई भी यदि अपनी सीमा से घट या बढ़ जायगा तो वह बीमारी का कारण होगा।

२. शरीर के लिए औषधि की कोई जरूरत ही न हो यदि खाया हुआ खाना हज़म हो जाने के बाद नया खाना खाया जाय।

३. खाना हमेशा एतदाल के साथ खाओ और खाये हुए खाने के अच्छी तरह से पच जाने के बाद भोजन करो—दीर्घायु होने का बस यही मार्ग है।

४. जब तक तुम्हारा खाना हज़म न हो जाय और तुम्हे खूब तेज भूख न लगे तब तक ठहरे रहो और उसके बाद एतदाल के साथ वह खाना खाओ जो तुम्हारी प्रकृति के अनुकूल है।

५. अगर तुम एतदाल के साथ ऐसा खाना खाओ कि जो तुम्हारी रुचि के अनुकूल है तो तुम्हारे जिस्म में किसी किस्म की तक़लीफ़ पैदा न होगी।

६. जिस तरह तन्दुरुस्ती उस आदमी को ढूंढती है जो

---

* वात, पित्त, कफ।

पेट खाली होने पर ही खाना खाता है, ठीक इसी तरह बीमारी उसको ढूँढती फिरती है जो हद से ज्यादा खाता है।

७. देखो, जो आदमी बेवकूफी करके अपनी जठराग्नि से परे खूब ठूँस-ठूँस कर खाना खाता है, उसकी बीमारियों की कोई सीमा न रहेगी।

८ रोग, उसकी उत्पत्ति और उसके निदान का पहले विचार कर लो और तब होशियारी के साथ उसको दूर करने में लग जाओ।

९ वैद्य को चाहिए कि वह बीमार, बीमारी और मौसम के बाबत गौर कर ले और तब उसके बाद दवा शुरू करे।

१० रोगी, वैद्य, औषधि और अत्तार—इन चार पर सारे इलाज का दारोमदार है और उनमें से हर एक के फिर चार-चार गुण हैं।

वि वि ध

: १ :

कुलीनता

१ रास्तबाज़ी और हयादारी स्वभावत. उन्ही लोगों में होती है, जो अच्छे कुल मे जन्म लेते हैं।

२. सदाचार, सत्य-प्रियता और सलज्जता इन तीन चीजो से कुलीन पुरुष कभी पदस्खलित नही होते।

३. सच्चे कुलीन सज्जन में ये चार गुण पाये जाते हैं— हँस-मुख चेहरा, उदार हाथ, मृदु-भाषण और स्निग्ध निरभिमान।

४. कुलीन पुरुष को करोड़ो रुपये मिले तब भी वह अपने नाम को कलंकित न होने देगा।

५. उन प्राचीन कुलो के वंशजो की ओर देखो! अपने ऐश्वर्य के क्षीण हो जाने पर भी वे अपनी उदारता को नहीं छोडते।

६. देखो, जो लोग अपने कुल के प्रतिष्ठित आचारों को पवित्र रखना चाहते है, वे न तो कभी धोखेबाज़ी से काम लेंगे और न कुकर्म करने पर उतारु होंगे।

७. प्रतिष्ठित कुल मे उत्पन्न हुए मनुष्य के दोष पर चन्द्रमा के कलंक की तरह विशेष रूप से सब की नजर पड़ती है ।

८. अच्छे कुल मे उत्पन्न हुए मनुष्य की जुबान से यदि फूहड़ और वाहियात बाते निकलेंगी तो लोग उसके जन्म के विषय तक मे शका करने लगेंगे ।

९ जमीन की खासियत का पता उसमे उगने वाले पौधे से लगता है, ठीक इसी तरह मनुष्य के मुख से जो शब्द निकलते हैं उनसे उसके कुल का हाल मालूम हो जाता है ।

१०. अगर तुम नेकी और सद्गुणों के इच्छुक हो तो तुमको चाहिए कि सलज्जता के भाव का उपार्जन करो । अगर तुम अपने वश को सम्मानित बनाना चाहते हो तो तुम सब लोगो के साथ इज्जत से पेश आओ ।

: २ :

प्रतिष्ठा

१. उन बातों से सदा दूर रहो कि जो तुम्हे नीचे गिरा देंगी, चाहे वह प्राण-रक्षा के लिए अनिवार्य रूप ही से आवश्यक क्यो न हो ।

२. देखो, जो लोग अपने पीछे यशस्वी नाम छोड जाना चाहते हैं, वे अपनी शान बढ़ाने के लिए भी वह काम न करेंगे कि जो उचित नही है ।

३. समृद्ध अवस्था में तो नम्रता और विनय की विस्फूर्ति करो; लेकिन हीन-स्थिति के समय मान-मर्यादा का पूरा ख़याल रक्खो।

४. देखो, जिन लोगों ने अपने प्रतिष्ठित नाम को दूषित बना डाला है, वे बालों की उन लटों के समान हैं कि जो काट कर फेंक दी गई हो।

५ पर्वत के समान शानदार लोग भी बहुत ही क्षुद्र दिखाई पड़ने लगेंगे, अगर वे कोई दुष्कर्म करेंगे, फिर चाहे वह कर्म घुंघची के समान ही छोटा क्यों न हो।

६. न तो इसमें यशोवृद्धि ही होती है और न स्वर्ग-प्राप्ति, फिर मनुष्य ऐसे आदमियों की खुशामद करके क्यों जीना चाहता है कि जो उससे घृणा करते हैं।

७. यह कही बेहतर है कि मनुष्य बिना किसी हील-हुज्जत के फौरन ही अपनी क़िस्मत के लिखे को भोगने के लिये तैयार हो जाय बनिस्बत इसके कि वह अपने से घृणा करने वाले लोगों के पाँव पड कर अपना जीवन व्यतीत करे।

८. अरे! यह खाल क्या ऐसी चीज है कि लोग अपनी इज़्जत बेच कर भी उसे बचाये रखना चाहते है।

९. चमरी-मृग अपने प्राण त्याग देता है जबकि उसके बाल काट लिये जाते है, कुछ मनुष्य भी–ऐसे ही मानी होते हैं और वे जब अपनी आबरू नही रख सकते तो अपनी जीवन-लीला का अन्त कर डालते हैं।

१०. जो आबरूदार आदमी अपनी नेकनामी के चले जाने के बाद जीवित नहीं रहना चाहता, सारा संसार हाथ जोड़ कर उसकी सुयशमयी वेदी पर भक्ति की भेट चढ़ाता है।

: ३ :

महत्व

१. महान् कार्यों के सम्पादन करने की आकाँक्षा को ही लोग महत्व के नाम स पुकारते हैं और ओछापन उस भावना का नाम है जो कहती है कि मैं उसके बिना ही रहूँगी।

२. पैदायश तो सब लोगो की एक ही तरह की होती है मगर उनकी प्रसिद्धि मे विभिन्नता होती है क्योंकि उनका जीवन दूसरी ही तरह का होता है।

३. शरीफजादे होने पर भी वे अगर शरीफ नहीं हैं तो शरीफ नही कहला सकते और जन्म से नीच होने पर भी जो नीच नही हे वे नीच नही हो सकते।

४. रमणी के सतीत्व की तरह महत्व की रक्षा भी केवल आत्म-शुद्धि—आत्मा के प्रति सरल, निष्कपट व्यवहार—द्वारा ही की जा सकती है।

५. महान् पुरुषो में समुचित साधनो को उपयोग में लाने और ऐसे कार्यों के सम्पादन करने की शक्ति होती है कि जो दूसरों के लिये असाध्य होते हैं।

६. छोटे आदमियों के खमीर में ही यह बात नहीं होती है कि वे महान् पुरुषों की तिष्ठा करें और उनकी कृपा दृष्टि और अनुग्रह को प्राप्त करने की चेष्टा करें।

७. ओछी तबियत के आदमियों के हाथ यदि कही को सम्पत्ति लग जाय तो फिर उनके इतराने की कोई सीमा ही न रहेगी।

८. महत्ता सर्वदा ही विनयशील होती है और दिखावा पसन्द नहीं करती मगर क्षुद्रता सारे ससार में अपने गुणों का ढिंढोरा पीटती फिरती है।

९ महत्ता सर्वथा ही अपने छोटों के साथ ही नरमी और मेहरबानी से पेश आती है, मगर क्षुद्रता को तो बस घमण्ड की पुतली ही समझो।

१०. बड़प्पन हमेशा ही दूसरो की कमजोरियो पर पर्दा डालना चाहता है, मगर ओछापन दूसरो की ऐवजोई के सिवा और कुछ करना ही नही जानता।

: ४ :

योग्यता

१. देखो, जो लोग अपने कर्तव्य को जानते हैं और अपने अन्दर योग्यता पैदा करनी चाहते हैं, उनकी दृष्टि में सभी नेक काम कर्त्तव्य स्वरूप हैं।

२. लायक लोगों के आचरण की सुन्दरता ही उनकी वास्तविक सुन्दरता है, शारीरिक सुन्दरता उनकी सुन्दरता में किसी तरह की अभिवृद्धि नही करती है।

३. सार्वजनिक प्रेम, सलज्जता का भाव, सबके प्रति सद्व्यवहार, दूसरे दोषों की पर्दादारी और सत्य-प्रियता—ये पाँच स्तम्भ है जिन पर शुभ आचरण की इमारत का अस्तित्व होता है।

४ सन्त लोगों का धर्म है अहिसा; मगर योग्य पुरुषो का धर्म इस बात मे है कि वे दूसरो की निन्दा करने से परहेज करे।

५. खाकसारी—नम्रता–बलवानो की शक्ति है और वह दुश्मनो के मुकाबिले में लायक लोगो के लिए कवच का काम भी देती है।

६. योग्यता की कसौटी क्या है ? यही कि दूसरों के अन्दर जो बुजुर्गी और फजीलत है उसका इकबाल कर लिया जाय, फिर चाहे वह फजीलत ऐसे ही लोगो मे क्यो न हो कि जो और सब बातों मे हर तरह अपने से कम दर्जे के हो।*

७ लायक आदमी की बुजुर्गी किस काम की अगर वह अपने को नुकसान पहुँचाने वालो के साथ भी नेकी का सलूक नहीं करता है।

---

* अपने से कम दर्जे के लोगो से हार हो जाने पर उसे मान लेना, यह योग्यता की कसौटी है।

८. निर्धनता मनुष्य के लिये बेइज्जती का कारण नहीं हो सकती अगर उसके पास वह सम्पत्ति मौजूद हो कि जिसे लोग सदाचार कहते हैं।

९. देखो, जो लोग कभी सन्मार्ग से विचलित नहीं होते चाहे प्रलय-काल में और सब कुछ बदल कर इधर की दुनिया उधर हो जाय; वे तो मानो योग्यता के समुद्र की सीमा ही हैं॥

१०. निःसन्देह खुद धरती भी मनुष्यों के जीवन का बोझ न सम्हाल सकेगी अगर लायक लोग अपनी लायकी छोड़ पतित हो जायेंगे।

: ५ :

खुश-इख्लाकी

१. कहते हैं, मिलनसारी प्रायः उन लोगों में पायी जाती है कि जो खुले दिल से सब लोगों का स्वागत करते हैं।

२. खुश—इख्लाकी, मेहरबानी और नेक तरबियत इन दो सिफतों के मजमुए से पैदा होती है।

३. शारीरिक आकृति और सूरत-शक्ल से आदमियों में सादृश्य नहीं होता है बल्कि सच्चा सादृश्य तो आचार-विचार की अभिन्नता पर निर्भर है।

४. देखो, जो लोग न्याय-निष्ठा और धर्म-पालन के द्वारा अपना और दूसरों का—सबका—भला करते हैं, दुनिया

उनके इख्लाक की बड़ी कद्र करती है ।

५ हँसी मजाक मे भी कडवे वचन आदमी के दिल में चुभ जाते है, इसलिए शरीफ लोग अपने दुश्मनो के साथ भी बद-इख्लाकी से पेश नही आते है।

६. सुसस्कृत मनुष्यो के अस्तित्व के कारण ही दुनिया का कारोबार निर्द्वन्द्व रूप से चल रहा है, इसमे कोई शक नही कि यदि ये लोग न होते तो यह अक्षुण्य साम्य और स्वारस्य मृत-प्राय होकर धूल मे मिल जाता ।

७ जिन लोगो के आचार ठीक नही है, वे अगर रेती की तरह तेज हो तब भी काठ के हथियारो से बेहतर नही हैं ।

८. अविनय मनुष्य को शोभा नही देता है, चाहे अन्यायी और विपक्षी पुरुष के प्रति ही उसका व्यवहार क्यो न हो ।

९. देखो जो लोग मुस्करा नही सकते, उन्हे इस विशाल लम्बे चौडे ससार मे, दिन के समय भी, अन्धकार के सिवा और कुछ दिखाई न देगा ।

१०. देखो, बद मिजाज आदमी के हाथ मे जो दौलत होती है वह उस दूध के समान है जो अशुद्ध, मैले बर्तन मे रखने से खराब हो गया हो ।

: ९ :

निरुपयोगी धन

१. देखो, जिस आदमी ने अपने घर में ढेर की ढेर दौलत जमा कर रक्खी है मगर उसे उपयोग मे नही लाता, उसमे और मुर्दे में कोई फ़र्क नही है क्योंकि वह उससे कोई लाभ नही उठाता है।

२. वह कजूस आदमी जो समझता है कि धन ही दुनिया मे सब कुछ है और इसलिए बिना किसी को कुछ दिए ही उसे जमा करता है; वह अगले जन्म मे राक्षस होगा।

३ देखो, जो लोग सदा ही धन के लिए हाय-हाय करते फिरते ह; मगर यशोपार्जन करने की पर्वाह नही करते, उनका अस्तित्व पृथ्वी के लिए केवल भार स्वरूप है।

४ जो मनुष्य अपने पडोसियो के प्रेम को प्राप्त करने की चेष्टा नही करता, वह मरने के पश्चात् अपने पीछे क्या चीज छोड़ जाने की आशा रखता है?

५ देखो, जो लोग न तो दूसरो को देते है और न स्वय ही अपने धन का उपभोग करते है वे अगर करोडपति भी हो तब भी वास्तव मे उनके पास कुछ भी नही है।

६ दुनियाँ मे ऐसे भी कुछ आदमी है जो न तो खुद अपने धन को भोगते है और न उदारतापूर्वक योग्य पुरुषो को प्रदान

करते हैं; वे अपनी सम्पत्ति के लिए रोग-स्वरूप हैं।

७. जो मनुष्य हाजतमन्द को दान दे कर उसकी हाजत को रफ़ा नही करता, उसकी दौलत उस लावण्यमयी ललना के समान है जो अपनी जवानी को एकान्त मे निर्जन स्थान में व्यर्थ गँवाये देती है।

८ उस आदमी की सम्पत्ति कि जिसे लोग प्यार नही करते है, गाँव के बीचोबीच किसी विष-वृक्ष के फलने के समान है।

९. धर्माधर्म का खयाल न रख कर अपने को भूखों मार कर जो धन जमा किया जाता है वह सिर्फ गैरो ही के काम आता है।

१०. उस धनवान मनुष्य की मुसीबत जिसने दान दे-देकर अपने खज़ाने को खाली कर डाला है, और कुछ नहीं केवल जल बरसाने वाले बादलो के खाली हो जाने के समान है—यह स्थिति अधिक समय तक न रहेगी।

: ७ :

लज्जा की भावना

१. लायक़ लोगों का लजाना उन कामो के लिए होता है कि जो उनके अयोग्य होते है, इसलिए वह सुन्दरी स्त्रियों के शरमाने से बिलकुल भिन्न है।

२. खाना, कपड़ा और सन्तान सब के लिए एक समान

हैं; यह तो लज्जा की भावना है जिससे मनुष्य-मनुष्य का अन्तर प्रकट होता है। *

३. शरीर तो समस्त प्राणों का निवास स्थान है मगर यह सात्विक लज्जा की लालिमा है जिसमे लायकी या योग्यता वास करती है।

४. लज्जा की भावना क्या लायक लोगों के लिए मणि के समान नही है? और जब वह उस भावना से रहित होता है तो उसकी शेखी और एंठ क्या देखने वाली आँख को पीडा पहुँचाने वाली नही होती?

५. देखो, जो लोग दूसरो की बेइज्ज़ती देख कर भी उतने ही लज्जित होते है जितने कि खुद अपनी बेइज्जती से, उन्हे तो लोग लज्जा और सकोच की मूर्ति ही समझेंगे।

६. ऐसे साधनो के अलावा कि जिनसे उन्हे लज्जित न होना पड़े अन्य साधनों के द्वारा लायक लोग, राज्य पाने से भी इन्कार कर देंगे।

७. देखो, जिन लोगो मे लज्जा की सुकोमल भावना है, वे अपने को बेइज्ज़ती से बचाने के लिए अपनी जान तक दे देंगे और प्राणों पर आ बनने पर भी लज्जा को नहीं त्यागेंगे।

---

* आहार-निद्रा-भय मैथुनञ्च, सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मोहितेषामधिको विशेषो, धर्मेण हीना: पशुभि: समाना:॥

संस्कृति-कवि के अनुसार मनुष्य को पशुओ से श्रेष्ठ बनाने वाला धर्म है। महर्षि त्रिवल्लुवर कहते है कि मनुष्य से मनुष्य को श्रेष्ठ बनाने वाली लज्जा की भावना है।

८. अगर कोई आदमी उन बातों से लज्जित नही होता कि जिनसे दूसरो को लज्जा आती है तो उसे देख कर नेकी को भी शरमाना पड़ेगा ।

९. कुलाचार को भूल जाने से मनुष्य केवल अपने कुल से ही भ्रष्ट हो जाता है लेकिन जब वह लज्जा को भूल कर बेशर्म हो जाता है, तब सब तरह की नेकियाँ उसे छोड देती है ।

१०. जिन लोगो की आँख का पानी मर गया है, वे मुर्दा है, डोरी के द्वारा चलने वाली कठ-पुतलियो की तरह उनमें भी सिर्फ नुमायशी जिन्दगी होती है ।

८

कुलोन्नति

१. मनुष्य की यह प्रतिज्ञा कि अपने हाथो से मेहनत करने मे मै कभी न थकूगा, उसके परिवारकी उन्नति करने मे जितनी सहायक होती है, उतनी और कोई चीज नही हो सकती ।

२. मर्दाना मशक्कत और सही व मालिम अक्ल—इन दोनो की परिपक्व पूर्णता ही परिवार को ऊँचा उठाती है ।

३. जब कोई मनुष्य यह कह कर काम करने पर उतारू होता है कि मैं अपने कुल की उन्नति करूँगा तो खुद देवता लोग अपनी-अपनी कमर कस कर उसके आगे आगे चलते हैं ।

४. देखो, जो लोग अपने खानदान को ऊँचा बनाने मे कुछ उठा नही रखते, वे इसके लिए यदि कोई सुविस्तृत युक्ति न भी निकाले तब भी उन के हाथ से किये हुए काम मे बरकत होगी।

५. देखो, जो आदमी बिना किसी किस्म के अनाचार के अपने कुल को उन्नत बनाता है, सारी दुनिया उसको अपना दोस्त समझेगी।

६. सच्ची मर्दानगी तो इसी मे है कि मनुष्य अपने वंश को, जिसमे उसने जन्म लिया है, उच्च अवस्था मे लाये।

७. जिस तरह युद्ध-क्षेत्र में आक्रमण का प्रकोप दिलेर आदमी के सर पर पडता है, ठीक इसी तरह परिवार के पालन-पोषण का भार उन्ही कन्धो पर पडता है कि जो उसके बोझ को सम्हाल सकते है।

८ जो लोग अपने कुल की उन्नति करना चाहते है; उनके लिए कोई मौसम, बे मौसम नही है, लेकिन अगर वे लापरवाही से काम लेगे और अपनी झूठी शान पर अडे रहेगे तो उनके कुटुम्ब को नीचा देखना पडेगा।

९. क्या सचमुच उस आदमी का शरीर कि जो अपने परिवार को हर तरह की बला से महफूज रखना चाहता है, महज मेहनत और मुसीबत के लिए ही बना है ? *

* ऐसे आदमी पर तरह-तरह की आपत्तिया आती हैं और वह उन्हें प्रसन्नता-पूर्वक झेलता है।

१०. देखो, जिस घर में कोई नेक आदमी उसे सम्हालने वाला नहीं है, आपत्तियाँ उसकी जड़ को काट डालेंगी और वह गिर कर जमीन मे मिट जायगा।

. ९ :

खेती

१. आदमी जहाँ चाहे, घूमे, मगर आखिरकार अपने भोजन के लिए उन्हे हल का सहारा लेना ही पड़ेगा, इसलिए हर तरह की सख्ती होने पर भी कृषि सर्वोत्तम उद्यम है।

२. किसान लोग समाज के लिए धुरी के समान है क्योंकि जोतने-खोदने की शक्ति न होने के कारण जो लोग दूसरे काम करने लगते है, उन को रोजी देने वाले वे ही लोग है।

३. जो लोग हल के सहारे जीते है, वास्तव मे वे ही जीते है; और सब लोग तो दूसरो की कमाई हुई रोटी खाते हैं।

४ देखो, जिन लोगो के खेत लहलहाती हुई शस्य की श्यामल छाया के नीचे सोया करते है, वे दूसरे राजाओ के छत्रो को अपने राजा के राज-छत्र के सामने झुकता हुआ देखेंगे।

५ देखो, जो लोग खेती कर के रोज़ी कमाते हैं, वे सिर्फ़ यही नहीं कि खुद कभी भीख न मागेगे, बल्कि वे दूसरे लोगोंको, कि जो भीख माँगते है, बगैर कभी इन्कार किये, दान भी दे सकेंगे।

६. किसान आदमी अगर हाथ पर हाथ रख कर चुपचाप बैठा रहे तो उन लोगो को भी कष्ट हुए बिना न रहेगा कि जिन्होंने समस्त वासनाओं का परित्याग कर दिया है।

७. अगर तुम अपने खेत की ज़मीन को इतना सुखाओ कि एक सेर मिट्टी सूख कर चौथाई औंस रह जाय तो एक मुट्ठी भर खाद की भी ज़रूरत न होगी और फसल की पैदावार खूब होगी।

८. जोतने की बनिस्बत खाद डालने से अधिक फ़ायदा होता है और जब नराई हो जाती है तो आबपाशी की अपेक्षा खेत की रखवाली अधिक लाभदायक होती है।*

९ अगर कोई भला आदमी खेत देखने नही जाता है और अपने घर पर ही बैठा रहता है तो नेक बीबी की तरह उसकी ज़मीन भी उससे खफा हो जायगी।

१०. वह सुन्दरी कि जिसे लोग धारिणी बोलते है, अपने मन ही मन हँसा करती है जब कि वह किसी काहिल को यह कह रोते हुए देखती है—हाय, मेरे पास खाने को कुछ भी नहीं है।

---

* इसके अर्थ ये है कि जोतना, खाद देना, नराना, सींचना और रखाना—ये पांचों ही बातें अत्यन्त आवश्यक है।

: १०

मुफ़लिसी

१ क्या तुम यह जानना चाहते हो कि कङ्गाली से बढ़ कर दुखदायी चीज और क्या है ? तो सुनो, कङ्गाली ही कङ्गाली से बढ़ कर दुखदायी है ।

२. कम्बख्त मुफलिसी इस जन्म के सुखो की तो दुश्मन है ही, मगर साथ ही साथ दूसरे जन्म के सुखोपभोग की भी घातक है ।

३ ललचाती हुई कगाली खान्दानी शान और जुबान की भी नफासत तक की हत्या कर डालती है ।

४. जरूरत ऊँचे कुल के आदमियो तक की आन छुडा कर उन्हे अत्यन्त निकृष्ट और हीन दासता की भाषा बोलने पर मजबूर करती है ।

५. उस एक अभिशाप के नीचे कि जिसे लोग दरिद्रता कहते है, हजार तरह की आपत्तिये और बलाये छिपी हुई है ।

६ गरीब आदमी के शब्दो की कोई कद्रो-कीमत नही होती, चाहे वह कमाल उस्तादी और अचूक ज्ञान के साथ अगाध सत्य की ही विवेचना क्यो न करे ।

७. एक तो कगाल हो और फिर धर्म से खाली—ऐसे अभागे मरदूद से तो खुद उसकी माँ का दिल फिर जायगा कि

जिसने उसे नौ महीने पेट मे रक्खा।

८. क्या नादारी आज भी मेरा साथ न छोडेगी ? कल ही तो उसने मुझे अधमरा कर डाला था।*

९. जलते हुए शोलों के बीच मे सो जाना भले ही सम्भव हो, मगर गरीबी की हालत मे ऑख का झपकना भी असम्भव है।

१०. † ग़रीब लोग जो अपने जीवन का उत्सर्ग नहीं कर देते हे तो इससे और कुछ नही, सिर्फ दूसरो के नमक और चावलों के पानी ‡ की मृत्यु ही होती है।

---

* यह किसी दीन-दुखिया के दु खार्त शब्द है।

† इस पद के अर्थ के विषय में मतभेद है। कुछ टीकाकार कहते है कि कगाल आदमी को ससार त्याग देना चाहिए और दूसरो का मत है, उन्हे प्राण त्याग देना चाहिए। मूल मे "त्वरवामपि" शब्द है, जिसके अर्थ मृत्यु और त्याग दोनो होते है। भावार्थ यह है कि ग़रीब लोगो का जीवन नितान्त नि:सार और व्यर्थ है। वह जो कुछ खाते-पीते है वह वृथा नष्ट हो जाता है।

‡ मद्रास प्रान्त मे यह प्रथा है कि रात में लोग भात को पानी में रख देते हैं। सुबह को उस ठडे भात और पानी को नमक के साथ खाते हैं। उनका कहना है—यह बडा गुणकारी है।

: ११ :

भीख माँगने की भीति

१ जो आदमी भीख नही माँगता, वह भीख माँगने वाले से करोड गुना बेहतर है, फिर वह माँगने वाला ऐसे ही आदमियों से क्यो न माँगे कि जो बडे शौक़ और प्रेम से दान देते हैं।

२. जिसने इस दुनिया को पैदा किया है, अगर उसने यह निश्चय किया था कि मनुष्य भीख माँग कर भी जीवन-निर्वाह करे तो वह दुनिया भर मे मारा-मारा फिरे और नष्ट हो जाये।

३ उस निर्लज्जता से बढ कर निर्लज्जता की बात और कोई नही है कि जो यह कहती है कि मैं माँग-माँग कर अपनी दरिद्रता का अन्त कर डालूगी।

४ बलिहारी है उस आन की कि, जो नितान्त कंगाली की हालत मे भी किसी के सामने हाथ फैलाने की रवादार नही होती। अखिल विश्व उसके रहने के लिए बहुत ही छोटा और नाकाफ़ी है।

५ जो खाना अपने हाथो से मेहनत करके कमाया जाता है, वह पानी की तरह पतला हो, तब भी उससे बढ़ कर मज़ेदार और कोई चीज़ नही हो सकती।

६. तुम चाहे गाय के लिए पानी ही माँगो, फिर भी जिह्वा के लिए याचना-सूचक शब्दों को उच्चारण करने से

बढ़ कर अपमानजनक बात और कोई नहीं ।

७. जो लोग माँगते हैं, उन सबसे बस मैं एक भिक्षा माँगता हूँ—अगर तुमको माँगना ही है तो उन लोगों से न माँगो कि जो हीला-हवाला करते हैं ।

८. याचना का बदनसीब जहाज उसी समय टूट कर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा कि जिस दम वह हीलासाजी की चट्टान से टकरायेगा ।

९. भिखारी के भाग्य का खयाल करके ही दिल काँप उठता है मगर जब वह उन झिडकियों पर ग़ौर करता है कि भिखारी को सहनी पड़ती है, तब तो बस वह मर ही जाता है ।

१०. मना करने वाले की जान उस वक़्त कहाँ जाकर छिप जाती है कि जब वह "नही" कहता है ? भिखारी की जान तो झिड़की की आवाज़ के सुनते ही तन से निकल जाती है ।*

: १२ :

भ्रष्ट जीवन

१. ये भ्रष्ट और पतित जीव मनुष्यो से कितने मिलते-

* इस विषय पर रहीम का दोहा है—
रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुं मांगन जाहि ।
उनते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहि ॥

जुलते हैं, हमने ऐसा पूर्ण सादृश्य कभी नही देखा ।*

२. शुद्ध अन्त करण वाले लोगो से यह हेय जीव कही अधिक सुखी है क्योकि उन्हें अन्तरात्मा की चुटकियों की वेदना नही सहनी पडती ।

३. मर्त्यलोक मे रहने वाले नीच लोग भी देवताओ के समान है, क्योकि वे भी सिर्फ अपनी ही मर्जी के पावन्द होते है ।

४ जब कोई दुष्ट मनुष्य ऐसे आदमी से मिलता है जो दुष्टता मे उससे कम है तो वह अपनी बढी हुई बदकारदारियो का बडे फख्र के साथ जिक्र करता है ।

५. दुष्ट लोग केवल भय के मारे ही सन्मार्ग पर चलते है और या फिर इसलिए कि ऐसा करने से उन्हे कुछ लाभ की आशा होगी ।

६ नीच लोग तो ढिढोरे वाले ढोल की तरह होते है, क्योकि उनको जो राज की बाते बताई जाती है उनको दूसरे लोगो पर जाहिर किये बिना, उन्हे चैन ही नहीं पडता ।

७. नीच प्रकृति के आदमी उन लोगो के सिवा कि जो घूसा मार कर उसका जबडा तोड सकते है, और किसी के आगे भोजन से सने हुए हाथ झटक देने मे भी आना-कानी करेगे ।

८ लायक लोगो के लिए तो सिर्फ एक शब्द ही काफी

* कवि इन भ्रष्ट लोगो को मनुष्य ही नही समझता, इसीलिए इतना सादृश्य देख कर उसे आश्चर्य होता है ।

है, मगर नीच लोग गन्ने की तरह खूब कुटने-पिटने पर ही देने पर राज़ी होते हैं।

९. दुष्ट मनुष्य ने अपने पडोसी को जरा खुशहाल और खाते-पीते देखा नहीं कि बस वह फौरन ही उसके चाल-चलन में दोष निकालने लगता है।

१०. दुष्ट मनुष्य पर जब कोई आपत्ति आती है तो बस उसके लिए एक ही मार्ग खुला होता है और वह यह कि जितनी जल्द मुमकिन हो, वह अपने को बेच डाले।

समाप्त